लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–27

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–3

थोमस फ्रैडैरिक केन

1885

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-27
Book Title: Italy Ki Lokpriya Kathayen-3 (Italian Popular Tales-3)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5
इटली की लोकप्रिय कथाऐं–3 7
अध्याय 4ः दंत कथाऐं और भूत कथाऐं 9
50 लौर्ड सेंट पीटर और अपोसिल्स 11
51 लौर्ड, सेंट पीटर और लोहार 16
52 इस दुनियॉ में एक रोता है दूसरा हॅसता है 23
53 गधा 24
54 सेंट पीटर और उसकी बहिनें 30
55 पाइलेट 33
56 जूडास की कहानी 37
57 निराश मालकस 40
58 खम्भे के चारों तरफ मालकस 42
59 बुत्ताद्यु की कहानी 44
60 किवोलियू की कहानी 46
61 गलीशा के सेंट जेम्स की कहानी 54
62 बेकर का नौकर 76
63 औकेशन 86
64 भाई जियोवानोने 92
65 गौडफ़ादर कष्ट 100
66 बैप्पो पिपैटा 106
67 सही आदमी 116
68 सेंट जौन के एक गौडफ़ादर और एक गौडमदर ने प्यार किया 120
69 दुलहे का साथी 127
70 सेन मारकुओला का पारिश पादरी 134
71 एक भला आदमी जिसने खोपड़ी को ठोकर मारी 137
72 सेंट जौन के बारे में 141
73 सद्दाऐड्डा 143

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोकप्रिय कथाऐं–3

यों तो हर देश की अपनी अपनी लोक कथाऐं होती है पर यूरोप महाद्वीप में ब्रिटेन जर्मनी फ्रांस और इटली अपनी एक विशेष जगह रखते हैं। इन देशों में भी यों तो सभी जगह लोक कथाऐं कही सुनी जाती रही हैं पर संगठित रूप में सबसे पहले केवल इटली देश ने ही शुरू की हैं। सन् **1313** में बोकाचाओ की "इल डैकामिरोन", इसके बाद सन् **1550** में स्ट्रापरोला की ""फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला", इसके बाद **1885** में थोमस केन की "इटली की लोकप्रिय कहानियॉ" और फिर सन् **1893** में जियामबतिस्ता की "इल पैन्टामिरोन" शुरू में लिखी गयी कहानियों का एक अच्छा संग्रह है।

इस पुस्तक से पहले इटली के एक और संग्रह "इतालो कैलवीनो की इटली की लोक कथाऐं" से जिसमें **200** कहानियॉ थीं **125** कहानियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया था जो आठ भागों में बॉट कर प्रकाशित किया गया था।[2] उस पुस्तक की लोकप्रियता को देख कर एक और पुस्तक का अनुवाद किया गया। यह पुस्तक थोमस केन की पुस्तक "इटली की लोकप्रिय कथाऐं"[3] है। इस पुस्तक में कुल मिला कर **109** कथाऐं हैं जिनको केन ने छह अध्यायों में बॉटा है। हम इसको पढ़ने की आसानी के लिये चार भागों में बॉट कर आपके लिये प्रस्तुत कर रहे हैं —

भाग **1** — अध्याय **1** ः परियों की कहानियॉ
भाग **2** — अध्याय **2** ः परियों की कहानियॉ क्रमशः
अध्याय **3** ः ओरिऐन्ट की कहानियॉ
भाग **3** — अध्याय **4** ः दंत कथाऐं और भूतों की कहानियॉ
भाग **4** — अध्याय **5** ः नर्सरी की कहानियॉ
अध्याय **6** ः कहानियॉ और हॅसी दिल्लगी

इस पुस्तक की सारी कहानियॉ यहॉ अनुवादित की गयी हैं। इस पुस्तक के पहले अध्याय में दी गयी कथाऐं हमारी पुस्तक के पहले भाग में दी गयी थीं। इस पुस्तक के दूसरे और तीसरे अध्याय की कथाऐं हमारी पुस्तक के दूसरे भाग में दी गयी थीं। लीजिये अब यह प्रस्तुत है इसका तीसरा भाग – मूल पुस्तक का चौथा अध्याय।

आशा है कि आपको इटली की ये पुरानी कहानियॉ अवश्य ही पसन्द आयेंगीं।

---

[2] "Italo Calvino: Folktales of Italy". Translated by George Martin. 1980.
[3] Italian Popular Tales. By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.
Taken from the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=RALaAAAAMAAJ&pg=PR1&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

अध्याय 4ः दंत कथाऐं और भूत कथाऐं

इटली में बहुत सारी दंत कथाऐं हैं जो उन्होंने मध्य काल से विरासत में मिली हैं। इतनी सारी कथाओं के साथ अब हमें कुछ नहीं करना है। उनके बारे में तो बस इतना ही कहना काफी है कि वे यूरोप में दूसरे कैथोलिक लोगों की कथाओं से कोई ज़्यादा अलग नहीं हैं। इसलिये अब हम कुछ ऐसी दंत कथाओं पर ध्यान देंगे जो बहुत लोकप्रिय हैं और हमारे लौर्ड[4] और उनके शिष्यों और कुछ और मध्यकालीन चरित्रों जैसे पाइलेट और घूमते हुए ज्यू[5] से सम्बन्धित हैं। इनके साथ हम कुछ दूसरी दुनियॉ की कथाऐं भी लेंगें जो दंत कथाओं जैसी ही हैं।

पहली कुछ कहानियॉ हमारे लौर्ड और उनके अपोसिल्स के घूमने की हैं। पहली कथा "सेंट पीटर और डाकू"[6] बताती है कि जब लौर्ड और उनके शिष्य एक मैदान से गुजर रहे थे तो उन्होंने रात को कुछ चरवाहों के साथ एक केबिन में शरण ली जिन्होंने उनका बड़े बेमन से स्वागत किया और उनको कुछ खाने को भी नहीं दिया।

बहुत जल्दी ही कुछ डाकू वहॉ आ गये जिन्होंने चरवाहों पर हमला किया और उन्हें लूट लिया। चरवाहे भाग गये सो वे फिर केबिन में आये और जब उन्हें यह पता चला कि उन चरवाहों ने इनके साथ ठीक से व्यवहार नहीं किया तो उन्होंने जो खाना चरवाहों ने अपने लिये बनाया था वह उनको दे कर वहॉ से चले गये। पीटर बोला — "भगवान चरवाहों का भला करे क्योंकि इन्होंने तो अमीरों से भी ज़्यादा अच्छी तरह से भूखे लोगों को खाना खिलाया"। दूसरे अपोसिल्स भी बोले "हॉ हॉ। भगवान डाकुओं का भला करे।"

इस कहानी से यह पता चलता है कि डाकुओं का यह रिवाज था जो वे यह समझते थे कि जीसस की इनके ऊपर कृपा है। सेंट पीटर कई कथाओं का हीरो है जिनमें वह सिवाय शानदार कामों के केवल दो तरह के काम करता है। एक और दूसरी कथा में[7] उसको वाइन खरीदने के लिये भेजा जाता है जिसमें दूकानदार उसको कुछ सौंफ के दाने[8] खाने के लिये बाध्य करता है जिसकी वजह से वह अच्छी और बुरी वाइन में भेद नहीं कर पाता और नीची

[4] Jesus Christ
[5] The Wandering Jew
[6] Saint Peter and the Robbers. By Giuseppe Pitre. (Tale No 121).
[7] Giuseppe Pitre. (Tale No 122).
[8] Fennel Seeds

क्वालिटी की वाइन ले कर चला आता है। जब मालिक उसको चखते हैं तो कहते हैं — "अरे पीटर तुमने तो अपने आपको ठगवा दिया।"

पीटर फिर उस वाइन को चखता है तो वह तो उसको भी खट्टी लगती है। उसके बाद फिर एक और अपोसिल को अच्छी वाइन लाने के लिये भेजा जाता है। इस कथा का मतलब यह निकलता है कि जब वाइन चख कर लानी हो तो उससे पहले सौंफ़ के दाने नहीं खाने चाहिये।

50 लौर्ड सेंट पीटर और अपोसिल्स[9]

एक बार लौर्ड अपने **13** अपोसिल्स के साथ यात्रा पर निकले हुए थे कि वे एक ऐसे गॉव में आये जहॉ कोई रोटी नहीं थी। मालिक ने पीटर से कहा — "पीटर। तुम सब लोग एक एक पत्थर उठा कर ले चलो।"

सो उन सब लोगों ने एक एक पत्थर उठा लिया। सबने तो बहुत बड़े बड़े पत्थर उठाये और पीटर ने एक बहुत छोटा सा ही पत्थर उठाया। इस तरह सारे लोग तो बोझे से लदे हुए चल रहे थे पर पीटर बहुत आसानी से चल रहा था।

मास्टर बोले — "चलो अब दूसरे गॉव चलते हैं। अगर वहॉ पर रोटी होगी तो हम लोग वहॉ रोटी खरीद लेंगे और अगर नहीं हुई तो मैं तुम्हें दुआ दूँगा और तुम सबके पत्थर रोटी बन जायेंगे।"

वे दूसरे शहर में पहुँचे और वहॉ अपने अपने पत्थर रख दिये और आराम करने लगे। मास्टर ने उनके पत्थरों को दुआ दी तो वे सब रोटी बन गये। जिनके पत्थर बड़े बड़े थे उनकी रोटियॉ बड़ी बड़ी बनी थीं पर पीटर के पास तो छोटा सा पत्थर था सो उसकी रोटी बहुत छोटी सी बनी। उसका तो दिल ही डूब गया।

---

[9] Lord St Peter and the Apostles. Tale No 50.
See the list of Jesus' Apostles at the back of the book.

वह मास्टर के पास पहुँचा और बोला — "मास्टर अब मैं खाना कैसे खाऊँ।"

"ओह मेरे भाई तुम इतना छोटा सा पत्थर ले कर क्यों चले। दूसरे लोग जो बड़े बड़े पत्थर ले कर चले उनके पास तो बहुत सारी रोटी है।"

वे फिर आगे चले तो मास्टर ने फिर से उन लोगों को पत्थर उठा कर ले चलने के लिये कहा। सेंट पीटर ने इस बार चालाकी की कि उसने बहुत बड़ा पत्थर उठाया जबकि दूसरे शिष्य छोटे छोटे पत्थर ही उठा कर चले।

लौर्ड ने अपने दूसरे शिष्यों से कहा — "अबकी बार हम पीटर के ऊपर थोड़ा हँसेंगे।"

वे एक दूसरे गॉव में आ पहुँचे। तो सब शिष्यों ने अपने अपने हाथ के पत्थर फेंक दिये क्योंकि वहॉ पर तो बहुत रोटी मिल रही थी। पर सेंट पीटर तो अपने पत्थर के बोझ से दोहरा हुआ जा रहा था। उसका उतना बड़ा पत्थर लाना तो बेकार ही रहा न।

वे आगे चले तो उन्हें एक आदमी मिला। अब क्योंकि पीटर सबसे आगे था तो उसने उससे कहा — "लौर्ड बस अब आने वाले हैं तो तुम उनसे जो चाहे मॉग लेना।"

वह आदमी पास आ कर बोला — "लौर्ड मेरे पिता बहुत बूढ़े हैं और बीमार हैं। मास्टर मेहरबानी कर के उन्हें ठीक कर दीजिये।"

लौर्ड बोले — "क्या मैं डाक्टर हूँ? तुम्हें पता है कि तुमको क्या करना चाहिये। तुम उनको एक ओवन में डाल दो तो तुम्हारे पिता एक लड़के के रूप में बाहर आ जायेंगे।"

उसने ऐसा ही किया और उसके पिता एक बालक के रूप में बाहर आ गये।

सेंट पीटर को यह विचार बहुत अच्छा लगा। सो एक बार जब वह अकेला था वह ऐसे लोगों की खोज में निकला जिन्हें बूढ़ों को जवान बनाने की जरूरत हो।

इत्तफाक से उसको एक मिल गया जो लौर्ड को ढूँढ रहा था। उसकी मॉ मरने वाली हो रही थी तो वह उसका इलाज करवाना चाहता था।

सेंट पीटर ने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये।"

वह आदमी बोला — "मैं लौर्ड से मिलना चाहता हूँ। केवल लौर्ड ही मेरी सहायता कर सकते हैं।"

पीटर बोला — "खुशकिस्मती से पीटर यहॉ मौजूद है। तुम्हें मालूम है कि तुम्हें क्या करना चाहिये? एक ओवन गर्म करो और उसको उसमें रख दो। वह ठीक हो जायेगी।"

पीटर जाना पहचाना था सो उस आदमी ने पीटर का विश्वास कर लिया। वह तुरन्त घर गया ओवन गर्म किया और अपनी मॉ को उसमें रख दिया। वह बेचारी जल कर मर गयी। वह चिल्लाया "उफ़ इस नीच आदमी ने तो मेरी मॉ को मार ही दिया।"

वह जल्दी से पीटर के पास भागा। मास्टर भी वहीं थे। जब उन्होंने उस आदमी की कहानी सुनी तो बड़ी ज़ोर से हॅसते हुए पूछा — "यह तुमने क्या किया पीटर।"

सेंट पीटर ने माफी भी मॉगी पर वह आदमी अपनी मॉ के लिये रोता रहा। अब मास्टर क्या करें। उनको उस आदमी के घर जाना पड़ा और उसकी मॉ को फिर से ज़िन्दा करना पड़ा – एक सुन्दर लड़की के रूप में। इस तरह से मास्टर ने पीटर को परेशानी से बचाया।

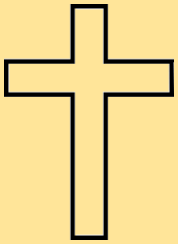

इसकी आखिरी घटना बहुत लोकप्रिय है और कई कहानियों में पायी जाती है। इसके एक रूप में एक बार लौर्ड एक जोकर के साथ यात्रा कर रहे थे। एक दिन लौर्ड पहले एक दफ़न में गये और फिर एक शादी में गये। लौर्ड ने मरे हुए आदमी को वापस ज़िन्दा कर दिया तो वहॉ उनको बहुत सारा इनाम दिया गया।

उन्होंने उसमें से कुछ पैसा जोकर को दे दिया जिससे उसने एक मेमना खरीदा उसे भूना और उसके गुर्दे उसने खुद खा लिये। लौर्ड ने उससे पूछा कि कि उसके गुर्दे कहॉ हैं तो उसने जवाब दिया कि उस देश के मेमनों के गुर्दे नहीं हुआ करते थे। अगली बार लौर्ड एक शादी में गये और जोकर एक दफ़न में गया। पर वहॉ वह मरे हुए आदमी को ज़िन्दा नहीं कर सका सो उसको एक धोखा देने वाला मान लिया गया सो उसको सूली पर चढ़ाने की सजा दे दी गयी।

लौर्ड यह जानना चाहते थे कि मेमने के गुर्दे किसने खाये पर जोकर अपने पुराने जवाब पर ही जमा रहा कि उस मेमने के तो गुर्दे ही नहीं थे। पर इस झूठ के बावजूद लौर्ड ने मरे हुए आदमी को ज़िन्दा कर दिया और जोकर को आजाद कर दिया गया।

तब लौर्ड ने उसके साथ अपनी साझेदारी खत्म करनी चाही सो उन्होंने पैसे के तीन ढेर बनाये – एक अपने लिये दूसरा जोकर के लिये और तीसरा उस आदमी के लिये जिसने मेमने के गुर्दे खाये थे। तब जोकर ने कहा — "भगवान की कसम। अब जब तुम ऐसा बोलते हो तो मैं तुम्हें बताता हूँ कि वे गुर्दे तो मैंने ही खाये थे। मैं तो इतना बूढ़ा हूँ कि अब मुझे झूठ नहीं बोलना चाहिये था।" इसलिये कुछ चीज़ें पैसे की सहायता से साबित की जा सकती हैं जिन्हें कोई आदमी मौत से बचने के लिये भी साधारण रूप से नहीं कहेगा।

इसका एक बहुत ही मजेदार रूप वेनिस में कहा सुना जाता है। वही हम आगे दे रहे हैं "लौर्ड सेंट पीटर और लोहार" —

51 लौर्ड, सेंट पीटर और लोहार[10]

एक बार की बात है कि एक छोटे से शहर में एक लोहार रहता था। वह एक बहुत अच्छा, मेहनती और अपने काम में बहुत ही होशियार आदमी था।

पर इस सबके लिये वह इतना घमंडी था कि जब तक कोई उसको प्रोफेसर कह कर न बुलाये वह उससे बात तक नहीं करता था। वैसे उसमें कोई खराबी नहीं थी पर उसके केवल इसी घमंड ने उसके लिये सबके दिलों में बड़ा असन्तोष फैला रखा था।

एक दिन सेंट पीटर[11] के साथ लौर्ड[12] उसकी दूकान में आये। लौर्ड जब बाहर जाते थे तो सेन्ट पीटर को अपने साथ ही रखते थे। लौर्ड ने लोहार से कहा — "प्रोफेसर, क्या तुम मुझे अपनी दूकान में थोड़ा सा काम करने दोगे?"

लोहार तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आओ और जो चाहो वह कर लो। बोलो तुम क्या बनाना चाहते हो?"

---

[10] Lord, St Peter and the Blacksmith. Tale No 51.

[11] St Peter was one of the 13 Apostles of Jesus Christ. See the List of Lord's Apostles at the end of this book.

[12] Here Lord word is used for Jesus Christ.

"यह तुम्हें जल्दी ही पता चल जायेगा।" और यह कह कर उन्होंने वहॉ से एक चिमटा[13] उठा लिया। उससे उन्होंने पीटर को पकड़ा और उसको उसकी भट्टी में तब तक रखा जब तक वह गर्म हो कर खूब लाल नहीं हो गया।

फिर उन्होंने उसको हथौड़े से चारों तरफ से खूब पीटा। दस मिनट के अन्दर अन्दर वह बूढ़ा गंजा अपोसिल एक बहुत सुन्दर नौजवान के रूप में बदल गया। उसके सिर पर तो बाल भी बहुत सुन्दर आ गये थे।

लोहार तो यह देख कर दॉतों तले उॅगली दबा बैठा। लौर्ड और सेन्ट पीटर ने उसको धन्यवाद दिया और वहॉ से चले गये।

कुछ देर बाद जब मास्टर लोहार को होश आया तो वह अपनी दूकान की दूसरी मंजिल पर दौड़ा गया जहॉ उसका बीमार पिता बिस्तर में लेटा हुआ था।

"पिता जी जल्दी यहॉ आइये। मैंने अभी अभी सीखा है कि आप जैसे आदमी को एक नौजवान आदमी कैसे बनाना है।"

उसका पिता कुछ डर कर बोला — "बेटे क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?"

"नहीं पिता जी। आप मेरा विश्वास करें। मैंने खुद देखा है। अब उसी तरीके से मैं आपको भी नौजवान बना सकता हूॅ।" कह

[13] Translated or the word "Tongs". See its picture above.

कर वह उनको नीचे ले जाने की कोशिश करने लगा पर पिता जाने के लिये तैयार ही न हो।

यह देखते हुए कि उसकी कोशिश काम नहीं कर रही है उसने अपने पिता को जबरदस्ती पकड़ा और नीचे अपनी दूकान में ले गया और उनके चिल्लाने और रोने के बावजूद उनको भट्टी में फेंक दिया।

पर जब वह उनको उस भट्टी में से निकालने लगा तो वह उसमें से उनकी केवल एक जली हुई टॉग ही निकाल सका। और जिसको जब उसने हथौड़े से पीटा तो वह तो एक ही बार में टुकड़े टुकड़े हो गयी। इससे वह बहुत दुखी हुआ और बहुत गुस्से से भर गया।

वह तुरन्त ही उन दोनों आदमियों को ढूँढने उनके पीछे पीछे भागा। उसकी खुशकिस्मती से वे दोनों उसको बाजार में ही मिल गये।

उनको देखते ही वह चिल्लाया — "जनाब। आपने क्या किया था। आपने तो मुझे धोखा दिया। मैं आपके तरीके की नकल कर रहा था कि उससे तो मेरे पिता ज़िन्दा ही जल कर मर गये। मेहरबानी कर के जल्दी मेरे साथ आइये और अगर मेरी सहायता कर सकते हैं तो कीजिये।"

लौर्ड मुस्कुराये और बोले — "आराम से घर जाओ। तुम्हें तुम्हारे पिता ठीक और ज़िन्दा मिल जायेंगे पर मिलेंगे बूढ़े ही।"

यह सुन कर वह लोहार दौड़ा दौड़ा घर गया और यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसके पिता ज़िन्दा थे।

उस दिन से उसका घमंड टूट गया। अब जब भी कोई उसको प्रोफेसर कह कर बुलाता तो वह कहता — "प्रोफेसर? वह भी क्या बेवकूफी थी। वेनिस में कुलीन लोग रहते है और पादवा[14] में प्रोफेसर। मैं तो केवल एक सीखतर[15] हूँ।

मेरा नोटः

यह लोक कथा इटली में कई जगह कई तरीके से कही सुनी जाती है। इसका एक रूप हमने "जीसस और सेन्ट पीटर सिसिली में" लोक कथा में "इटली की लोक कथाऐं–7" में दिया था जिसमें लोहार का काम सेन्ट पीटर खुद करता है वह खुद एक बूढ़े को जवान बनाना चाहता है पर उसको मार देता है। बाद में जीसस उसको ज़िन्दा करते हैं।

आयरलैंड की एक कहानी

लोहार के अपने काम का घमंड इसी तरह की एक और कहानी में पाया जाता है। यह आयरलैंड की कहानी है और कैनेडी की लिखी हुई है – "सेंट इलोइ को घमंड के पाप के लिये सजा कैसे मिली"।[16]

[14] Venice and Padua are two great important places in Italy.

[15] Translated for the word "Learner"

[16] "How St Eloi Was Punished For the Sin of Pride". – an Irish story written by Kennedy

एक सेंट धार्मिक बनने से पहले सुनार था पर कभी कभी वह मजे के लिये घोड़ों की नाल भी लगा लेता था। और हमेशा ही अपनी डींग हॉकता था कि उसको इन कामों में अपने जैसा कोई मास्टर नहीं मिला।

एक दिन एक अजनबी उसकी दूकान पर आया और उससे अपने घोड़े की नाल लगाने की इजाज़त मॉगी। इलोइ ने उसको इजाज़त दे दी। उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि अजनबी ने घोड़े की एक टॉग काटी और उसको ले कर वह उसकी दूकान में आ पहुॅचा और वहॉ ला कर उसकी नाल लगा दी।

अजनबी ने फिर उस टॉग को उठाया और इलोइ से पूछा कि क्या वह किसी और को जानता था जो इतना अच्छा काम कर सकता हो। इलोइ तो देखता का देखता रह गया। अजनबी ने वह टॉग बाहर ले जा कर घोड़े के चिपका दी। इलोइ ने इसको करने की खुद भी बहुत कोशिश की पर इस काम को करने में बुरी तरह असफल रहा। अजनबी जो इलोइ का रक्षक देवदूत[17] था घोड़े का इलाज करता है और इलोइ को उसके घमंड के लिये बुरा भला कहता है और फिर गायब हो जाता है।

यही लोक कथा नस्ट[18] ने लिखी

नस्ट ने यह लोक कथा "धरती पर हमारे सेवियर की एक यात्रा" के नाम से दी है जो इससे कुछ अलग है और इस तरह से है —

"एक पिता अपने जुआरी बेटे को एक सिपाही बना देता है। पर वह लड़का एक तूफानी रात को घर छोड़ कर चला जाता है और एक सराय में जा कर ठहर जाता है। वहॉ वह एक आदमी से मिलता है जो उसको ऐसा लगता है कि वह उसकी सारी ज़िन्दगी की बातें जानता है। उस आदमी का नाम "सेवियर"[19] है।

सेवियर को यह मालूम है कि पीटर घर छोड़ कर चला गया है और उसको वापस आने के लिये मनाया जा रहा है पर वह उसको बचा लेंगे। रोजी रोटी कमाने के लिये वह सेवियर उसको अपनी यात्रा में साथ ले लेते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं। यह करने के लिये उनको एक मौका भी मिल जाता है।

---

[17] Translated for the words "Guardian Angel"

[18] Knust, Hermann.

[19] Savior – means the man who saves. Normally this word is used for Jesus Christ

एक अमीर आदमी बहुत बीमार है। सेवियर तीन दिन में उसको ठीक करने का वायदा करते हैं। सेवियर सब लोगों को वहॉ से हटा देते हैं। वह कुछ जड़ी बूटियों से एक काढ़ा[20] तैयार करते हैं और उस बीमार को ठीक कर देते हैं।

उस अमीर आदमी के रिश्तेदार सेवियर को कृतज्ञता के तौर पर बहुत सारी कीमती चीज़ें भेंट करते हैं पर सेवियर अपनी ज़िन्दगी चलाने के लायक उनमें से केवल कुछ चीज़ें ही लेते हैं। इससे उनका वह साथी इतना नाराज हो जाता है कि वह उनको छोड़ कर चला जाता है। वह खुद अलग से अपने आप बीमारों को ठीक करना चाहता है।

एक बार उसको एक राजा की बीमार लड़की को ठीक करने का मौका मिल जाता है तो वह राजा से यह वायदा करता है कि वह उसकी बेटी को ठीक कर देगा। हालॉकि वह उसको ठीक करने के लिये ठीक उसी तरीके से सब कुछ करता है जैसे सेवियर ने किया था पर फिर भी उस काढ़े से वह राजकुमारी मर जाती है।

राजा को जैसे ही यह सब पता चलता है वह पीटर को जेल में डलवा देता है। जब पीटर को जेल ले जाया जा रहा होता है तो रास्ते में उसको सेवियर मिल जाते हैं। वह उनसे प्रार्थना करता है कि वह उसे बचा लें। सेवियर उसकी प्रार्थना पर उसकी सहायता करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

सेवियर तब राजा के पास जाते हैं और उससे कहते हैं कि अगर वह कैदी को छोड़ देगा तो वह उसकी बेटी को ज़िन्दा कर देंगे। राजा इस बात पर राजी हो जाता है पर साथ में उसको यह धमकी भी देता है कि अगर वह उसकी बेटी को ज़िन्दा नहीं कर पाया तो उसको भी मार दिया जायेगा।

खैर, सेवियर राजकुमारी को ज़िन्दा कर देते हैं तो राजा अपनी कृतज्ञता दिखाते हुए अपनी बेटी का हाथ सेवियर को देना चाहता है पर सेवियर उसको यह कहते हुए मना कर देते हैं कि ऐसे काम करते हुए धरती पर घूमना तो उनका पेशा है इसलिये वह राजकुमारी को स्वीकार नहीं कर सकते। और वह राजकुमारी को अपने साथी को देने के लिये कह देते हैं।

यही लोक कथा वेनिस में

ऐसी ही एक लोक कथा वेनिस में भी कही सुनी जाती है। उसमें लौर्ड और सेन्ट पीटर एक गरीब स्त्री के मेहमान बनते हैं जिसको पास उनको सुलाने के लिये कोई बिस्तर नहीं है। सो वह

[20] Translated for the words “A Potion from Herbs”

उनके लिये भूसे का बिस्तर बनाती है और उस पर वह पॉच ऐल[21] लम्बी एक चादर बिछाती है जो उसने उसी दिन नयी खरीदी है।

अगले दिन लौर्ड जब वहॉ से जाते हैं तो उसको वरदान दे जाते हैं कि वह सारा दिन वही काम करती रहेगी जिस काम से वह अपना दिन शुरू करेगी।

वह अपने मेहमानों की चादर उठाती है और उसके टुकड़े कर कर के उसे फाड़ती रहती है। इस तरह उसके पास बहुत सारा कपड़ा हो जाता है।

उसकी एक पड़ोसन जब इस बारे में सुनती है तो वह भी लौर्ड के साथ ऐसा ही करती है पर अपने मतलबीपन के लिये उनसे सजा पाती है।

[21] Ell is a unit of measurement usually from the elbow of a man to the tip of his middle finger – about 18 inches. So 5 ells are about 2 ½ yards long.

52 इस दुनियॉ में एक रोता है दूसरा हॅसता है[22]

एक बार लौर्ड जब दुनियॉ बना रहे थे तो उन्होंने अपने एक अपोसिल को बुलाया और उससे कहा कि वह जा कर देखे कि दुनियॉ में क्या हो रहा है। अपोसिल ने देखा और बोला — "कितनी मजेदार बात है। लोग रो रहे हैं।"

लौर्ड बोले — "अभी तुमने सारी दुनियॉ देखी कहॉ है।"

अगले दिन लौर्ड ने अपोसिल से फिर कहा कि वह दुनियॉ को देखे कि वहॉ क्या हो रहा है। अपोसिल ने फिर देखा और बोला — "अरे यह तो बड़ी मजेदार बात है। लोग तो हॅस रहे हैं।"

लौर्ड ने फिर कहा — "अभी तुमने सारी दुनियॉ देखी कहॉ है।"

तीसरे दिन लौर्ड ने फिर कहा कि वह दुनियॉ में देखे कि क्या हो रहा है। सो उसने फिर से दुनियॉ में देखा तो बोला — "लौर्ड कहीं कोई रो रहा है तो कहीं कोई हॅस रहा है।"

लौर्ड बोले — "यह दुनियॉ है क्योंकि इसमें एक रोता है तो दूसरा हॅसता है।"

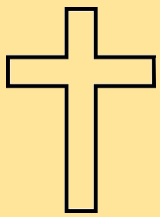

[22] In this World One Weeps and Another Laughs. Tale No 52.

53 गधा[23]

यह कहानी भी तब की है जब लौर्ड दुनियॉ बना रहे थे। उन्होंने सारे जानवर बनाये और फिर उनको नाम दिया। उन्होंने गधा भी बनाया। गधे ने बन जाने के बाद पूछा — "और मेरा नाम क्या है लौर्ड।"

लौर्ड बोले — "तुम्हारा नाम गधा है।"

गधा खुशी खुशी वहॉ से चला गया। कुछ समय बाद वह अपना नाम भूल गया तो वह फिर अपना नााम पूछने के लिये लौर्ड के पास आया तो लौर्ड ने कहा "गधा।"

कुछ समय बाद वह फिर अपना नाम पूछने आया और लौर्ड से पूछा — "माफ करें लौर्ड मेरा नाम क्या है।"

लौर्ड बोले — "गधा। गधा।"

गधा फिर चला गया पर कुछ समय बाद वह अपना नाम फिर भूल गया तो वह फिर से लौर्ड के पास आया — "लौर्ड मैं फिर भूल गया मेरा नाम क्या है।"

अब लौर्ड का धीरज छूट चुका था। वह गुस्से में आ कर उन्होंने उसके कान पकड़े और बहुत ज़ोर से खींचे तो वह चिल्लाया — "आस आस।"

[23] The Ass. Tale No 53.

उसके कान इतनी ज़ोर से खींचे गये थे कि वे काफी लम्बे हो गये थे और इसी लिये आज गधे के कान इतने लम्बे हैं।

हम भी किसी के कान इसलिये खींचते हैं ताकि वह उस बात को भूल न सके जिस बात पर उसके कान खींचे गये हैं।

एक दूसरी दंत कथा हमें बताती है कि जब क्राइस्ट दुनियॉ में घूम रहे थे तो उनको बहुत ज़ोर की प्यास लगी। वह एक शहर पहुँचे तो वहॉ उनको एक स्त्री बालों में कंघी करती हुई दिखायी दी।

क्राइस्ट ने उससे कहा — "क्या आप मुझे एक गिलास पानी देंगीं। मैं प्यास के मारे मरा जा रहा हूँ।"

वह बोली — "मैं काम में लगी हूँ। यह पानी का समय नहीं है।"

क्राइस्ट ने तुरन्त ही कहा — "उस चोटी पर आफत आये जो शुक्रवार को बनायी जाये।" और अपनी यात्रा पर चले गये।

कुछ समय बाद उन्होंने एक स्त्री को रोटी के लिये आटा मलते हुए देखा। उन्होंने उससे कहा — "ओ भली स्त्री क्या आप मुझे थोड़ा पानी देंगी पीने के लिये।"

"ओह जितना चाहे उतना पियो।" कह कर कर वह अन्दर से पानी ले आयी और क्राइस्ट को पीने के लिये दे दिया। तो क्राइस्ट बोले — "उस आटे को मेरी दुआ लगे जो शुक्रवार को बनाया जाता हो।"

इसी लिये कुछ स्त्रियॉ शुक्रवार को अपने बालों में कंघी नहीं करतीं।

लौर्ड की इच्छा

एक व्यंग्यात्मक दंत कथा है जिसका नाम है "लौर्ड की इच्छा"[24]। यह कथा बताती है कि जब लौर्ड के दुनियॉ छोड़ने का समय आया तो वह कुछ परेशान थे कि वह सब कुछ दुनियॉ में किसके ऊपर छोड़ जायें। अगर वह किसी भलेमानस[25] पर छोड़ जाते हैं तो कुलीनता[26] क्या करेगी। और अगर वह किसी कुलीन आदमी पर छोड़ कर जाते है तो भले लोग[27] और मजदूर और किसान क्या करेंगे।

वह जब ऐसा सोच रहे थे तो बहुत सारे भलेमानस आये और उन्होंने उनसे सब कुछ उनको देने के लिये कहा जो लौर्ड ने उन्हें दे दिया। उनके बाद पादरी लोग आये तो उनसे कहा गया कि सब कुछ तो भलेमानसों को दे दिया गया है तो वे बोले — "ओह शैतान।"

लौर्ड बोले — "तो ठीक है मैं तुम्हें शैतान देता हूँ।"

तभी साधुओं[28] के मुँह से निकला — "धीरज।"

तो उन्हें धीरज दे दिया गया।

मजदूर चिल्लाये — "यह धोखा है।"

तो उनको धोखा दे दिया गया। आखीर में किसान आये और मजबूरी से बोले — "जो भगवान की इच्छा।" और यह उनके हिस्से में आयी।

यही वजह है कि इस दुनियॉ में भले आदमी हुक्म चलाते हैं। शैतान पादरियों की सहायता करते हैं। साधु लोग धीरज वाले होते हैं। काम करने वाले लोग धोखाधड़ी करते हैं। और किसान लोगों को बहुत सारे ऐसे काम करने पड़ते हैं जो वे करना नहीं चाहते। उनको भगवान की इच्छा के आगे झुकना ही पड़ता है।

---

[24] The Lord's Will.
[25] Translated for the word "Gentlemen"
[26] Translated for the word "Nobility"
[27] Translated for the word "Gentry"
[28] Translated for the word "Monks"

ये चार कहानियॉ जियूसैप्पै पित्रे ने **1878** में लिखी हुई हैं। इनके बाद सालोमोने मरीनो ने कुछ कहानियॉ लिखी हैं। उनमें से एक है "भला आदमी पापी के लिये सहता है"। [29] इस कहानी में सेंट पीटर हमारे लौर्ड से शिकायत करता है कि निर्दोष लोग दोषी के लिये सहते हैं। हमारे लौर्ड उस समय तो इस बात का कोई जवाब नहीं देते पर कुछ देर बाद ही पीटर को मधुमक्खी के छत्ते का एक टुकड़ा तोड़ कर लाने को कहते हैं जिसमें मधुमक्खियॉ हों। और उसको उसकी पोशाक में अन्दर रख देते हैं। उसमें से एक मधुमक्खी पीटर को काट लेती है तो पीटर गुस्से में आ कर उन सब मक्खियों को मार देता है।

हमारे लौर्ड उसे इस बात पर बहुत डॉटते हैं तो पीटर कहता है कि "मैं कैसे बता सकता था कि इनमें से किस मधुमक्खी ने मुझे काटा था।"

तो हमारे लौर्ड बोले — "तो तुम क्या समझते हो कि मैं गलत होता हूॅ जब मैं आदमियों को इस तरह से सजा देता हूॅ?"

एक और कहानी सेंट पीटर की बहिन की शादी करने की उत्सुकता बताती है। वह अपने भाई को लौर्ड के पास उसकी इच्छा जानने के लिये तीन बार भेजती है और तीनों बार लौर्ड बड़े धीरज के साथ उससे यह कह देते हैं कि "वह जैसा चाहे वैसा करे।"

एक तीसरी कहानी यह बताती है कि इस दुनियॉ में कुछ लोग अमीर क्यों हैं और कुछ लोग गरीब क्यों हैं। ऐडम और ईव के **24** बच्चे थे। एक दिन लौर्ड उनके घर के सामने से गुजरे तो ऐडम और ईव ने अपने **12** बच्चों को एक टब के नीचे छिपा दिया और दूसरे **12** बच्चों के लिये लौर्ड से कहा कि वे उनको आशीर्वाद दें। लौर्ड ने उन **12** बच्चों को सुख से और हॅसी खुशी रहने का आशीर्वाद दिया।

जब लौर्ड चले गये तब माता पिता के दिमाग में आया कि यह उन्होंने क्या कर दिया। उन्होंने तुरन्त ही मास्टर को वापस बुलाया। जब मास्टर ने यह सुना कि उन्होंने अपने बच्चों की संख्या गलत बतायी है तो वह बोले कि अब तो कुछ नहीं हो सकता। अब तो आशार्वाद दिया जा चुका है। तो ऐडम बहुत दुखी हुआ और दुख से बोला "फिर उनका क्या होगा।"

लौर्ड बोले — "जिनको आशीर्वाद नहीं मिला है वे लोग दूसरों की सेवा करेंगे और जिनको आशीर्वाद मिल गया है वे अपने उन भाइयों की सहायता करेंगे जिनको आशीर्वाद नहीं मिला है।"

और इसी लिये दुनियॉ में आधे लोग अमीर हैं और आधे लोग गरीब हैं। और गरीब लोग अमीरों की सेवा करते हैं और अमीर उनकी सहायता करते हैं।

---

[29] Salomone Marino. "The Just Suffers For the Sinner"

इन कहानियों में आखिरी कहानी जो मैं यहॉ बताना चाहूँगा वह है "सब काम पैसे के लिये होते हैं"।[30]

एक बार एक गरीब भिखारी मर गया जिसने बहुत ही पवित्र ज़िन्दगी बितायी थी। वह स्वर्ग जाने के लिये बहुत बेताब था। जब उसकी आत्मा दरवाजे पर पहुँची और उसने दरवाजा खटखटाया तो सेंट पीटर ने पूछा कि वह कौन है और उससे इन्तजार करने के लिये कहा। उस बेचारी आत्मा ने दरवाजे के बाहर दो महीने इन्तजार किया पर सेंट पीटर ने उसके लिये दरवाजा नहीं खोला।

इस बीच एक अमीर बैरन[31] मर गया तो वह तो स्वर्ग चला गया और बिना उसके खटखटाये हुए ही स्वर्ग के दरवाजे खोल दिये गये। सेंट पीटर बोले — "दरवाजा खोल दो। बैरन को अन्दर आने दो। आइये सर बैरन। मैं आपका नौकर। ओह यह तो हमारे लिये कितनी इज़्ज़त की बात है।"

भिखारी की आत्मा अपने आप में कुछ सिकुड़ सी गयी वह बोली — "दुनियॉ अकेली ही ऐसी नहीं है जहॉ पैसे को पूजा जाता है। स्वर्ग में भी यही कानून है कि सारे काम पैसे के लिये होते हैं।"

सेंट पीटर की मॉ

सेंट पीटर की मॉ भी एक कहानी का विषय है जिसने एक बहुत ही लोकप्रिय कहावत को जन्म दिया है। ऐसा कहा जाता है कि वह एक बहुत ही लालची स्त्री थी जिसने कभी किसी का भला नहीं किया था। वास्तव में अपनी सारी उम्र उसने किसी को कुछ नहीं दिया था सिवाय एक भिखारिन को एक लीक की पत्ती के।

सो जब वह मरी तो उसको नरक में डाल दिया गया। पीटर ने लौर्ड से विनती की कि वह उसको नरक से निकाल ले। उसके इस एक दयावान काम के बदले एक देवदूत लीक की एक पत्ती दे कर वहॉ भेजा गया ताकि उसकी सहायता से वह उसको निकाल ले। पर जब वह देवदूत उसको वह पत्ती पकड़वा कर बाहर निकाल रहा था तो नरक में जो और बुरी आत्माऐं पड़ी थीं उन्होंने भी वहॉ से बच कर निकलने के लिये उसका स्कर्ट पकड़ लिया। पर वह बहुत मतलबी थी। उसने उन सबको झटक दिया। इस झटकने में लीक की पत्ती टूट गयी और वे सब फिर से नरक में जा पड़ीं।

---

[30] "All Things Are Done For Money"

[31] Baron is a high status in Imperial system. Baroness is its feminine.

इस कहानी से ही कहावत निकली "सेंट पीटर की मॉ की तरह से"। यह कहावत सारी इटली में पायी जाती है।

इस कहानी का एक मजेदार रूप बरनोनी[32] ने दिया है जिसमें जब लीक का पत्ता टूट जाता है और सेंट पीटर की मॉ फिर से नरक में चली जाती है तब भी यह कहानी चलती रहती है — "पीटर की इज़्ज़त के लिये लौर्ड उसको साल में एक बार, यानी सेंट पीटर के दिन, नरक से बाहर निकल कर एक हफ्ते तक धरती पर घूमने की इजाज़त दे देते हैं। और वह वास्तव में ऐसा करती भी है। और इस हफ्ते में सब तरह की चालें खेलती है और लोगों को तंग करती है।

सेंट पीटर की बहिनें

एक और कहानी सेंट पीटर की बहिनों की भी है जिसमें उपदेश छिपा हुआ है। यह कहानी श्नैलर ने लिखी है।[33] इसे हम आगे दे रहे हैं —

[32] Giuseppe Bernoni. "Leggende fantastiche…." (Tale No 8).

[33] Christian Schneller. p 6.

54 सेंट पीटर और उसकी बहिनें[34]

सेंट पीटर की दो बहिनें थीं एक बड़ी और एक छोटी। उसकी छोटी बहिन कौनवैन्ट[35] चली गयी थी और नन[36] बन गयी थी।

सेंट पीटर यह देख कर बहुत खुश था सो वह चाहता था कि उसकी बड़ी बहिन भी नन बन जाये। उसने उसको भी कहा कि वह भी नन बन जाये पर उसने उसकी एक नहीं सुनी और बोली "मैं तो शादी करूँगी।"

कुछ दिनों बाद पीटर भी अपने बलिदानों के बाद स्वर्ग का चौकीदार बना दिया गया।

एक दिन लौर्ड[37] ने उससे कहा — "पीटर आज स्वर्ग का दरवाजा जितना चौड़ा तुमसे हो सके उतना चौड़ा खोल दो और उसमें से सारे दैवीय गहने और सजावट निकाल कर स्वर्ग को सजा दो क्योंकि आज यहाँ एक बहुत ही बड़ी दैवीय आत्मा आ रही है।"

---

[34] St Peter and His Sisters. Tale No 54. By Christian Schneller. p 6.

[35] Convent is a community of persons devoted to religious life under a superior – normally of females. Wherever they live that building is also called Convent. There Superior is called Abbess.

[36] A nun is a member of a religious community of women, typically one living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent.

[37] Here Lord word is used for Jesus Christ

सेंट पीटर ने खुशी खुशी वह सब कर दिया जो जीसस ने उससे करने के लिये कहा था। उसने सोचा "यकीनन मेरी छोटी बहिन मर गयी होगी वही आज यहॉ आ रही होगी।"

जब सब कुछ तैयार हो गया तो उसने देखा कि उसकी बड़ी बहिन की आत्मा चली आ रही है। वह कई बच्चे छोड़ कर मर गयी थी और वे बच्चे भी उसके लिये कोई दुख नहीं मना रहे थे। लौर्ड ने उसको स्वर्ग में एक ऊॅची जगह दी।

पीटर तो यह कभी सोच भी नहीं सकता था कि उसकी बड़ी बहिन की आत्मा वहॉ आयेगी और लौर्ड उसको स्वर्ग में इतनी ऊॅची जगह देंगे।

वह सोचने लगा कि जब उसकी छोटी बहिन की आत्मा वहॉ आयेगी तब वह क्या करेगा।

कुछ दिनों बाद लौर्ड ने पीटर से कहा "आज स्वर्ग का दरवाजा बस थोड़ा सा ही खोलना। तुमने सुना?"

सेन्ट पीटर ने वही किया जैसा कि लौर्ड ने उससे करने के लिये कहा था पर वह यह सोचता ही रह गया कि "आज कौन आ रहा है।"

उसने देखा कि उसकी छोटी बहिन की आत्मा चली आ रही है। उसको स्वर्ग के उस तंग दरवाजे में से अन्दर घुसने में बहुत तकलीफ हो रही थी। इसके अलावा उसको स्वर्ग में भी अपनी बड़ी बहिन से काफी नीची जगह मिली।

पीटर बोला "यह तो उसका बिल्कुल उलटा हुआ जो मैं सोच रहा था। पर कम से कम अब मैं यह कह सकता हूँ कि हर पेशे की अपनी अपनी जगह होती है और अगर वह चाहे तो हर कोई स्वर्ग में आ सकता है।

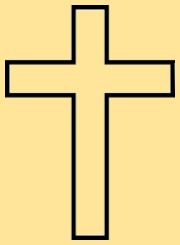

हमारे लौर्ड की कहानियों का सिलसिला तब तक खत्म नहीं हो सकता जब तक पाइलेट जूडास और घूमते हुए ज्यू की कहानी न दी जायें। पाइलेट की एक बड़ी शक्तिशाली कहानी जियूसैप्पे पित्रे ने लिखी है जो उसकी **119** नम्बर की कहानी है। हम उसे आगे दे रहे हैं —

55 पाइलेट[38]

ऐसा कहा जाता है कि यह सब एक समय में रोम में हुआ था। एक बार पत्थरों से भरी एक गाड़ी देश में एक अकेली जगह से गुजर रही थी कि उसका एक पहिया जमीन में धॅस गया।

कुछ देर के लिये तो उसे कोई निकाल ही नहीं सका पर अन्त में उसको निकाल लिया गया पर उसको निकालने के बाद वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया जिसके नीचे एक बहुत ही अॅधेरा कमरा था।

लोगों ने पूछा — "इस गड्ढे में कौन उतरना चाहता है?"

"इस गड्ढे में मैं उतरूॅगा।"

सो उन्होंने जल्दी ही एक रस्सी ढूॅढ ली और उस आदमी को उस रस्सी की सहायता से उस अॅधेरे गड्ढे में उतार दिया। इस आदमी का नाम मास्टर फ्रान्सिस[39] था।

जब यह आदमी नीचे उतर गया तो यह अपने दॉये हाथ की तरफ घूमा तो इसको उधर एक दरवाजा दिखायी दिया। उसने दरवाजा खोला तो अपने आपको अॅधेरे में पाया।

---

[38] Pilate. Tale No 55. By Giuseppe Pitre. (Tale No 119)

[39] Francis – name of the man who got down in the dark room underground.

फिर वह अपने बॉये हाथ की तरफ मुड़ा तो उसने उधर भी वैसा ही पाया। फिर वह सामने की तरफ गया तो उसने उधर भी वैसा ही पाया।

वह एक बार फिर घूमा और उसने उस तरफ का दरवाजा खोला तो उसने क्या देखा कि एक आदमी एक मेज के सामने बैठा है। उस मेज पर उसके सामने एक कलम, स्याही और एक लिखा हुआ कागज रखा है और वह उसे पढ़ रहा है।

जब उसने उसे पढ़ना खत्म कर लिया तो वह उसे फिर से पढ़ने लगा। पर उसने उस कागज पर से अपनी ऑख ऊपर नहीं उठायी।

मास्टर फ्रान्सिस एक बहुत ही बहादुर आदमी था। वह उस आदमी के पास गया और उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया और अपना पढ़ना जारी रखा। मास्टर फ्रान्सिस ने उस आदमी से फिर पूछा — "तुम कौन हो?" फिर भी वह आदमी कुछ नहीं बोला।

पर मास्टर फ्रान्सिस भी उसको छोड़ने वाला नहीं था। उसने उससे तीसरी बार पूछा — "तुम कौन हो?"

इस बार वह बोला — "घूम जाओ और अपनी कमीज खोलो तो मैं तुम्हारी पीठ पर लिख दूँगा कि मैं कौन हूँ। जब तुम यहॉ से जाओ तो तुम सीधे पोप के पास जाना और उसको यह पढ़वाना कि

मैं कौन हूँ। पर याद रखना कि इसे अकेले पोप को ही पढ़वाना किसी और को नहीं और जरूर पढ़वाना।"

मास्टर फ्रान्सिस घूम गया और उसने अपनी कमीज खोल दी। उस आदमी ने उसकी पीठ पर कुछ लिखा और फिर अपनी कुर्सी पर जा कर बैठ गया।

यह तो ठीक था मास्टर फ्रान्सिस एक बहुत ही बहादुर आदमी था पर वह लकड़ी का बना हुआ तो नहीं था। उस समय तो वह तो डर के मारे बस मर सा ही गया।

फिर जब वह होश में आया तो उसने अपनी कमीज ठीक की और उससे पूछा — "तुम यहाँ कब से हो?" पर उसे इसका भी कोई जवाब नहीं मिला।

यह देख कर कि उससे सवाल पूछना अपना समय खराब करना था उसने बाहर के लोगों को इशारा किया कि वे उसे ऊपर खींच लें सो उन्होंने उसे ऊपर खींच लिया।

जब उन्होंने उसे देखा तो वे तो उसे पहचान ही नहीं सके क्योंकि वह तो सारा सफेद हो गया था और **90** साल की उम्र का बूढ़ा लग रहा था।

एक बोला — "वहाँ क्या था? वहाँ क्या हुआ?"

वह बोला — "कुछ नहीं कुछ नहीं। तुम लोग मुझे पोप के पास ले चलो मुझे उससे कुछ कहना है।"

सो उनमें से दो आदमी उसको पोप के पास ले गये। पोप के पास जा कर उसने उसको वह सब कुछ बताया जो उसके साथ उस अँधेरे कमरे में हुआ था। फिर उसने अपनी कमीज उतारते हुए कहा — "योर होलीनैस, इसे पढ़िये।"

पोप ने उसे पढ़ा — "मैं पाइलेट[40] हूँ।"

और जैसे ही पोप ने मुस्कुराते हुए ये शब्द पढ़े तो वह आदमी तो बिल्कुल ही बुत बना खड़ा रह गया।

और यही कहा जाता है कि वही आदमी पाइलेट था जिसको वहाँ गुफा में रहने की सजा मिली थी।

वह हमेशा ही उस कागज पर से आँखें हटाये बिना ही वह वाक्य पढ़ता रहता था जो उसने जीसस क्राइस्ट के ऊपर पढ़ा था।

यही पाइलेट की कहानी है जिसको न तो बचाया ही जा सका और न सजा ही मिली।

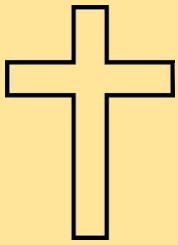

[40] Pilate – Pontius Pilate was the fifth prefect of the Roan province of Judea from 26-36 AD. He served under Emperor Tiberius and is best known today for the trial and crucifixion of Jesus.

56 जूडास की कहानी[41]

जूडास के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि उसने एक इमली के पेड़ से लटक कर आत्महत्या कर ली थी। इस घटना से पहले इमली का पेड़ बहुत सुन्दर बड़ा और घना हुआ करता था। जूडास की आत्महत्या के बाद से अब वह बहुत छोटी सी बेआकार झाड़ी सी रह गयी है।[42] गद्दार की आत्मा को हवा में घूमते रहने की सजा दी गयी थी। जब कभी वह झाड़ी देखता है तो वह रुक जाता है और उसको लगता है कि कोई बदकिस्मत लाश उससे लटक रही है जिसे चिड़ियें और कुत्ते खा रहे हैं। यह लोकप्रिय कहानी कुछ ऐसे दी गयी है —

यह तो तुम सब जानते ही हो कि जूडास वह आदमी था जिसने जीसस को धोखा दिया था। सो जब जूडास ने जीसस को धोखा दे दिया तो जीसस ने उससे कहा — "तुम अपने किये का पश्चाताप कर लो तो मैं तुमको माफ कर दूँगा।"

पर जूडास? नहीं कभी नहीं। वह कभी पश्चाताप नहीं करेगा। वह स्वर्ग और धरती दोनों को नाउम्मीद हो कर कोसता हुआ अपना पैसा ले कर वहाँ से चला गया।

फिर उसने क्या किया?

जब वह इस तरीके से नाउम्मीद हो कर जा रहा था तो वह एक बड़े से इमली के पेड़ के सामने से गुजरा। उन दिनों इमली के पेड़ बहुत बड़े और छायादार हुआ करते थे। उसको देख कर और

[41] Story of Judas. Tale No 56.

[42] It is called "Vruca" which is the synonym for all that is worthless.

अपनी धोखेबाजी को याद करते हुए उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

उसने रस्सी का एक फन्दा बनाया और अपने आपको उस इमली के पेड़ से लटका लिया। और क्योंकि धोखा देने वाले जूडास को लौर्ड ने शाप दे दिया था इसलिये वह इमली का पेड़ सूख गया। और उस दिन के बाद से वह पेड़ जैसा बड़ा होना भी रुक गया और छोटा और टेढ़ा मेढ़ा और उलझी हुई झाड़ी जैसा हो गया।[43]

इसकी लकड़ी भी किसी काम में नहीं ली जा सकती। न तो यह जलाने के काम आती है न इससे कोई चीज़ ही बन सकती है और यह सब इसलिये हुआ क्योंकि जूडास जो एक शापित आदमी था इस पेड़ से लटक गया था।

कुछ का कहना है कि जूडास नरक में भी सबसे नीची जगह पर गया है और वहॉ पर भी सबसे ज़्यादा दुख सह रहा है पर मैंने कुछ और लोगों से सुना है कि जूडास को इससे भी ज़्यादा कड़ी सजा मिली है।

उनका कहना है कि वह हवा में है और सारी दुनियॉ में घूम रहा है। और वह जहॉ है वहॉ से न तो वह ऊपर उठ सकता है और न ही नीचे जा सकता है।

[43] Maybe this happens in Italy. In India, even today, a tamarind tree is a very large tree.

और जिस किसी दिन वह जिस भी इमली की झाड़ी को देखता है वह उस पर अपना शरीर लटका हुआ देखता है जिसे कुत्ते फाड़ रहे होते हैं और जिसे चिड़ियें खा रही होती हैं।

उनका यह भी कहना है कि वह जो दर्द सह रहा है उसे बताया नहीं जा सकता। जीसस क्राइस्ट ने उसको इतना बड़ा धोखा देने का ऐसा ही शाप दिया था।

57 निराश मालकस[44]

एक ज्यू की एक मजेदार कहानी जियूसैप्पै पित्रे की लिखी हुई है जिसने अपने हाथ की हथेली से हमारे लौर्ड को पीटने की कोशिश की[45] बाद में इसे मालकस के नाम से पहचाना गया जिसे सेंट जौन में बताया गया है।[46] इसका नाम है "निराश मालकस"।

यह मालकस एक ज्यू[47] था जिसने हमारे लौर्ड[48] को पीटा। यह ज्यू एक ऐसा बेरहम ज्यू था जिसकी बेरहमी को बताया नहीं जा सकता।

जब काइस्ट को पाइलेट के घर ले जाया जा रहा था तो इसी मालकस ने जीसस को अपने लोहे के दस्ताने पहने हाथों से एक ऐसा घूँसा मारा जिससे उनके सारे दाँत टूट गये थे।

इस बुरे काम के लिये लौर्ड ने उसको यह सजा दी थी कि वह सारे समय बिना आराम किये जमीन के नीचे के एक कमरे में खड़े खम्भे के चारों तरफ लगातार चलता ही रहे।

यह खम्भा एक गोल कमरे में खड़ा है और मालकस उसके चारों तरफ बिना आराम किये घूमे जा रहा है घूमे जा रहा है।

---

[44] Desperate Malchus. Tale No 57. By Giuseppe Pitre. (Tale No 120)
In the Bible, Malchus is the servant of the Jewish High Priest Caiaphas who participated in the arrest of Jesus. According to the Bible, one of the disciples, Simon Peter, being armed with a sword, cut off the servant's ear in an attempt to prevent the arrest of Jesus.

[45] St. John. xviii, 22.

[46] St. John. xviii, 10

[47] Jew – a religion

[48] Here Lord means Jesus Christ

उनका कहना है कि वह इतना घूम चुका है कि उसके नीचे की जमीन कई गज नीचे तक टूट फूट गयी है और इसी वजह से वह खम्भा अब पहले से काफी ऊँचा दिखायी देता है क्योंकि जबसे लौर्ड को क्रास पर चढ़ाया गया है मालकस तभी से ऐसी ज़िन्दगी गुजार रहा है।

कहते हैं कि मालकस अब अपनी ऐसी ज़िन्दगी से इतना तंग आ चुका है और निराश हो चुका है कि जब वह उस खम्भे के चारों तरफ घूमता रहता हे तो वह उस खम्भे को पीटता रहता है उस पर सिर मारता रहता है गुस्से में भर जाता है और कराहता रहता है।

पर इतना सब होने के बावजूद वह मरता नहीं है क्योंकि लौर्ड ने उसको यही सजा दे रखी है कि उसको जजमैन्ट डे[49] तक ज़िन्दा रहना ही है।

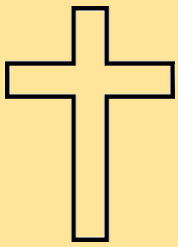

[49] In Christian belief, it is the final and eternal judgment by God of the people in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

58 खम्भे के चारों तरफ मालकस[50]

इससे पहले वाली कहानी, "निराश मालकस", बरनोनी[51] ने कुछ इस तरह कही है।

मालकस की यह दूसरी लोक कथा इससे पहले वाली लोक कथा जैसी ही है पर उसका यह रूप इटली के वेनिस शहर में ज़्यादा लोकप्रिय है। वहॉ यह कथा इस तरीके से कही सुनी जाती है।

मालकस उन ज्यू[52] लोगों का सरदार था जिसने हमारे लौर्ड[53] को मारा। लौर्ड ने उन सबको तो माफ कर दिया था जिनका वह सरदार था पर उन्होंने मालकस को कभी माफ नहीं किया था क्योंकि उसने मडोना[54] को मारा था।

इस समय वह एक पहाड़ के नीचे बन्द है और वहॉ उसको बिना आराम किये इस दुनियॉ के आखीरी समय तक एक खम्भे के चारों तरफ घूमने की सजा मिली हुई है।

---

[50] Malchus at the Column. Tale No 58.
In the Bible, Malchus is the servant of the Jewish High Priest Caiaphas who participated in the arrest of Jesus. According to the Bible, one of the disciples, Simon Peter, being armed with a sword, cut off the servant's ear in an attempt to prevent the arrest of Jesus.

[51] Bernoni, Dom. Giuseppe. "Leggende fantastiche…."

[52] Jew – a religion

[53] Here Lord means Jesus Christ

[54] The Madonna and Child or The Virgin and Child is often the name of a work of art which shows the Virgin Mary and the Child Jesus. The word Madonna means "My Lady" in Italian.

जब भी वह उस खम्भे के चारों तरफ घूमता है तो उस घूँसे की याद में जो उसने हमारे लौर्ड की माँ को मारा था उस खम्भे को घूँसा मारता है।

वह उस खम्भे के चारों तरफ इतना ज़्यादा चल चुका है कि वह जमीन में काफी धँस गया है क्योंकि उसके चलने से वह जमीन वहाँ से टूटती जा रही है। इस समय उसकी केवल गर्दन ही बाहर है।

जब उसका सिर भी उस जमीन के अन्दर चला जायेगा तब यह दुनियाँ खत्म हो जायेगी। तब भगवान उसको उसके लिये बनायी जगह भेज देंगे।

कुछ लोग हैं जो उससे मिलने आते रहते हैं। जब भी कोई उससे मिलने जाता है तो वह उनसे पूछता है कि क्या अभी बच्चे जन्म ले रहे हैं।

और जब वे कहते हैं कि "हाँ" तो वह एक गहरी साँस भर कर कहता है कि "ओह तो फिर अभी समय नहीं आया है।"

क्योंकि उसका समय आने से सात साल पहले यानी इस दुनियाँ के खत्म होने से सात साल पहले से बच्चे पैदा होने बन्द हो जायेंगे। वह उसी समय का इन्तजार कर रहा है।

59 बुत्ताद्यु की कहानी[55]

यह दंत कथा हमें उस कहानी की याद दिलाती है जिसमें एक घूमता हुआ ज्यू है जो सिसिली में "बुत्ताद्यु" के नाम से जाना जाता है। या फिर "ज्यू जिसने जीसस क्राइस्ट को मारा" के नाम से जाना जाता है।[56] यह ज्यू सिसिली में प्रगट भी हो चुका है। सालापरूता मे रहने वाले एक किसान ऐन्टोनियो कैसियो की बेटी ने उसके अपने पिता के साथ सामना होने का हाल इस तरह से दिया है।

यह जाड़ों की बात है। मेरे पिता स्कैलोन में भंडारघर में थे। वहॉ वह आग के पास बैठे आग की गर्मी ले रहे थे कि उन्होंने एक अजीब सा आदमी उसमें घुसते हुए देखा जो वहॉ के आम लोगों से कुछ अलग तरह के कपड़े पहने था। उसने पीली लाल और काले रंग की धारियों वाली ब्रीचेज़ पहन रखी थी और वैसी ही टोपी पहन रखी थी।

मेरे पिता उसको देख कर डर गये। उनके मुॅह से निकला — "ओह यह कैसा आदमी है।"

आदमी बोला — "डरो नहीं। मेरा नाम बुत्ताद्यु है।"

मेरे पिता बोले — "ओह। मैंने सुना है। अगर आपकी खुशी हो तो कुछ देर यहॉ बैठिये और मुझसे कुछ कहिये।"

वह आदमी बोला — "मैं बैठ नहीं सकता। मुझे भगवान ने हमेशा चलते रहने की सजा दी हुई है।"

---

[55] The Story of Buttadeu. Tale No 59.

[56] Buttadeu. Known as "The Jew Who Repulsed Jesus Christ".

और जब वह यह सब कह रहा था तभी भी वह इधर उधर टहल ही रहा था और बहुत बेचैन था।

फिर वह बोला — "मैं जा रहा हूँ। मैं तुम्हें यहाँ छोड़े जाता हूँ। पर इसकी याद में हमारे लौर्ड के दॉये हाथ को तुम मेरे लिये श्रद्धा[57] कहना। और पॉच और श्रद्धा उनके बॉये हाथ की तरफ कहना। और मैरी से कहना कि मैं उसके बेटे की वजह से कितनी परेशानी सह रहा हूँ। नमस्ते।"

"अच्छा विदा।"

"विदा। मेरा नाम बुत्ताद्यु है।"

[57] Translated for the word "Credo".

60 क्विवोलियू की कहानी[58]

हमारे पास संतों की बहुत कम दंत कथाऐं हैं। पर इसमें कोई शक नहीं है कि लोगों के पास उनकी कई और कथाऐं भी होंगी।[59] पर वे चर्च में कही जाने वाली कहानियों से कोई ज़्यादा अलग नहीं हैं। जो कहानियॉ हम यहॉ देने जा रहे हैं वे केवल लोकप्रिय कथाऐं ही हैं और मध्य कालीन समय से सम्बन्धित हैं।

पहली दंत कथा है "पत्थर पर ग्रिगोरी" जो मध्य कालीन युग की कविताओं में बहुत प्रचलित थी। इटली में भी इसके कई रूप प्रचलित हैं पर हमने यहॉ गौन्ज़ैनबाक[60] का जो सबसे पूरा वर्णन उपलब्ध है लिया है।

एक बार की बात है कि एक भाई बहिन थे जिनके माता पिता नहीं थे। वे अकेले ही एक साथ रहते थे। वे एक दूसरे को इतना प्यार करते थे कि उन्होंने इस वजह से एक ऐसा पाप कर लिया जो उन्हें किसी भी हालत में नहीं करना चाहिये था।

जब समय आया तो बहिन ने एक बेटे को जन्म दिया जिसे भाई ने छिप कर बैप्टाइज़ कर दिया। फिर उसने उस बच्चे के कन्धों पर एक कौस खोद दिया जिसमें लिखा था "क्विवोलियू जिसका बैप्टाइज़ेशन हो चुका है और जो एक भाई बहिन का बेटा है"।

इस तरह से उस पर निशान बना कर उन्होंने उसे एक बक्से में रख दिया और समुद्र में फेंक दिया। अब कुछ ऐसा हुआ कि उसी

---

[58] The Story of Crivoliu. Tale No 60.
Crivoliu is a corrupt form of Gregory and this legend is a peculiar transformation of the well-known legend of "Gregory on the Stone".

[59] Busk (pp 106, 202, 203, 213-228) gives a good many.

[60] Laura Gonzenbach. (Tale No 85)

समय एक मछियारा अपनी नाव ले कर समुद्र में मछली पकडने निकला था। उसने एक बक्सा समुद्र की लहरों पर बहता हुआ देखा तो उसने सोचा कि लगता है कि शायद कोई जहाज़ समुद्र में डूब गया है। मैं इस बक्से को ले कर आता हूँ शायद इसमें मुझे कोई काम की चीज़ मिल जाये।

सो उसने अपनी नाव उस तरफ खे दी और उस बक्से को उठा लिया। जब उसने उस बक्से को खोला तो उसमें तो उसको एक छोटा सा बच्चा मिला। उसको उस बच्चे पर तरस आ गया और वह उसे अपने घर ले गया।

और अपनी पत्नी को देते हुए बोला — "हमारा सबसे छोटा बच्चा तो अब दूध पीने के लिये काफी बड़ा हो गया है तो तुम उसकी बजाय अब इस बच्चे को दूध पिला कर पालो।"

सो उसकी पत्नी ने छोटे क्विोलियू को ले कर अपनी छाती से लगाया उसको दूध पिलाया और उसे पाला पोसा। उसने उसे उतना ही प्यार दिया जितना कि वह अपने किसी बच्चे को करती। बच्चा बढ़ता गया बड़ा हो गया और दिन पर दिन अक्लमन्द और ताकतवर होता गया।

मछियारे के दूसरे बेटे उससे जलने लगे क्योंकि उनके माता पिता उस उठाये हुए बच्चे को ज़्यादा प्यार करते थे हालॉकि वे उनको भी करते थे। जब वे उसके साथ खेलते और झगड़ते तो वे

उसको "उठाये हुए" के नाम से पुकारते। बच्चे का दिल इस बात से दुखी हो जाता।

बहुत दुखी हो कर एक दिन वह अपने माता पिता के पास गया और उनसे पूछा — "मुझे बताइये क्या मैं आपका बेटा नहीं हूँ।"

मछियारे की पत्नी बोली — "यह कैसे हो सकता है बेटे। जब तुम एक बच्चे थे तब क्या मैंने तुम्हें अपना दूध नहीं पिलाया।"

मछियारे ने भी अपने बेटों को उससे ऐसा कुछ कहने से सख्ती से मना कर दिया।

जब बच्चा बड़ा हो गया तो मछियारे ने उसको भी अपने दूसरे बेटों के साथ पढ़ने के लिये स्कूल भेज दिया। मछियारे के बेटे भी जब यह देखते कि उनके माता पिता नहीं सुन रहे हैं तो उसे "उठाया हुआ" कहने से बाज़ नहीं आते। स्कूल के दूसरे बच्चे जब उनको यह कहते सुनते तो वे भी उसे वैसे ही पुकारते।

किवोलियू फिर अपने माता पिता के पास गया और उनसे फिर पूछा कि क्या वह उनका बेटा नहीं था। किसी तरह से उसे समझा बुझा कर उन्होंने उसे राजी कर लिया कि जब वह **14** साल का हो जायेगा तब वह उसको बतायेंगे।

इसके बाद तो वह अपने आपको "उठाया हुआ" सुनने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था। वह फिर से मछियारे और उसकी पत्नी के पास गया और उनसे पूछा — "मेरे प्यारे माता पिता। मैं आपसे यह

बताने के लिये विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बता दें कि मैं आपका बेटा हूँ या नहीं।"

तब मछियारे ने उसे सब बताया कि कैसे वह उसे मिला था और उसके कन्धों पर क्या लिखा था।

यह सुन कर क्विवोलियू बोला — "तब तो मुझे अपने माता पिता के पाप के लिये तपस्या करनी पड़ेगी।"

यह सुनते ही मछियारे की पत्नी तो रो पड़ी। वह तो उसको किसी तरह भी जाने ही न दे पर क्विवोलियू को रोका न जा सका। वह इस बड़ी दुनियॉ में घूमता ही रहा।

जब वह बहुत समय तक घूम चुका तो एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहॉ एक अकेली सराय खड़ी थी। उसने सराय की मालकिन से पूछा — "आप मुझे बतायें कि यहॉ पास में कोई गुफा है या नहीं जिसके दरवाजे के बारे में आप अकेली ही जानती हो।"

वह बोली — "हॉ मैं जानती हूँ ओ सुन्दर नौजवान। और मैं तुम्हें वहॉ बड़ी खुशी से ले चलूँगी।"

तब क्विवोलियू ने दो ग्रैनी[61] की रोटी ली और एक लोटा पानी लिया और सराय की मालकिन उसे गुफा की तरफ ले चली। वह गुफा सराय से कुछ दूर थी। उसका दरवाजा कॉटों और झाड़ियों से ढका हुआ था सो वह बड़ी मुश्किल से उसमें घुस सकता था।

[61] Grani – currency of Italy in those times.

सराय की मालकिन को उसने वापस भेज दिया। खुद गुफा में घुसा। रोटी और पानी नीचे जमीन पर रखी। हाथ जोड़ कर घुटनों के बल बैठ गया और इस तरह से उसने अपने माता पिता के पाप के लिये वहॉ तपस्या की।

वहॉ उसे बहुत साल बीत गये, मुझे पता नहीं कितने, पर इतने कि उसके घुटनों से जड़ें निकल आयीं और कुछ ही दिनों में वह जमीन से बहुत कस कर चिपक गया।

अब ऐसा हुआ कि रोम में पोप मर गया और अब नया पोप चुना जाना था। सारे कार्डिनल्स[62] इकट्ठा हुए और एक सफेद फाख्ता छोड़ी गयी कि जिस किसी के सिर पर भी वह बैठ जायेगी वही पोप बन जायेगा।[63]

सफेद फाख्ता ने हवा में कई चक्कर काटे पर वह किसी के ऊपर भी नहीं बैठी। तब सारे बिशप और आर्चबिशप साधु संत बुलाये गये पर वह सफेद फाख्ता ने उनमें से किसी को नहीं चुना। साारे लोग बहुत निराश हो चुके थे।

तब कार्डिनल्स को शहर में चारों तरफ जाना पड़ा और ढूँढना पड़ा कि शायद कहीं कोई साधु मिल जाये। और बहुत सारे लोग भी उनके साथ गये।

[62] Cardinal is a leading Bishop and Prince of the College of the Cardinals in the Catholic Church.
[63] This method of selection of Pope has been mentioned in other Italian tales too.

आखिर वे उसी सराय में आ पहुँचे जो पास में ही एक अकेली जगह खड़ी थी। उन्होंने उसकी मालकिन से पूछा कि क्या वह किसी साधु को जानती थी जो अभी भी दुनियॉ को न पता हो।

सराय की मालकिन ने कहा कि बरसों पहले एक बहुत ही दुखी नौजवान यहॉ आया था और वह अपना तप करने के लिये मुझे उस गुफा में ले गया था। अब तो उसे बहुत दिन हो गये मुझे तो विश्वास है कि अब तक तो वह मर भी गया होगा।

कार्डिनल्स ने कहा — "हम देखेंगे कि वह अभी मर गया है या ज़िन्दा है। तुम हमको उसके पास ले चलो।"

तब सराय की मालकिन उन सबको उस गुफा के पास ले गयी। उसका दरवाजा मुश्किल से पहचान में आ रहा था। वहॉ बहुत सारी झाड़ियॉ और पौधे उग आये थे। उन सबके उसमें घुसने से पहले उनके नौकरों को उन सब पौधों को साफ करना पड़ा।

वे किसी तरह से गुफा में घुसे तो उन्होंने क्विोलियू को घुटनों पर बैठे हुए ही देखा। उसकी बॉहें उसकी छाती पर एक दूसरे के ऊपर रखी थीं। उसकी दाढ़ी इतनी बढ़ गयी थी कि वह जमीन को छू रही थी। उसकी रोटी अभी भी उसके पानी के लोटे के पास रखी हुई थी क्योंकि इन सालों में न उसने कुछ खाया था न पिया था।

जब उन्होंने सफेद फाख्ता को यहॉ खुला छोड़ा तो वह एक पल के लिये उसके सिर के चारों तरफ उड़ी और फिर उसके सिर पर जा

कर बैठ गयी। तब कार्डिनल्स को लगा कि वह एक सेंट था। उन्होंने उससे अपने साथ आने और पोप बनने की विनती की।

जब उन्होंने उसे पकड़ कर उठाया तब उन्होंने देखा कि उसके घुटने तो जमीन से चिपक गये हैं तो उनको उनकी जड़ें काटनी पड़ीं। उसके बाद ही वे उसको रोम ले जा सके। वहाँ ले जा कर उसको पोप बना दिया गया।

उसी समय बहिन ने अपने भाई से कहा — "प्यारे भैया। जब हम लोग जवान थे तब हमने एक पाप किया था जिसका हमने अभी तक कन्फ़ैशन[64] नहीं किया है क्योंकि ऐसे पाप को केवल पोप ही माफ कर सकते हैं तो हमें अब उनसे कनफ़ैसन के लिये जाना चाहिये।"

सो वे दोनों रोम के लिये रवाना हो गये। जब वे चर्च में घुसे तो वहाँ पोप कन्फ़ैशन बौक्स में बैठे हुए थे। जब उन्होंने ज़ोर से बोल कर अपना कन्फ़ैशन कर लिया तब पोप बोले — "मैं ही आपका बेटा हूँ क्योंकि जिस निशान की आप बात कर रहे हैं वह मेरे कन्धों पर है।

मैंने आप लोगों के पाप के लिये बहुत सालों तक तपस्या की है जब तक कि उसको माफ नहीं कर दिया गया। मैंने आपको आपके

[64] Confession in Christianity is to confess any sin in front of the Priest – of course they have a curtain in between so that both of them cannot see each other.

पाप से आजाद करवा दिया है इसलिये अब आप मेरे साथ आराम से रहें।"

सो फिर वे अपने बेटे के साथ रहे। जब उनके जाने का समय आया तब लौर्ड ने उन तीनों को स्वर्ग बुला लिया।

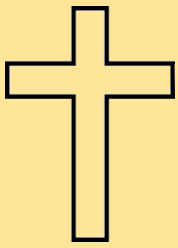

नस्ट ने जो इस कहानी का रूप प्रस्तुत किया है उस रूप में बच्चा अपने पालने वाले माता पिता को छोड़ कर अपने असली माता पिता की खोज में जाता है। वह उनसे मिल तो जाता है पर उनको पहचानता नहीं कि वे ही उसके असली माता पिता हैं।

उधर वे समझते हैं कि वह कोई भिखारी है सो वे उसे अपने पास रख लेते हैं और बड़ा करते हैं। फिर वह अपनी मॉ से शादी कर लेता है जो उसको एक लाल बालों के गुच्छे से पहचान जाती है। कहानी के अन्त में जब पोप उनका कन्फ़ैशन सुन लेते हैं तो वह अपने आपको उन्हें बताता है कि वह कौन है। तीनों आपस में गले मिलते हैं और मर जाते हैं। कहानी के अन्त में लिखा है कि रोम के सेंट पीटर में उनका मकबरा मौजूद है।

एक और पोप है सिलवैस्टर प्रथम[65] जो जियूसैप्पै पित्रे की कहानी नम्बर **118** का विषय है। इसमें एक बहुत ही जानी पहचानी दंत कथा का वर्णन है – कौन्स्टैन्टाइन के कोढ़ का इलाज करने के बारे में। कि उसका यह रोग सेंट सिलवैस्टर के हाथों बैप्टाइज़ेशन किये जाने पर ठीक हो गया था।

इससे भी ज़्यादा मजेदार कथा स्पेन के एक सेंट ऐल्डर सेंट जेम्स की है जिनका मन्दिर गलीशा में सैनटियागो जो मध्य कालीन समय में बहुत लोकप्रिय थे। उसका केवल एक ही रूप ही लोकप्रिय है जिसे गौन्ज़ैनबाक ने अपनी कहानी नम्बर **90** में लिखा है। यह कहानी आगे दी जाती है।

[65] Sylvester I

61 गलीशा के सेंट जेम्स की कहानी[66]

सेंट की कहानियों में एक कहानी वहुत ही मजेदार है और वह है "सेंट जेम्स द ऐल्डर" की कहानी। ये स्पेन के वहुत जाने माने सेंट थे। उनके मन्दिर को जो गलीशा के सैनटियागो शहर में है मध्य कालीन युग में वहुत लोग देखने के लिये आते थे। इसका पूरा रूप गौन्ज़ैनवाक की कहानी नम्वर 90 में मिलता है। वही कहानी यहॉ दी जा रही है।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। उनकी बहुत इच्छा थी कि उनको कोई बेटी या बेटा हो। रानी ने गलीशा के सेंट जेम्स की बहुत प्रार्थना की — "ओह सेंट जेम्स। अगर आप मुझे एक बेटा दे देंगे तो जब वह 18 साल का हो जायेगा तो वह आपके मन्दिर आयेगा।"

कुछ समय बाद समय आने पर सेंट जेम्स की कृपा से रानी को एक बेटा हुआ। वह बेटा इतना सुन्दर था जैसे उसको भगवान ने खुद बनाया हो। बच्चा जल्दी जल्दी बड़ा और और सुन्दर होने लगा।

जब वह 12 साल का था तो राजा की मौत हो गयी। अब रानी अपने बेटे के साथ अकेली रह गयी। कई साल बीत गये और अब वह समय पास आता जा रहा था जब वह 18 साल का होता।

[66] The Story of St James of Galicia. Tale No 61. By Laura Gonzenbach. (Tale No 90)

जब रानी ने सोचा कि अब उसे राजकुमार से अलग होना पड़ेगा। उसे उसको लम्बी यात्रा पर भेजना होगा तो वह बहुत रोयी और दिन भर रोती ही रही।

एक दिन राजकुमार ने मॉ से कहा — "मॉ आप सारा दिन क्यों रोती रहती हैं।"

रानी बोली — "कुछ नहीं बेटे मुझे केवल तुम्हारी चिन्ता है।"

"आपको किस बात की चिन्ता है। क्या आपको डर है कि आपके कैटैनिया के खेत ठीक से जुते नहीं हैं। आप मुझे वहॉ जाने की इजाज़त दें ताकि मैं उनकी देखभाल कर आपको उनकी खबर ला कर दूँ।"

रानी ने उसको इजाज़त दे दी और वह उन खेतों की तरफ चला गया जो उनकी थी। सारे खेत सब कुछ ठीकठाक थे। वह अपनी मॉ के पास वापस आया और बोला — "मॉ अब खुश हो जाओ और अपनी चिन्ता छोड़ो। हमारे सब जानवर बहुत अच्छे हैं। खेत खूब अच्छी तरह से जुते हुए हैं और अनाज भी जल्दी ही पक जायेगा।"

रानी ने जवाब दिया — "बहुत अच्छे मेरे बेटे।"

पर वह खुश नहीं हुई और अगले दिन से फिर से रोना शुरू कर दिया। राजकुमार फिर बोला — "मॉ अगर आप मुझे यह नहीं बतायेंगी कि आप क्यों रो रही हैं तो मैं घर से बाहर चला जाऊँगा और फिर बाहर ही घूमता रहूँगा।"

रानी बोली — "ओह मेरे बच्चे। मैं दुखी इसलिये हूँ क्योंकि तुम्हें अब मुझसे बिछड़ना है। क्योंकि तुम्हारे पैदा होने से पहले मैं तुम्हारे लिये बहुत इच्छुक थी तब मैंने गलीशा के सेंट जेम्स को वचन दिया था कि अगर वह मुझे एक बेटा देंगे तो वह 18 साल का होने पर तुम्हारे मंदिर जरूर आयेगा। और अब तुम जल्दी ही 18 साल के होने वाले हो।

मैं दुखी हूँ कि तुमको अब कई साल तक अकेले ही घूमना पड़ेगा क्योंकि सेंट तक पहुँचने में ही एक साल लग जायेगा।"

बेटा बोला — "यह तो कुछ नहीं है माँ। आप दुखी न हों। केवल मरे हुए लोग ही वापस नहीं लौटते। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मैं जल्दी ही वापस आऊँगा।"

ऐसा कह कर उसने माँ को तसल्ली दी और जब वह 18 साल का हो गया तब उसने अपनी माँ से विदा ली और बोला — "अच्छा विदा माँ। भगवान ने चाहा तो हम जल्दी ही मिलेंगे।"

रानी बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। आँसू बहाते हुए उसे अपने गले से लगाया फिर उसे तीन सेब दे कर कहा — "बेटा लो ये तीन सेब लो और मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम इतनी लम्बी यात्रा अकेले नहीं करोगे। जब कोई नौजवान तुम्हें यात्रा में साथ के लिये मिले तो उसको साथ ले लेना।

उसे सराय में ठहराना और खाना उसके साथ बाँट कर खाना। खाना खाने के बाद एक सेब को दो आधे हिस्सों में बाँटना जिनमें

एक आधा थोड़ा बड़ा हो और दूसरा आधा थोड़ा छोटा हो। अगर वह बड़ा वाला हिस्सा ले ले तो उससे अलग हो जाना क्योंकि वह तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं है।

पर अगर वह छोटा वाला हिस्सा ले तो उसको तुम अपने भाई जैसा समझना और तुम्हारे पास जो कुछ हो उसे उसके साथ बॉटना।"

कह कर उसने एक बार अपने बेटे को फिर से गले लगाया आशीर्वाद दिया और राजकुमार वहॉ से चल दिया।

वह बहुत दिनों तक चलता रहा पर उसको उसके साथ के लिये कोई नहीं मिला। फिर एक दिन उसे एक नौजवान दिखायी दिया जो सड़क के किनारे किनारे जा रहा था। वह भी राजकुमार के साथ हो लिया।

उसने राजकुमार से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो ओ सुन्दर नौजवान।"

राजकुमार बोला — "मैं गलीशा के सेंट जेम्स के मन्दिर जा रहा हूँ।" और उसने अपनी मॉ की प्रतिज्ञा के बारे में उसे सब बता दिया।

दूसरा बोला — "मुझे भी वहॉ जाना चाहिये। क्योंकि मेरी मॉ के साथ भी वही हुआ जो तुम्हारी मॉ के साथ हुआ। अगर हम लोगों को एक ही जगह जाना है तो क्यों न हम साथ साथ चलें।"

सो दोनों एक साथ चलते रहे।

पर राजकुमार अपने साथी के बारे में कुछ बहुत ज़्यादा विश्वस्त नहीं था। उसने सोचा कि वह पहले उसका सेब से इम्तिहान लेगा। चलते चलते वे एक सराय के पास आ पहुँचे। सराय देख कर राजकुमार बोला — "यहाँ कुछ खाया जाये बहुत भूख लगी है।"

वह नौजवान भी राजी हो गया सो दोनों उस सराय में चले गये। खाना खा चुकने के बाद राजकुमार ने अपना एक सेब निकाला और उसे एक बड़े और एक छोटे हिस्से में काट दिया। फिर उसने दोनों हिस्से अपने साथी की तरफ बढ़ाये तो उसने बड़ा हिस्सा ले लिया।

राजकुमार ने सोचा कि यह तो सच्चा दोस्त नहीं है। और उससे बचने के लिये उसने बीमार होने का बहाना किया जिससे वह वहीं रह गया। दूसरे ने कहा — "अफसोस। मैं तुम्हारा इन्तजार नहीं कर सकता। मुझे बहुत दूर जाना है। सो विदा।"

जब राजकुमार ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की तो उसके मुँह से निकला "ओह काश मुझे कोई सच्चा दोस्त मिल जाता ताकि मुझे अकेले यात्रा न करनी पड़ती।"

कुछ देर बाद ही उसे एक और नौजवान मिल गया। उसने राजकुमार से पूछा — "ओ सुन्दर नौजवान। तुम किधर की तरफ जा रहे हो।"

राजकुमार ने उसे भी वही जवाब दे दिया जो उसने अपने पहले साथी को दे दिया था। इसके साथ भी वही हुआ जो पहले के साथ हुआ था।

जब राजकुमार ने इसको भी छोड़ दिया तो उसने फिर से अपनी यात्रा शुरू की। उसने फिर इच्छा की कि उसको कोई सच्चा दोस्त मिल जाये जो उसके भाई की तरह से उसके साथ रहे।

जब वह भगवान से यह प्रार्थना कर रहा था तो उसे एक और नौजवान अपनी तरफ आता दिखायी दिया। यह नौजवान बहुत सुन्दर था और देखने में ऐसा लग रहा था जैसे इससे उसकी दोस्ती हो जायेगी। वह उसको देखते ही बहुत अच्छा लग गया। उसके मुँह से निकला "आह। हो सकता है कि यही मेरा सच्चा दोस्त हो।"

यह नौजवान भी राजकुमार के साथ ही चलने लगा। सब कुछ वैसे ही घटा जैसे पहले दोनों नौजवानों के साथ घटा था। बस एक बात अलग थी कि इसने सेब का छोटा वाला हिस्सा खाया था। यह देख कर राजकुमार बहुत खुश हुआ कि उसे अब उसका सच्चा दोस्त मिल गया था।

राजकुमार ने उस नौजवान से कहा — "हम लोगों को अब एक दूसरे को भाई समझ लेना चाहिये। जो मेरा है वह तुम्हारा है और जो तुम्हारा है वह मेरा है। अब जब तक हम सेंट के मन्दिर नहीं आ जाते हम लोग एक साथ ही यात्रा करेंगे। और अगर हममें से कोई

रास्ते में मर जाता है तो दूसरा उसकी लाश ले कर वहॉ जायेगा। हम आपस में यही वायदा करते हैं।"

उन्होंने ऐसा ही किया और एक दूसरे को अपना भाई समझा और साथ साथ चलते रहे। सेंट के मन्दिर पहुॅचने के लिये एक साल की जरूरत होती है तो ज़रा सोचो कि दोनों ने कितनी यात्रा एक साथ की होगी।

एक दिन वे थके हारे एक बड़े और सुन्दर शहर में आ पहुॅचे। सो वे बोले कि वे यहॉ कुछ दिन रह कर आराम करेंगे और उसके बाद ही अपनी यात्रा शुरू करेंगे। सो उन्होंने एक छोटा सा घर ले लिया और उसमें रहने लगे।

उस घर के सामने एक राजा का महल था। एक बार सुबह को जब वह अपने छज्जे पर खड़ा था तो उसने दो नौजवान देखे तो सोचा "ओह ये दोनों ही कितने सुन्दर नौजवान हैं पर फिर भी एक दूसरे से ज़्यादा सुन्दर है। मैं इससे अपनी बेटी की शादी कर दूॅगा।"

राजकुमार उन दोनों में ज़्यादा सुन्दर था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये राजा ने एक दिन उन दोनों को अपने महल में खाना खाने के लिये बुलाया। जब वे महल पहुॅचे तो दोनों का बहुत प्यार से स्वागत किया गया। उसने अपनी बेटी को बुलाया जो सूरज चॉद से भी ज़्यादा सुन्दर थी।

जब रात को वे जाने लगे तो राजा ने एक जहरीला पेय राजकुमार के दोस्त को दे दिया जो उसके पीते ही मर गया। क्योंकि राजा ने सोचा था कि अगर इसका दोस्त मर जाता है तो यह यहीं रह जायेगा और सेंट के मन्दिर जाने की सोचेगा भी नहीं बल्कि मेरी बेटी से शादी कर लेगा।

अगली सुबह जब राजकुमार उठा तो उसने पूछा "मेरा दोस्त कहॉ है।" तो नौकरों ने जवाब दिया कि वह कल रात अचानक मर गये और अब उनको दफ़नाना बहुत जरूरी है।

राजकुमार बोला अगर मेरा दोस्त मर गया है तो मैं अब यहॉ एक पल भी नहीं रह सकता। मुझे इसी समय यहॉ से जाना चाहिये। राजा ने उससे विनती की कि वह वहीं रहे। वह उसको अपनी बेटी देना चाहता है।

राजकुमार बोला — "नहीं। मैं तो यहॉ रुक ही नहीं सकता। अगर आप मेरी कोई इच्छा पूरी करना ही चाहते हैं तो मुझे एक अच्छा सा घोड़ा दे दें और मुझे मेरी यात्रा पर शान्ति से जाने दें। जब मैं अपनी यात्रा पूरी कर लूँगा तब मैं वापस आऊँगा और आपकी बेटी से शादी कर लूँगा।"

राजा ने तब उसे एक घोड़ा दे दिया जिस पर राजकुमार चढ़ गया फिर उसने अपने दोस्त के शरीर को अपने आगे रख लिया और इस तरह अपनी यात्रा पूरी की। वह नौजवान भी अभी मरा नहीं था बल्कि बस गहरी नींद में था।

जब राजकुमार गलीशा के सेंट जेम्स के मन्दिर में पहुँचा तो वह घोड़े से नीचे उतरा। अपने दोस्त के शरीर को एक बच्चे की तरह से अपनी बाँहों में लिया और चर्च में घुसा। वहाँ जा कर उसने अपने दोस्त के शरीर को चर्च की वेदी की सीढ़ियों पर रख दिया और प्रार्थना की —

"देखिये गलीशा के सेंट जेम्स। मैंने अपनी बात रखी। मैं आपके पास आ गया हूँ और साथ में अपने दोस्त को भी ले आया हूँ। अब मैं इसे आपको सौंपता हूँ। अब अगर आप इसे ज़िन्दा कर देंगे तो हम आपकी दया का गुणगान करेंगे। पर अगर यह फिर से ज़िन्दा नहीं हुआ तो कम से कम इसने अपनी प्रतिज्ञा तो रखी ही है।"

और लो देखो जब वह इस तरह से सेंट की प्रार्थना कर रहा था उसका मरा हुआ दोस्त तो ज़िन्दा हो गया और बिल्कुल ठीक हो गया। दोनों ने सेंट को धन्यवाद दिया और मँहगी भेंटें दीं और घर वापस लौटने की यात्रा शुरू कर दी।

जब वे उस शहर में पहुँचे जिसके राजा ने उसकी शादी की प्रार्थना की थी तो वे राजा के महल के सामने जो मकान था उसी में जा कर ठहर गये।

राजा को उस सुन्दर राजकुमार को फिर से देख कर बहुत खुशी हुई। इस बार वह उसे पहले से भी ज़्यादा सुन्दर लगा। उसने बहुत सारे इन्तजाम किये और बड़े शानदार ढंग से शादी मनायी गयी। इस

तरह से राजकुमार की शादी उस सुन्दर राजकुमारी से हो गयी। शादी के बाद वे राजा के पास कई महीनों तक रहे।

फिर एक दिन राजकुमार ने राजा से कहा कि उसे घर से निकले हुए काफी दिन हो चुके हैं अब वह यहॉ और नहीं रह सकता। वह अब अपनी पत्नी और दोस्त के साथ अपने घर जाना चाहता है। राजा ने उसे इजाज़त दे दी और उसने अपनी यात्रा का इन्तजाम करना शुरू कर दिया।

राजा को उस बेचारे दोस्त से जिसको उसने मारने वाला पेय दिया था और जो ज़िन्दा हो कर वापस आ गया था बहुत ज़्यादा घृणा हो गयी। उसने उसे दुखी करने के लिये यात्रा पर जाने वाली सुबह को ही उसे किसी काम पर भेज दिया।

उसने उससे यह भी कहा — "जल्दी करना। तुम्हारा दोस्त तुम्हारे बिना यहॉ से हिलेगा भी नहीं।"

वह नौजवान बिना अपने दोस्त को बताये चला गया और राजा का काम कर लाया। इस बीच राजा ने राजकुमार से कहा — "जल्दी करो नहीं तो तुम समय से अपने घर नहीं पहुॅच पाओगे। तुम्हें बहुत रात हो जायेगी।"

राजकुमार बोला — "मैं अपने दोस्त के बिना नहीं जा सकता।"

राजा बोला — "तुम चलो तो सही। वह यहाँ एक घंटे में ही आ जायेगा और अपने तेज़ घोड़े पर सवार हो कर तुमको जल्दी ही पकड़ लेगा।"

उसके इतना जिद करने पर राजकुमार राजी हो गया। उसने अपने ससुर से विदा ली और अपनी पत्नी को साथ ले कर चल दिया।

राजकुमार का दोस्त राजा का काम कई घंटों तक नहीं कर सका और जब वह राजा का काम कर के वापस आया तो राजा ने उससे कहा — "तुम्हारा दोस्त तो अब तक बहुत दूर निकल चुका होगा देख लो तुम उसे कैसे पकड़ सकते हो।"

बेचारे नौजवान को उसी समय महल छोड़ना पड़ा और उसको कोई घोड़ा भी नहीं मिला। वह बेचारा दिन रात भागता ही रहा और किसी तरह राजकुमार को पकड़ा।

उसकी इतनी मेहनत और थकान से उस बेचारे को कोढ़ हो गया। वह बहुत ही बीमार और भयानक दिखायी देने लगा। राजकुमार ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया और एक भाई की तरह से उसकी देखभाल की।

आखिर वे घर पहुँचे जहाँ रानी उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। उसने खुशी में भर कर अपने बेटे को गले लगाया। राजकुमार ने भी अपने दोस्त के लिये एक चारपायी बिछवा दी।

उसने शहर और राज्य के सारे अच्छे डाक्टरों को उसका इलाज करने के लिये बुलवाया पर कोई उसका कोई इलाज नहीं कर सका। जब वह बेचारा नौजवान ठीक नहीं हो सका तो राजकुमार ने गलीशा के सेंट जेम्स से कहा — "ओ गलीशा के सेंट जेम्स। आपने ही मेरे दोस्त को ज़िन्दा किया। मेहरबानी कर के उसकी इस बार भी सहायता कीजिये और उसका कोढ़ ठीक कीजिये।"

जब वह सेंट जेम्स की इस तरह प्रार्थना कर रहा था कि उसका एक नौकर आया और बोला — "एक अजीब सा डाक्टर आया है। वह कहता है कि वह मरीज़ को ठीक कर देगा।"

यह डाक्टर तो सेंट जेम्स खुद थे जिन्होंने राजकुमार की प्रार्थना सुनी और उसके दोस्त की सहायता के लिये चले आये। राजकुमार के अब एक छोटी सी सुन्दर सी बेटी थी। सेंट मरीज़ के बिस्तर तक गये और उसकी जॉच की फिर राजकुमार से पूछा — "क्या तुम वास्तव में अपने दोस्त को किसी भी कीमत पर ठीक होते देखना चाहते हो।"

राजकुमार — "जी हॉ। किसी भी कीमत पर। बस मुझे बताइये कि वह किस चीज़ से ठीक होगा।"

सेंट बोले — "शाम को अपनी बेटी को ले जाना। उसकी सारी नसें खोल देना और वह खून अपने दोस्त के घावों पर लगा देना। वह तुरन्त ही ठीक हो जायेगा।"

राजकुमार तो यह सुनते ही डर गया कि उसको खुद को अपनी बेटी को मारना था। उसने फिर सॅभल कर कहा — "मैंने अपने दोस्त से वायदा किया था कि मैं उसके साथ अपने भाई जैसा व्यवहार करूॅगा। अगर इसका कोई और इलाज नहीं है तो मैं यह करूॅगा।"

शाम को वह बच्ची को ले गया उसकी नसें खोलीं और उनमें से खून निकाल कर अपने दोस्त के घावों पर लगा दिया। खून लगाते है उसके सारे घाव ठीक हो गये और उसका शरीर बिल्कुल साफ सुथरा हो गया।

लड़की बेचारी पीली पड़ गयी और ऐसी लग रही थै जैसे मर ही गयी हो। उन्होंने उसको उसके पालने में लिटा दिया। माता पिता बेचारे दोनों ही दुखी थे क्योंकि उनको लग रहा था कि उनकी बच्ची तो अब गयी।

अगली सुबह वह डाक्टर फिर आया और अपने मरीज़ के बारे में पूछा। राजकुमार ने कहा कि वह तो अब बिल्कुल्ल ठीक है। सेंट ने पूछा — "और तुमने बच्ची को कहॉ रखा?"

पिता दुखी आवाज में बोला — "वह वहॉ पालने में मरी पड़ी है।"

सेंट बोले — "एक बार ज़रा जा कर देख कर तो आओ कि वह वहॉ कैसी है।"

वे तुरन्त ही पालने की तरफ भागे तो उन्होंने देखा कि उनकी बच्ची तो ज़िन्दा है और ठीक है। तब डाक्टर ने कहा — "मैं गलीशा का सेंट जेम्स हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करने आया हूँ। मैंने तुम्हारी सच्ची दोस्ती देखी तो मुझे लगा कि मुझे तुम्हारी सहायता करनी चाहिये। तुम एक दूसरे को प्यार करते रहो। जब भी तुम्हें मेरी सहायता की जरूरत हो तो मुझे पुकार लेना। मैं आ जाऊँगा।"

यह कह कर उन्होंने उन सबको आशीर्वाद दिया और तुरन्त ही गायब हो गये।

उसके बाद वे सब बड़े पवित्र ढंग से रहे। वे हमेशा गरीबों की सहायता करते रहे। खुश रहे और सन्तुष्ट रहे।

गलीशा के सेंट जेम्स की एक कहानी मिस बस्क की लिखी हुई भी पायी जाती है – "यात्री"।[67]

एक बार एक पति पत्नी ने गलीशा के सेंट जेम्स की साधारण कसम खायी कि अगर वह उनको बच्चे दे देंगे तो वे सैनटियागो जरूर जायेंगे। तो जब उनके बच्चे **15** और **16** साल के हुए तो वे यात्रा के लिये तैयार हुए। उन्होंने बेटे को साथ लिया और बेटी को एक पादरी के पास छोड़ दिया।

पादरी ने उस लड़की के बारे में एक ऐसी झूठी और बुरी खबर दी कि बेटा अचानक ही घर लौट गया उसने बेटी का कत्ल किया और उसके शरीर को एक गड्ढे में डाल दिया। एक राजा का बेटा वहॉ से गुजर रहा था उसको वह शरीर मिल गया। उसने देखा कि उसके शरीर में अभी भी थोड़ी जान बाकी थी। वह उसको घर ले गया। उसका इलाज किया और उससे शादी कर ली। बाद में वे राजा और रानी बन गये।

एक बार राजा लड़ाई पर गया हुआ था तो वाइसरौय ने उसकी पत्नी को ललचाया और जब वह नहीं मानी उसने उसके दो बच्चों को मार दिया और इस कत्ल का इलजाम उसके ऊपर लगा कर राजा को बता दिया। रानी ने अपने दोनों बच्चों की लाशें उठायीं और इधर उधर घूमती रही। घूमते घूमते उसको मडोना[68] मिल गयी। उसने बच्चों को उससे ले लिया और रानी गलीशा चली गयी।

राजा और वायसराय भी रानी के मायके गये क्योंकि ऐसा माना जा रहा था कि जैसे उनकी बेटी मर गयी हो। सेंट के मन्दिर में सब मिल गये और सबने एक दूसरे को माफ कर दिया। उधर मडोना ने भी बच्चों को फिर से ज़िन्दा कर दिया और अब वे ठीक थे।

इस सेंट की दो तीन कहानियॉ और हैं[69] जिनमें सेंट अच्छी परियों के रूप में प्रगट होते हैं। एक में वे हीरो की सहायता करते हैं जब वह मुश्किल में होता है। इनमें से एक कहानी है "ऋणी लाश"।[70] जिसके जैसी कहानी हमने "सुन्दर भौंह"[71] के नाम से दी है। दूसरी दो कहानियॉ हम संक्षेप में यहॉ दे रहे हैं।

पहली कहानी है गौन्ज़ेनबाक की कहानी नम्बर **74**। इसमें हीरो सेंट जोसेफ़ की सहायता से राजा की बेटी जीत जाता है। एक राजा यह मुनादी पिटवाता है कि वह अपने बेटी उसको देगा जो कोई ऐसा जहाज़ बनायेगा जो धरती के साथ साथ पानी में भी तैरेगा। तीन भाइयों में

---

[67] Miss Busk. "The Pilgrims". p 208.

[68] Madonna – Mother Mary (Jesus' mother)

[69] These stories are written by Giuseppe Pitre (Tale No 116); and Laura Gonzenbach (Tale No 74)

[70] "The Thankful Dead". By Laura Gonzenbach. (Tale No 74)

[71] "Fair Brow" titled story is given in the 2nd part of this book, Tale No 35.

से सबसे छोटा भाई अपने दोनों भाइयों के इस काम में फेल हो जाने के बाद सेंट जोसेफ़ की सहायता से एक ऐसा जहाज़ बनाने में सफल हो जाता है।

सेंट जिसे नौजवान जानता भी नहीं है उसके साथ इन शर्तों पर जाने के लिये तैयार हो जाता है कि जो कुछ भी नौजवान को मिलेगा वह उसका आधा हिस्सा उसको दे देगा। यात्रा पर जाते समय वे अपने जहाज़ में एक ऐसे आदमी को बिठा लेता है जो कोहरे को थैले में भर सकता है। एक और आदमी को बिठाता है जो आधी नदी पी सकता है। एक और आदमी को बिठाता है जिसका निशाना अचूक है और फिर एक ऐसे आदमी को भी बिठाता है जो इतने लम्बे लम्बे डगों से चलता है कि अगर उसका एक पैर कैटैनिया में है तो दूसरा पैर मसीना में है।

एक वैसा ही जहाज़ तैयार करने के बावजूद जैसा कि राजा चाहता था राजा उसको अपनी बेटी देने से इनकार कर देता है पर वह नौजवान अपने नौकरों और सेंट जोसेफ़ के साथ राजा का कहा हुआ सारा काम करता है और राजकुमारी को ले कर भाग जाता है। जब नौजवान अपनी पत्नी और खजाने के साथ घर लौटता है तो सेंट जोसेफ़ उससे अपनी शर्त के अनुसार उसे आधा आधा बॉटने के लिये कहते हैं।

नौजवान उनको आधा खजाना तो दे देता है साथ में अपना आधा ताज भी दे देता है पर सेंट उसको याद दिलाते हैं कि उसने अभी अपनी सबसे अच्छी चीज़ तो बॉटी ही नहीं है – और वह है उसकी पत्नी। नौजवान अपना वायदा निभाने के लिये तैयार है। वह अपनी तलवार निकालता है और राजकुमारी के दो हिस्से करने ही वाला हो रहा होता है कि सेंट जोसेफ़ उनके सामने प्रगट हो जाते हैं उनको आशीर्वाद देते हैं और फिर गायब भी हो जाते हैं।

यह कहानी कभी कभी "ऋणी लाश" के एक रूप में भी कही सुनी जाती है।

दूसरी कहानी जियूसैप्पे पित्रे की **116** नम्बर की कहानी – "द आर्कऐन्जिल माइकल और उनका एक भक्त"।[72] इसका एक रूप गौन्ज़ैनबाक ने अपनी **76** नम्बर की कहानी "जियूसैपीनो की कहानी" में लिखा है।[73]

इस कहानी के पहले रूप में यानी पित्रे की कहानी में एक माता पिता अपने बेटे पिपीनो[74] एक राजा को बेच देते हैं ताकि वे आर्कऐन्जिल माइकल की दावत का दिन मना सकें जिनकी वह भक्ति करते थे। बच्चा महल में बड़ा होता रहता है राजकुमारी के साथ खेलता रहता है। पर जब वह बड़ा हो जाता है तो राजा उससे बचने का कोई तरीका सोचता है। वह उसको एक

---

[72] "The Archangel Michael and One of His Devotees". By Giuseppe Pitre. (Tale No 116).

[73] "The Story of Giuseppino". By Laura Gonzenbach. (Tale No 76).

[74] Pippino. Read this story in my book "Italy Ki Lok Kathayen-6" entitled "A Boat Loaded With …".

ऐसे जहाज़ को दे कर व्यापार के लिये भेज देता है जो समुद्र के लायक नहीं है। सेंट माइकल लड़के के सामने प्रगट होते हैं और उससे नमक भरवा कर उसका व्यापार करने के लिये कहते हैं।

लड़का चल देता है। बीच समुद्र में वह सड़ा हुआ जहाज़ टूटने वाला होता है तो लड़का सेंट माइकल को पुकारता है और वह आ कर उस जहाज़ को पूरा का पूरा सोने का बना देते हैं। वह अपना नमक एक ऐसे राजा को सोने के बदले में बेच आता है जिसने पहले कभी नमक चखा भी नहीं होता। और इस तरह वह बहुत धनवान हो कर अपने देश वापस लौटता है। राजा की यह योजना फेल हो जाती है।

वह उसको दोबारा वैसा ही खराब जहाज़ ले कर व्यापार के लिये भेजता है। इस बार सेंट माइकल इसको बिल्लियॉ रखवा देते हैं। एक बार फिर उसका खराब जहाज़ टूटने को होता तो सेंट माइकल उसको फिर से सोने का बना देते हैं ये बिल्लियॉ वह एक ऐसे राजा को बेच कर आता है जिसके राज्य में बहुत सारे चूहे थे। वह ये बिल्लियॉ सोने के भाव में खरीद लेता है। और इस तरह वह बहुत धनवान हो कर अपने देश वापस लौटता है। राजा की यह योजना भी फेल हो जाती है। पर इस बार वह आ कर राजा की बेटी से शादी कर लेता है।

गौन्ज़ैनबाक ने इस कहानी का जो रूप लिखा है उसमें जियूसैपीनो एक राजा का बेटा है जो दुनियॉ देखने के लिये अपना राज्य छोड़ कर बाहर चल देता है। वह एक राजा के यहॉ उसका सईस बन जाता है और बाद में उसकी बेटी से शादी कर लेता है। उसके पास बेचने के लिये नमक बिल्लियॉ और यूनीफौर्म हैं।

इसमें वह अपनी अन्तिम यात्रा से एक बहुत ही बददिमाग सेना ले कर लौटता है। वह अपने बन्दियों को जो उसके जहाज़ पर है यूनीफौर्म पहनने के लिये मजबूर करता है। इस सेना के साथ वह घर लौटता है और राजा को उसे अपनी बेटी देने के लिये मजबूर करता है। इस कहानी में सेंट जोसेफ़ वही रोल निभाते है जो जियूसैप्पै पित्रे की कहानी में सेंट माइकल निभाते हैं।

कुछ और मजेदार दंत कथाऐं केवल लौरा गौन्ज़ैनबाक के संग्रह में ही मिलती हैं। हम उनको यहाँ संक्षेप मे दे रहे हैं। उनके संग्रह की पहली कहानी नम्बर **87** है – "सेंट ओनीरिया या नीरिया की कहानी"।[75] इस कहानी में दो शिकारी रात में जंगल में खो जाते हैं। उनको वहाँ एक मकान मिलता है जिसमें रात के खाने की एक मेज लगी हुई है। उसी कमरे में आग जल रही है जिसमें बड़ी दैवीय खुशबू उड़ रही है। वे आग के पास जा कर यह जानने की कोशिश करते हैं कि ऐसी दैवीय खुशबू कहाँ से आ रही है तो वे देखते है कि वहाँ तो कोयलों के ऊपर एक दिल पड़ा हुआ है।

जब अगली सुबह वे वहाँ से जाते हैं तो उस दिल को अपने साथ ले जाते हैं। कुछ दूर चल लेने के बाद वे एक सराय में रुकते हैं। सराय के मालिक की पवित्र और धार्मिक बेटी उनकी सेवा करती है। वह उस खुशबू को सूँघती है जो उनमें से एक की जैकेट की जेब में से आ रही है जिसे उसने गर्मी की वजह से उतार कर रख दिया था। उसकी जेब में उसे एक दिल मिलता है जिसे वह ले जा कर अपने कमरे की एक मेज पर रख देती है।

एक दिन उसकी बहुत ज़ोर की इच्छा होती है कि वह उस दिल को खा ले। वह ऐसा ही करती है तो वह महसूस करती है कि उसको तो बच्चे की आशा हो गयी है। उसका पिता उसके साथ बहुत ही बेरहमी का बरताव करता है क्योंकि वह तो परिवार की इज़्ज़त पर बट्टा लगाने वाली थी। पर उसकी गौडमदर बीच में पड़ गयी।

एक रात उसने सपना देखा कि उसके सपने में एक सेंट प्रगट हुए हैं। उन्होंने उससे कहा — "मैं सेंट ओनीरिया हूँ। मैं आग में जल कर मर गया था। केवल मेरा दिल ही बचा था इसलिये मैं शायद फिर दोबारा पैदा होऊँ। यही दिल सराय के मालिक की बेटी ने खा लिया है सो वह एक दिन मुझे जन्म देगी।" जैसा कि सेंट ने कहा था वैसे ही उसको एक बच्चा पैदा हुआ और दिन पर दिन सुन्दर होता चला गया। नाना उसको बुरे तरीके से नहीं रख सका और उसकी माँ भी।

जब बच्चा पाँच साल का हो गया तो एक दिन बच्चे के नाना उसको शहर बाजार ले गये। रास्ते में वे एक ऐसी जगह से गुजरे जहाँ बहुत गन्दगी पड़ी हुई थी। उसे देख कर बच्चे ने अपने नाना से कहा — "नाना जी। काश आप इसमें आराम से लेट पाते।"

उसके बाद उन्होंने एक गरीब आदमी देखा जिसको लोग बिना ताबूत के एक लकड़ी की सीढ़ी पर रख कर दफ़न के लिये ले जा रहे थे। यह देख कर बच्चे ने यहाँ भी वैसी ही इच्छा प्रगट की कि काश उसको नाना भी वैसे ही दफ़न के लिये ले जाये जाते। इसके बाद उनको

[75] "The Story of the St Onieria or Neria". By Laura Gonzenbach. (Tale No 87).

एक बड़ा जुलूस मिला जो एक मरे हुए अमीर आदमी के पीछे जा रहा था। उसको देख कर बच्चे ने इच्छा प्रगट की उसके नाना को मरने के बाद ऐसे न ले जाया जाये।

उसका नाना इन तीनों हालात में कहे गये बच्चे की तीनों इच्छाओं पर बहुत गुस्सा था और बड़ी मुश्किल से बच्चे को पीटने की इच्छा को दबा पा रहा था क्योंकि बच्चे की मॉ यानी उसकी बेटी का गौडफादर उनके साथ था।

शहर में जब उनका काम खत्म हो गया तो वे लोग घर वापस लौटने लगे तो वे लोग उस जगह पर आये जहॉ उनको अमीर आदमी के दफ़न का बड़ा सा जुलूस मिला था। बच्चे ने अपने नाना से कहा कि वह जमीन पर कान रख कर सुने कि उसको वहॉ कितना शोर सुनायी दे रहा था। उसने वैसा ही किया तो उसने बहुत सारी कराहटों की और लोहे के मूसलों से किसी को पीटे जाने की आवाजें सुनायी पड़ रही थीं। तब बच्चे ने उसे बताया कि वे आवाजें शैतानों की थीं जो उस अमीर आदमी को उनके हाथ से पीटे जाने पर हो रही थीं।

फिर वे उस जगह पर आये जहॉ से गरीब आदमी का जनाज़ा गुजर रहा था तो वहॉ भी उसने अपने नाना से धरती पर कान लगा कर सुनने के लिये कहा तो उन्होंने सुना कि देवदूत उस गरीब आदमी की आत्मा का वहॉ बड़े ज़ोर शोर से स्वागत कर रहे थे। फिर वे वहॉ आये जहॉ वह गन्दगी पड़ी हुई थी। बच्चे ने अपने नाना से कहा कि वह उस जगह को खोदे जहॉ उसको एक बर्तन भर कर धन मिला जिसके लिये उसने उससे कहा कि वह उसे अपने पैसे से ज़्यादा अच्छी तरह से खर्च करेगा।

तब बच्चे ने बताया कि वह सेंट ओनीरिया था। उसकी मॉ ने कोई बुरा काम नहीं किया था। और कहा कि उसका नाना उससे फिर मिलेगा जब मरे हुए ज़िन्दा लोगों से बात करेंगे। उसके बाद वह स्वर्ग चला गया।

सालों बाद दो आदमी उसी सराय में ठहरे। एक आदमी ने दूसरे को मार दिया और उसकी लाश भूसे के नीचे छिपा दी जिसको दूसरे यात्रियों ने बाद में पाया। सराय के मालिक को इस कत्ल के जुर्म में पकड़ लिया गया। उसको फॉसी की सजा हो गयी। जब वह फॉसी के तख्ते पर था तभी एक सुन्दर नौजवान घोड़े पर सवार वहॉ चिल्लाता हुआ आया "माफी माफी।"

वह नौजवान वहॉ खड़े सभी लोगों को चर्च ले गया और कत्ल किये गये आदमी के ताबूत के सामने जा कर खड़ा हो गया और चिल्ला कर बोला — "उठो ओ मरे हुए। और ज़िन्दा लोगों से बात करो। हमें बताओ कि तुमको किसने मारा।"

लाश बोली — "सराय का मालिक बेकुसूर है। मेरी हत्या मेरे नीच साथी ने की थी।"

उसके बाद नौजवान सराय के मालिक को घर ले गया और वहॉ जा कर उसे बताया कि वह सेंट ओनीरिया है। उसने उनको आशीर्वाद दिया और फिर गायब हो गया।

इसकी दूसरी कहानी है नम्बर **92** – "साधु की कहानी"[76] जो भगवान के राज्य के रहस्य के बारे में है। यह कहानी लोगों में "पारनैल का साधु"[77] के नाम से मशहूर है। इसका सिसिली में कहा सुना जाने वाला रूप इस तरह से है —

"एक साधु को एक आदमी मिलता है जिसके ऊपर चोरी का झूठा इलजाम है और इसके लिये उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया। तो साधु इसका परिणाम यह निकालता है कि यह सब भगवान का ही अन्याय है जिसकी वजह से उस आदमी को यह सब सहना पड़ रहा है। सो उसने दुनियॉ में लौट जाने का विचार किया। जब वह दुनियॉ की तरफ चल दिया। रास्ते में उसे एक नौजवान मिला और दोनों साथ साथ चलने लगे।

एक खच्चर वाले ने उनको अपने खच्चर पर बिठा लिया। बदले में नौजवान खच्चर वाले के बटुए से उसका पैसा निकाल लेता है और उसे सड़क पर फेंक देता है। सराय की मालकिन उन दोनों का प्यार से स्वागत करती है और अपनी सराय में ठहराती है। लेकिन जब वे दोनों सुबह वहॉ से जाते है तो वह नौजवान सराय की मालकिन के पालने में पड़े हुए बच्चे का गला घोट कर मार देता है।

यह कर के नौजवान तुरन्त ही एक चमकता हुआ देवदूत बन जाता है और साधु से कहता है — "ओ आदमी सुनो। इतनी हिम्मत किसमें है जो भगवान के नियमों के खिलाफ बोल सके।" उसके बाद वह उसको समझाता है कि उस आदमी पर जिस पर चोरी का झूठा इलजाम लगा है उसने सालों पहले अपने पिता को यहीं मारा था। खच्चर वाले का पैसा चुराया हुआ पैसा था। इसके अलावा सराय की मालकिन का बेटा अगर ज़िन्दा रह जाता तो वह डाकू और खूनी बन जाता।"

देवदूत फिर बोला — "अब तुमने देखा कि भगवान का न्याय उतनी दूर की देखता है जितनी दूर किसी आदमी की ऑख नहीं देख सकती। इसलिये अब तुम अपनी कुटिया में लौट जाओ। वहॉ जा कर अपने भगवान को बुरा कहने के लिये माफी मॉगो भगवान तुम्हें जरूर माफ कर देंगे।" इतना कह कर देवदूत गायब हो गया और वह साधु पहाड़ पर लौट गया। वहॉ पहुॅच कर उसने भारी तपस्या की और फिर एक सेंट हो कर मर गया।

---

[76] "The Story of the Hermit". By Laura Gonzenbach. (Tale No 92).

[77] "Parnell's Hermit".

एक दंत कथा लौरा गौन्ज़ैनबाक ने लिखी है "न्यायशील जोसेफ़"[78] जो बाइबिल से ली गयी एक कहानी है और जोसेफ़ और उसके भाइयों की कहानी है और कुछ नहीं। इसके सिसिली मे कहे सुने जाने वाले रूप में जोसेफ़ के केवल तीन भाई बताये गये हैं वरना कहानी बाइबिल के जैनैसिस से बहुत मिलती जुलती है।

उसी संग्रह में एक और कहानी है — "तोबिया और तोबियोला की कहानी"[79]। यह कहानी टोबिट और टोबियास की कहानी है जो टोबिट की अपोकाइफा किताब से ली गयी है। इसके सिसिली रूप में बस इनके नाम ही बदले गये हैं।

सिसिली में कही सुनी जाने वाली और भी कई दंत कथाऐं हैं जिनके हीरो पवित्र हैं सादा नौजवान हैं और जियूफ़ा के टक्कर के हैं। एक कहानी है "गरीब लड़का"।[80] यह एक सादे से नौजवान की कहानी है जो एक पादरी से स्वर्ग का रास्ता पूछता है तो वह कहता है कि उसको बहुत ही तंग रास्ते पर चलना चाहिये। सो वह जो भी उसके सामने आया वही पहला रास्ता ले लेता है और उस पर चल कर एक कौनवैन्ट चर्च में पहुँच जाता है जहाँ कोई त्यौहार मनाया जा रहा था। वह सोचता है कि वही स्वर्ग है।

बाद में सब वहाँ से चले जात हैं बस वही एक अकेला रह जाता है। चर्च वाला उससे जाने के लिये कहता है पर वह वहीं रहने की जिद करता है और वहीं रह जाता है। वहाँ का सुपीरियर उसको पीने के लिये एक कटोरा सूप भिजवाता है जिसे वह पूजा की जगह पर रख देता है। जब वह अकेला रह जाता है तो वह क्रौस पर लटके हुए लौर्ड से बड़े विश्चास से बात करता है।

वह पूछता है — "लौर्ड आपको किसने सूली पर चढ़ाया?"

"तुम्हारे पापों ने।"

इस तरह लौर्ड उसके सब सवालों के जवाब देते हैं। वह नौजवान रोने लगता है और वहाँ यह वायदा करता है कि आगे से वह कोई पाप नहीं करेगा। फिर वह लौर्ड को क्रौस पर से नीचे उतर आने के लिये कहता है और अपने साथ खाना खाने के लिये कहता है। लौर्ड क्रौस से उतर कर नीचे आते हैं और उससे कहते हैं कि वह कौनवैन्ट के साधुओं से कहे कि जब तक वे अपनी सारी जायदाद बेच कर उसे गरीबों को दान में नहीं दे देंगे वे निश्चित रूप से नरक में जायेंगे। अगर वे ऐसा करेंगे और फिर लौर्ड के पास आ कर कन्फ़ैस करेंगे लौर्ड उनका

[78] "Joseph the Just". By Laura Gonzenbach. (Tale No 91).
[79] The Story of Tobia and Tobiola". By Laura Gonzenbach. (Tale No 89).
[80] The Poor Boy". By Giuseppe Pitre. (Tale No 112).

कन्फ़ैशन सुनेंगे और फिर उन्हें कम्यूनियन देंगे। जब यह सब खत्म हो जायेगा तब वे एक के बाद एक कर के मर जायेंगे और स्वर्ग जायेंगे।

वह बेचारा नौजवान लौर्ड का सन्देश कौनवैन्ट के सुपीरियर को देता है। सुपीरियर कौनवैन्ट की सारी जायदाद बेच देता है और फिर सब कुछ वैसा ही होता है जैसा लौर्ड ने कहा था। सब साधुओं ने वहॉ कन्फ़ैस किया फिर वे सब मर गये। बाकी लोग जो वहॉ मौजूद थे या जिन्होंने यह घटना सुनी वे सब ईसाई बन गये और फिर लौर्ड के आशीर्वाद से मर गये।

ऐसी ही एक कहानी और भी कही जाती है। यह कहानी लौरा गौन्ज़ैनबाक के संग्रह से ली गयी है और उसकी पहली कहानी है – "संत बच्चा"।[81] इस कहानी में एक सौतेली मॉ अपने एक संत बच्चे से बहुत बुरा व्यवहार करती है तो वह घर से बाहर भाग जाता है और एक कौनवैन्ट में शरण लेता है। एक दिन वह एक कोने में एक छोटा सा कौस पड़ा देखता है जिस पर धूल जमी हुई है और जाले लगे हुए हैं। वह यह भी देखता है कि उस पर बनी हुई जीसस की मूर्ति कितनी पतली सी है।

सो जब वह अपना खाना खाने बैठता है तो वह खाना जीसस के लिये भी ले कर आता है और वहॉ वह जीसस की मूर्ति को भी खाना खिलाता है। मूर्ति आराम से मुॅह खोल कर पेट भर कर खाना खाती है। जैसे जैसे कौस पर बनी मूर्ति ताकतवर होती जाती है बच्चा दुबला होता जाता है। कौनवैन्ट के सुपीरियर को जब यह पता चलता है तो वह बच्चे से कहता है कि वह लौर्ड से यह कहे कि लौर्ड उसे और बच्चे दोनों को अपने साथ खाना खाने के लिये बुलाये। अगले दिन मास के बाद दोनों अचानक मर जाते हैं।

एक और कहानी में जिसे लौरा गौन्ज़ैनबाक ने लिखा है[82] एक नौजवान लौर्ड की कौस पर लगी हुई मूर्ति से बात करता है और बहुत सारे लोग जो सवाल उससे पूछते हैं उनके उस मूर्ति से जवाब पाता है। यह नौजवान भी कहानी खत्म होने पर अचानक मर जाता है।

---

[81] Laura Gonzenbach. "The Pious Child". (Tale No 1).

[82] Laura Gonzenbach. "Of the Pious Youth Who Went to Rome". (Tale No 47)

62 बेकर का नौकर[83]

पिछली दंत कथा "गलीशा के सेंट जेम्स" स्वाभाविक रूप से एक और दंत कथा को जन्म देती है जिसमें दूसरी दुनियॉ से सम्बन्ध जोड़ने का मामला कुछ वैसा सा ही दिखाया गया है जैसा कि इस दुनियॉ के लोगों को सामान्य रूप से दिखाया जाता है। यह दंत कथा केवल सिसिली में ही पायी जाती है पर आश्चर्य की बात यह है कि यह दूसरे रूपों में यूरोप के दूसरे देशों में तो पायी जाती है पर इटली में कहीं और नहीं पायी जाती। यह कथा यहॉ दी जाती है —

एक बार की बात है कि एक बेकर था। वह रोज एक औंस कीमत की डबलरोटी एक घोड़े पर लादता जो उसकी दूकान पर आता था।

एक दिन उसने सोचा कि "मैं यह एक औंस कीमत की डबलरोटी रोज इस घोड़े को देता हूॅ पर यह मुझे इसका कोई हिसाब नहीं देता।

एक दिन उसने अपने नौकर को बुलाया और उससे कहा — "विनसैंज़ो। कल यह घोड़ा आयेगा और मैं इसको डबलरोटी दूॅगा। तुम इसका पीछा करना कि यह कहॉ कहॉ जाता है।"

अगले दिन घोड़ा आया। बेकर ने उसे एक औंस कीमत की डबलरोटी दी। एक टुकड़ा उसने विनसैंज़ो को भी दिया। दोनों चले गये।

[83] The Baker's Apprentice. Tale No 62.

कुछ देर बाद ही घोड़ा एक दूध की नदी के पास आ गया। वहॉ आ कर उसने डबलरोटी खानी और दूध पीना शुरू कर दिया। पर फिर वह घोड़े को न पकड़ सका। वह वापस अपने मालिक के पास पहुँचा तो उसके मालिक ने देखा कि उसका उद्देश्य तो सफल ही नहीं हुआ था।

उसने अपने नौकर से कहा — "देखो घोड़ा कल फिर आयेगा। अगर तुम मुझे कल यह नहीं बता सके कि यह घोड़ा जाता कहॉ है तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा।"

अगले दिन नौकर ने फिर उसका पीछा किया तो अबकी बार वह एक शराब की नदी के पास आ गया। वहॉ वह फिर अपनी डबलरोटी खाने और शराब पीने बैठ गया तो घोड़ा फिर उसकी ऑखों से आझल हो गया और वह घोड़े को फिर न पकड़ सका। वह फिर बिना घोड़ा पकड़े निराश सा अपने घर वापस लौट आया।

उसका मालिक बोला — "सुनो। पहली बार की गलती माफ कर दी जाती है। दूसरी बार की गलती पर चेतावनी दी जाती है पर तीसरी बार की गलती पर उसकी पिटायी होती है। अब अगर कल तुम उस घोड़े का पीछा नहीं कर सके तो मैं तुम्हारी बहुत पिटायी करूँगा और तुम्हें घर वापस भेज दूँगा।"

अब बेचारा विनसैंज़ो क्या करे। अगले दिन उसने फिर से घोड़े का पीछा किया। अबकी बार उसने अपनी ऑखें खुली रखी थीं। इस बार वह एक तेल की नदी के पास आ गया।

नौकर ने सोचा "अब मैं क्या करूँ। यह घोड़ा तो अब मेरी ऑखों से ओझल हो जायेगा।" सो उसने घोड़े की लगाम अपनी कमर से बॉध ली और अपनी रोटी तेल के साथ खाने लगा।

घोड़े ने उसे अपनी तरफ खींचा भी पर विनसैंज़ो बोला — "जब मैं अपनी रोटी खत्म कर लूँगा तब मैं आ जाऊँगा।"

सो जब उसने अपनी डबलरोटी खत्म कर ली तो वह फिर से घोड़े के पीछे पीछे चल दिया। कुछ समय बाद वह जानवरों के एक फार्म पर आ गया जहॉ घास बहुत लम्बी थी और घनी थी पर जानवर इतने पतले दुबले और कमजोर थे कि मुश्किल से अपने पैरों पर खड़े हो पा रहे थे। विनसैंज़ो इतनी लम्बी और घनी घास और इतने कमजोर जानवर देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

कुछ देर बाद वह एक और फार्म पर आया जहॉ उसने देखा कि घास सूखी हुई सी और बहुत ही छोटी थी पर वहॉ के जानवर इतने मोटे थे कि वैसे जानवर उसने पहले कभी देखे नहीं थे।

उसने अपने मन में सोचा "ज़रा देखो तो। जहॉ घास लम्बी और घनी थी वहॉ जानवर कमजोर थे और जहॉ की घास सूखी हुई और छोटी छोटी है वहॉ के जानवर कितने मोटे हो रहे हैं।"

घोड़ा चलता रहा और विनसैंज़ो उसके पीछे पीछे चलता रहा। कुछ समय बाद विनसैंज़ो को एक सूअरी[84] मिली। उसकी पूँछ बहुत

[84] Translated for the word "Sow" – pronounced as "now" as a noun

बड़ी बड़ी गॉठों से भरी हुई थी। विनसैंज़ो ने सोचा कि "इसकी पूँछ पर इतनी सारी गॉठें क्यों हैं।"

कुछ और आगे चलने पर उसे एक पानी भरी नॉद दिखायी दी जहॉ एक मेंढक रोटी के एक टुकड़े को उठाने की कोशिश कर रहा था पर उठा नहीं पा रहा था।

विनसैन्ज़ो और आगे चला तो एक बहुत बड़े फाटक के पास पहुँचा। घोड़े ने अपने सिर से उस फाटक पर खटखटाया तो एक सुन्दर स्त्री ने दरवाजा खोला। उसने बताया कि वह मडोना[85] थी।

जब उसने एक नौजवान को देखा तो उसने पूछा — "तुम यहॉ क्यों आये हो?"

विनसैन्ज़ो बोला — "यह घोड़ा मेरे मालिक के पास रोज एक औंस कीमत की डबलरोटी लेने आता है पर मेरे मालिक को यह पता नहीं चलता कि यह उस डबलरोटी का क्या करता है।"

स्त्री बोली — ठीक है। आओ। मैं तुम्हें बताती हूँ कि वह उसे कहॉ ले जाता है।"

कह कर वह उसे अन्दर ले गयी और परगेटरी[86] से सारी आत्माओं को बुलाया — "मेरे बच्चों यहॉ आओ।"

[85] Madonna is the name of Mary – Jesus' mother.

[86] Purgatory is the place in Catholic Christianity where the souls stay in the state of suffering where the souls of sinners wait for their trial before going to Heaven.

जब आत्माऐं वहॉ आ गयीं तो उसने सबको किसी को बहुत थोड़ी सी किसी को थोड़ी ज़्यादा सी और किसी को और ज़्यादा सी डबलरोटी दी। तो वह डबलरोटी तो बहुत जल्दी ही खत्म हो गयी।

डबलरोटी खत्म हो जाने के बाद उस स्त्री ने विनसैन्ज़ो से कहा — "तुमने रास्ते में कुछ नहीं देखा?"

"हॉ देखा। पहले दिन जब मेरे मालिक ने मुझे इस घोड़े के पीछे भेजा तो मैंने एक दूध की नदी देखी।"

स्त्री बोली — "वह वह दूध था जो मैंने दिया था।"

"दूसरे दिन मैंने एक शराब की नदी देखी।"

स्त्री बोली — "वह वह शराब थी जिससे मेरे बेटे को पवित्र किया गया था।"

"तीसरे दिन मैंने एक तेल की नदी देखी।"

स्त्री बोली — "यह वह तेल था जो मुझसे और मेरे बेटे से मॉगा गया था। तीसरे दिन तुमने और क्या देखा?"

विनसैन्ज़ो बोला — "मैंने जानवरों का एक फार्म देखा जिसमें बहुत लम्बी और घनी घास थी पर वहॉ के जानवर बहुत ही पतले दुबले थे। उसके बाद मैंने एक और फार्म देखा जिसकी घास बहुत ही छोटी और पतली थी पर वहॉ के जानवर बहुत ही तन्दुरुस्त थे।"

स्त्री बोली — "वे वे लोग थे जो अमीर थे और जो खूब अमीरी में रहते हैं। और वे चाहे जितना खायें पर वह खाना उनका भला

नहीं करता। और जो मोटे वाले जानवर थे जिनके पास खाने के लिये कोई घास नहीं थी उनकी मेरा बेटा सहायता करता है और मोटा करता है। और तुमने क्या देखा?"

विनसैन्ज़ो बोला — "मैंने एक सूअरी देखी जिसकी पूँछ में बहुत सारी गाँठें पड़ी हुई थीं।"

स्त्री बोली — "ये वे लोग हैं जो माला फेरते रहते है और मेरी या मेरे बेटे की प्रार्थना नहीं करते तो मेरा बेटा उनमें गाँठें बना देता है।"

विनसैन्ज़ो बोला — "इसके बाद मैंने एक पानी की नाँद देखी जहाँ एक मेंढक रोटी का टुकड़ा लेना चाहता था पर ले नहीं पा रहा था।"

स्त्री बोली — "यह एक आदमी था जिसने एक स्त्री से थोड़ी सी रोटी माँगी तो उसने उसके हाथ पर इतनी ज़ोर से मारा जिससे उसके हाथ पर रखी रोटी नीचे गिर गयी। और मेरे बेटे तुमने और क्या क्या देखा।"

"और तो कुछ नहीं।"

"तो आओ मेरे साथ मैं तुम्हें कुछ और दिखाती हूँ।"

कह कर वह उसका हाथ पकड़ कर नरक की तरफ ले गयी। जब उस बेचारे नौजवान ने जंजीरों के खड़कने की आवाज सुनी और अँधेरा दिखायी दिया तो वह तो मरने वाला सा हो गया और वहाँ से जाना चाहता था।

स्त्री बोली — "देखो। ये जो रो रहे हैं और जंजीरों से बँधे हैं और अँधेरे में है वे सब दुनियावी पाप किये हुए हैं। आओ अब मैं तुम्हें परगेटरी लिये चलती हूँ।"

वहाँ उन्होंने कुछ नहीं सुना और वहाँ अँधेरा भी इतना था कि वहाँ उन्हें कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। विनसैन्ज़ो अब वहाँ से जाना चाहता था क्योंकि वह दुख की वजह से बहुत खिन्न हो गया था।

स्त्री बोली — "आओ अब मैं तुम्हें "होली फ़ादर्स" के चर्च लिये चलती हूँ। तुम इसे देख रहो हो न मेरे बेटे। यह होली फ़ादर्स का चर्च है जो पहले तो भरा हुआ था पर अब बिकुल्ल खाली है। आओ अब मैं तुम्हें लिम्बो लिये चलती हूँ। तुम ये छोटी छोटी चीज़ें देख रहे हो न। ये वे हैं जो बिना बैप्टाइज़ेशन के मर गये थे।"

स्त्री विनसैन्ज़ो को स्वर्ग भी दिखाना चाहती थी पर वह इतना घबरा गया था इसलिये उसने उससे एक खिड़की में से देखने के लिये कहा — "तुम यह महल देख रहो हो न। यहाँ ये तीन सीट हैं – एक तुम्हारे लिये दूसरी तुम्हारे मालिक के लिये और तीसरी तुम्हारी मालकिन के लिये।"

इसके बाद वह उसको फाटक की तरफ ले चली। अब वहाँ घोड़ा नहीं था। विनसैन्ज़ो बोला — "अब मैं अपने घर का रास्ता कैसे ढूँढूँगा। मैं घोड़े के पैरों के निशान देखते देखते चला जाऊँगा और अपने घर पहुँच जाऊँगा।"

स्त्री बोली — "अच्छा अब अपनी ऑखें बन्द करो।"

विनसैन्ज़ो ने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और फिर खोलीं तो वह तो अपने मालिक के पिछले दरवाजे पर खड़ा था। जब वह अन्दर घुसा तो उसने जा कर अपने मालिक और मालकिन को वह सब बताया जो वह देख कर आया था।

जब उसने अपनी कहानी सुना ली तो तीनों मर गये और स्वर्ग चले गये।

इटली में सिसिली के बाहर इस कहानी जैसी कोई दूसरी कहानी नहीं है। वैसे यह कहानी यूरोप के दूसरे देशों में पायी जाती है।

ऐसी ही एक और कहानी सिसिली में

इस कहानी का दूसरा सिसिली का रूप लौरा गौन्ज़ैनबाक ने लिखा है[87] जिसका नाम है "स्पाडोनिया की कहानी"। इस कहानी में स्पाडोनिया एक राजा का बेटा है जो रोज कुछ डबलरोटी बेक करता है और लौर्ड के दिये हुए गधे पर लाद कर उसे परगेटरी में रह रही आत्माओं को भेजता है। लौर्ड ने यह गधा उसे इसी लिये दिया हुआ है।

बाद में स्पाडोनिया राजा बन जाता है तो एक दिन वह अपने एक नौकर पैपै को इस गधे के पीछे यह देखने के लिये भेजता है कि वह यह जा कर देखे कि यह गधा डबलरोटी ले कर कहॉ जाता है। पहले तो पैपै एक साफ पानी की नदी पार करता है फिर वह एक दूध की नदी पार करता है और फिर वह एक खून की नदी पार करता है। उसके बाद उसको एक बहुत ही हरे भरे मैदान में पतले दुबले बैल नजर आते हैं और उसके बाद सूखे मैदान में बहुत मोटे ताजे बैल नजर आते हैं।

इसके बाद उसको बहुत लम्बे और छोटे पेड़ एक साथ ही उगे हुए नजर आते हैं। उनमें एक नौजवान अपनी चमकीली कुल्हाड़ी से एक बड़ा पेड़ एक ही वार में काट देता है और फिर एक छोटा पेड़ एक ही वार में काट देता है। फिर वह गधे के पीछे पीछे एक दरवाजे में से निकला तो वहॉ सेंट जोसेफ़ सेंट पीटर और दूसरे सारे सेंटों को देखा और इन सबके साथ देखा पिता भगवान को। पैपै ने दूर और दूसरे सेंटों को भी देखा। वहॉ स्पाडोनिया के माता पिता भी थे। अन्त में वह एक ऐसी जगह आया जहॉ लौर्ड और उनकी मॉ एक सिंहासन पर बैठे हुए थे।

लौर्ड ने उससे कहा कि — "स्पाडोनिया को सिक्यूला से शादी कर लेनी चाहिये[88] और एक सराय खोल लेनी चाहिये जिसमें कोई भी बिना कोई कीमत दिये हुए ठहर सके और खा पी सके।" फिर लौर्ड ने उसको उस सबके बारे में समझाया जो उसने वहॉ देखा था। उन्होंने कहा "पानी की नदी अच्छे कामों की है जो परगेटरी की दुखी आत्माओं को सहायता करती है और उन्हें ताजा करती है। दूध की नदी ने क्राइस्ट का पोषण किया था और खून की नदी वह है जो उसने पापियों के लिये बहाया था। पतले दुबले जानवर उसके साथी थे और मोटे वाले वे थे जो भगवान में विश्वास रखते थे। जो नौजवान पेड़ काट रहे थे वे मौत थे।

---

[87] Laura Gonzenbach. "The Story of Spadonia". (Tale No 88)

[88] Spadonia must marry Secula and open an inn.

पैपै यह सुन कर वहॉ से लौट आया और अपने मास्टर को आ कर यह सब बताया तो स्पाडोनिया सिक्यूला की खोज में निकल पड़ा। खोजते खोजते उसको इस नाम की एक गरीब लड़की मिल गयी। वह उससे शादी कर लेता है और जैसा कि काइस्ट ने उससे कहा था वह वैसी ही एक सराय खोल लेता है।

कुछ समय बाद लौर्ड और उसके अपोसिल्स उस सराय में आते हैं। राजा और उसकी पत्नी उनकी सेवा करते हैं और बहुत ध्यान और प्यार से उनकी देखभाल करते हैं। अगले दिन जब वे चले जाते हैं तब स्पाडोनिया और उसकी पत्नी को पता चलता है कि उनके वे मेहमान कौन थे। तूफान के होते हुए भी वे उनके पीछे पीछे दौड़ते हैं। उनके पास पहुॅचने पर वे उनसे अपने पापों की माफी मॉगते हैं और जो उनके सगे सम्बन्धी हैं उनके लिये हमेशा के लिये खुशी मॉगते हैं। लौर्ड उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं और उनको क्रिसमस पर तैयार रहने के लिये कहते हैं जब वे उनको लेने आयेंगे।

पति पत्नी घर आते हैं अपनी सारी धन सम्पत्ति गरीबों में बॉट देते हैं। क्रिसमस के दिन वे कन्फ़ैस करते हैं कम्यूनियन लेते हैं और एक दूसरे के पास बैठे बैठे शान्ति से मर जाते हैं। सिक्यूला के बूढ़े माता पिता भी वहीं बैठे हुए थे वे भी मर जाते हैं।

63 औकेशन[89]

इस तरह की कहानियों में जो अब हम यहॉ लिखने जा रहे हैं और इटली में जो सबसे ज़्यादा मशहूर है वह अपने फ़्रैन्च नाम से ज़्यादा मशहूर है[90]। 1779 में यह कहानी चैपबुक[91] रूप में बहुत ज़्यादा प्रचलन में थी। तबसे यह 15 संस्करण में प्रकाशित हो चुकी है। बाद के लोक कथा लिखने वालों ने इसको इटली से निकला हुआ बताया है और उनका कहना है किसी दिन इसका मूल रूप अवश्य ही सामने आयेगा। हमारे पास आजकल इसके कई रूप हैं।

इन रूपों को हम दो तरह की कथाओं में बॉट सकते हैं – पहला तो स्वतन्त्र रूप यानी जो अकेले इसी घटना के ऊपर आधारित हैं, और दूसरा वह रूप जो किसी बड़ी कहानी का हिस्सा हैं। दूसरी वाली तरह की जो कथाऐं हैं वे साधारणतया हमारे लौर्ड की धरती पर यात्राओं से सम्बन्धित हैं जैसे "द मास्टर थीफ़" और "ब्रदर लुस्टिग" जर्मनी में; "बैप्पो पिपैटा" वेनिस में मशहूर हैं। [92] सिसिली में कहे सुने जाने वाले रूपों को हम पहले बतायेंगे। जियूसैप्पै पित्रे के लिखे हुए दो रूप हम यहॉ दे रहे हैं।[93]

एक बार की बात है कि एक माता पिता थे जिनके एक छोटा बेटा था। उसके माता पिता मर गये तो बच्चा सड़क पर पड़ा रह गया। एक पड़ोसी को उस पर दया आ गयी तो वह उसको अपने घर ले आया। बच्चा जल्दी जल्दी बढ़ने लगा।

जब वह बड़ा हो गया तो जिस आदमी ने उसे पाला पोसा था वह उससे बोला — "ओ औकेशन। अब तुम आदमी हो गये हो तो

---

[89] Occasion. Tale No 63.

[90] Its French title is "Bonhomme Misere".

[91] Chapbook – chapbook is a single page folded three times or four times, or alternatively about 40-page soft bound book.

[92] "The Master Thief" and "Brother Lustig" in Germany and "Beppo Pipetta" in Venice.

[93] Giuseppe Pitre's two versions. (Tale No 124 and 125).

अब तुम खुद ही अपने आपको सँभालने के बारे में क्यों नहीं सोचते और हमें अपनी इस देखभाल से छुटकारा देते।"

यह सुन कर लड़के ने एक गठरी बाँधी और वहाँ से चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा जब तक कि उसके कपड़े नहीं फट गये और वह भूख से निढाल नहीं हो गया।

एक दिन उसने एक सराय देखी तो वह उसके अन्दर घुस गया और सराय के मालिक से पूछा — "क्या आप मुझे नौकरी देंगे? बदले में मुझे आपसे केवल रोटी चाहिये।"

सराय के मालिक ने अपनी पत्नी से पूछा — "रोज़ैला क्या बोलती हो। हमारे कोई बच्चा नहीं है तो हम इस बच्चे को अपने पास रख लेते हैं।"

"हाँ यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

बच्चा बहुत होशियार था। उससे जो कुछ कहा जाता था वह उसको उसी तरह से बहुत जल्दी कर देता था। आखिर उसके मालिक और मालकिन जो अब उसको अपने बेटे की तरह प्यार करने लगे थे जज के पास गये और उसको गोद ले लिया।

समय गुजरता रहा। समय के साथ सराय का मालिक और उसकी पत्नी मर गये और अपना सब कुछ अपने बेटे को दे गये। औकेशन ने जब देखा कि उसके पास इतना सब कुछ है तो उसने अपनी सराय के आगे नोटिस लगाया कि "जो कोई औकेशन की सराय में आ कर ठहरेगा उसे खाने का कोई पैसा नहीं देना पड़ेगा।"

तुम लोग सोच सकते हो कि वहॉ जो जाते होंगे उन्हें कैसा लगता होगा।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि लौर्ड और उनके अपोसिल्स उधर से गुजर रहे थे तो सेंट थोमस ने यह नोटिस पढ़ा तो बोला — "मैं जब तक अपनी ऑखों से न देख लूॅ अपने हाथ से छू कर न देख लूॅ तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा। तो चलो चल कर देखते हैं।"

सो वे उस सराय में गये। वहॉ जा कर उन्होंने खूब खाया और खुब पिया। औकेशन ने उनको बड़े अच्छे तरह से रखा। वहॉ से जाने से पहले सेंट थोमस ने औकेशन से कहा — "तुम मालिक से कुछ मॉग क्यों नहीं लेते?"

यह सुन कर औकेशन ने कहा — "मास्टर। मेरे दरवाजे के सामने एक अंजीर का पेड़ है। बच्चे मुझे इस पेड़ की अंजीरें नहीं खाने देते।

यहॉ से जो कोई भी गुजरता है वह इस पेड़ पर चढ़ जाता है और इसकी अंजीरें तोड़ लेता है। आप ऐसा कुछ कीजिये कि अब से जो कोई इस पेड़ पर चढ़े वह इसी पेड़ से चिपका रहे जब तक मैं उसे नीचे उतरने की इजाज़त न दूॅ।"

लौर्ड ने उसकी इच्छा पूरी की और पेड़ को आशीर्वाद दिया और चले गये। अब तो बहुत बढ़िया हो गया। जो पहला उस पेड़ पर चढ़ा वह उससे इतनी ज़ोर से चिपक गया कि हिल भी न सका।

एक दूसरा आया तो उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। और फिर ऐसा ही होता रहा। जो कोई भी उस पेड़ पर चढ़ता उसका या तो हाथ चिपक जाता या पैर।

जब औकेशन ने यह देखा तो पहले तो उसने सबको बहुत डॉटा, छुड़ाया और उन्हें भगा दिया। उसके बाद से बच्चे बहुत डर गये और फिर किसी ने भी उस अंजीर के पेड़ को नहीं छुआ।

सालों गुजर गये। अब औकेशन का पैसा खत्म होने को आ रहा था सो उसने एक बढ़ई को बुलवाया और उससे उस अंजीर के पेड़ को काटने के लिये कहा और उससे उसकी एक बहुत बड़ी बोतल बनाने के लिये कहा जिसमें वह जिसको चाहता उसी को बन्द कर सकता था।

बढ़ई ने पेड़ काट कर उसकी एक बोतल बना दी। अब यह बोतल लौर्ड के वरदान की वजह से यह गुण रखती थी कि औकेशन जिस किसी को इसमें बन्द करता तो वह उसमें से बाहर नहीं निकल सकता था।

समय गुजरता गया। औकेशन काफी बूढ़ा हो गया था सो एक दिन मौत उसको लेने आ गयी।

औकेशन बोला — "मैं आपकी सेवा में हूॅ। मैं अभी आपके साथ चलता हूॅ पर पहले आप मेरे ऊपर एक कृपा कर दें। मेरे पास यह एक शराब की बोतल है और इसमें एक मक्खी गिर गयी है

और मैं इसमें से शराब पीना नहीं चाहता। ज़रा आप इसमें अन्दर घुस कर वह मक्खी निकाल दें तब मैं आपके साथ चलता हूँ।"

बेवकूफ मौत उस बोतल के अन्दर घुस गयी। जैसे ही वह बोतल के अन्दर घुसी तो औकेशन ने उस पर डाट लगा कर उसे बन्द कर दिया और यह कहते हुए अपने थैले में डाल लिया कि "अब तुम थोड़ी देर मेरे पास रहो।"

अब मौत तो ओकेशन के पास बन्द थी सो धरती पर कोई नहीं मर रहा था। जहाँ देखो वहीं लम्बी लम्बी दाढ़ी वाले बूढ़े लोग दिखायी दे रहे थे। यह भी एक देखने के लायक दृश्य था।

यह दृश्य अपोसिल्स ने भी देखा तो वे इस बात को ले कर कई बार लौर्ड के पास गये सो आखिर लौर्ड को ओकेशन से मिलने के लिये आना पड़ा।

उन्होंने उससे कहा — "यह सब क्या है। यहाँ तुमने मौत को कितने सालों से बन्द कर रखा है उधर लोग बिना मरे बुढ़ापे से परेशान हैं। किसी को मौत नहीं आ रही।"

औकेशन बोला — "मास्टर। क्या आप चाहते हैं कि मैं मौत को छोड़ दूँ। अगर आप मुझे स्वर्ग में जगह दें तो मैं मौत को छोड़ दूँगा।"

लौर्ड चिन्ता में पड़ गये कि वह अब क्या करें। अगर मैं इसका कहा नहीं करता हूँ तो यह मुझे शान्ति से जीने नहीं देगा। सो उन्होंने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

यह सुन कर औकेशन ने मौत को छोड़ दिया। औकेशन को कुछ साल के लिये और ज़िन्दा छोड़ दिया गया। उसके बाद मौत आ कर उसको ले गयी।

इसलिये कहा जाता है कि "औकेशन के बिना मौत नहीं है।"

64 भाई जियोवानोने[94]

एक बार की बात है कि कैसिलटरमिनी के एक कौनवैन्ट[95] में बहुत सारे साधु रहते थे। उनमें से एक साधु का नाम भाई जियोवानोने था।

जिस समय लौर्ड अपने अपोसिल्स के साथ दुनियॉ में घूम रहे थे तो एक दिन वे उस कौनवैन्ट में भी आये। सारे साधुओं ने उनसे अपनी अपनी आत्माओं को माफ कर देने की प्रार्थना की। पर भाई जियोवानोने ने उनसे कुछ नहीं मॉगा।

तो सेंट पीटर ने उससे पूछा — "क्यों भाई। दूसरों की तरह से तुमने भी लौर्ड से अपनी आत्मा के लिये माफी क्यों नहीं मॉग ली।"

उसने जवाब दिया — "मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं है।"

सेंट पीटर बोले — "ठीक है। जब तुम स्वर्ग आओगे तब तुमसे बात करेंगे।"

जब मास्टर वहॉ से चले गये और काफी दूर चले गये तब भाई जियोवानोने रो कर कहने लगा — "रुक जाइये मास्टर रुक जाइये। मुझ पर एक कृपा करते जाइये। मुझे बस इतना देते जाइये कि मैं जिस किसी को कहूॅ वह मेरे थैले में आ कर बन्द हो जाये तो वह

[94] Brother Giovannone. Tale No 63.

[95] Convent of Castletermini

मेरे थैले में आ कर बन्द हो जाये और जब तक उसे मैं न निकालूँ वह उसमें से बाहर न निकल पाये।"

मास्टर वहीं से बोले — "तुम्हारी इच्छा पूरी की जाती है।"

भाई जियोवानोने बूढ़ा था। एक दिन उसकी मौत आयी और उससे बोली — "भाई जियोवानोने अब तुम्हारी ज़िन्दगी के केवल तीन घंटे ही बाकी बचे हैं।

भाई जियोवानोने ने कहा — "जब तुम मेरे लिये आओ तो उससे आधे घंटे पहले मुझे जरूर बता देना।"

कुछ देर बाद मौत फिर आयी और आ कर बोली — "तुम तो एक मरे हुए आदमी हो।"

भाई जियोवानोने ने जवाब दिया — "भाई जियोवानोने के नाम पर ओ मौत मेरे थैले में आजा।"

उसके बाद भाई जियोवानोने अपने थैले को एक बेकर के पास ले गये और उससे कहा कि वह उसे चिमनी में टॉग दे और तब तक उसे न खोले जब तक मैं इसे लेने न आऊँ।

इस घटना के चालीस साल हो गये वहॉ कोई नहीं मरा। तब कहीं जा कर जियोवानोने ने मौत को छोड़ा ताकि वह मर सके क्योंकि अब वह इतना बूढ़ा हो गया था कि कुछ भी नहीं कर सकता था।

जैसे ही मौत आजाद हुई उसने सबसे पहले भाई जियोवानोने को ही मारा। उसके बाद ही मौत ने उन सबको मारा जिनको उसने **40** साल से नहीं मारा था।

जब भाई जियोवानोने मर गया तो वह स्वर्ग गया और उसके दरवाजे पर दस्तक दी तो सेंट पीटर ने अन्दर से कहा — "तुम्हारे लिये यहॉ कोई जगह नहीं है।"

भाई जियोवानोने ने पूछा — "तो फिर मैं कहॉ जाऊॅ।"

सेंट पीटर बोले — "परगेटरी में।"

सो वह परगेटरी गया और वहॉ जा कर उसने परगेटरी का दरवाजा खटखटाया तो परगेटरी वालों ने कहा — "यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।"

"तो फिर में कहॉ जाऊॅ।"

"तुम नरक जाओ।"

भाई जियोवानोने नरक पहुॅचा और वहॉ नरक का दरवाजा खटखटाया तो लूसीफ़र[96] निकला और पूछा — "कौन है?"

"मैं भाई जियोवानोने।"

तब लूसीफ़र ने अपने शैतानों को बुलाया और उनसे कहा — "तुम गदा लो तुम हथौड़ा लो तुम चिमटा[97] लो।"

---

[96] Lucifer – another name of Satan.

[97] Translated for the word "Tongs". See its picture above.

तो भाई जियोवानोने बोला — "इन सब हथियारों का आप क्या करेंगे।"

"इनसे हम तुम्हें मारेंगे।"

भाई जियोवानोने बोला — "भाई जियोवानोने के नाम पर तुम सारे शैतान मेरे थैले में आ जाओ।" बस लूसीफ़र और सारे शैतान भाई जियोवानोने के थैले में आ कर गिर गये। उसने वह थैला अपने कन्धे पर डाला और उसको एक लोहार के पास ले गया। वह लोहार कुल मिला कर नौ आदमी काम करते थे – आठ उसके नौकर और एक वह खुद।"

भाई जियोवानोने ने उससे पूछा — "इस थैले को आठ दिन तक दिन रात पीटने का तुम क्या लोगे।"

दोनों में **28** औंस पर समझौता हो गया। वे उस थैले को दिन रात मारते रहे जब तक कि उसके अन्दर रखी हुई चीज़ पाउडर नहीं बन गयी। इस बीच भाई जियोवानोने भी वहीं बैठा रहा।

लोहारों ने आखिरी दिन कहा — "ये कैसे शैतान थे कि हम ठीक से इनका पाउडर भी नहीं बना सके।"

भाई जियोवानोने बोला — "ये वास्तव में शैतान थे। इनको और ज़ोर से मारो।"

लोहार ने उस थैले को कुछ देर और मारा और एक सपाट जगह पर बिखेर दिया। वे शैतान इतने ज़्यादा घायल हो चुके थे कि बड़ी मुश्किल से अपने आपको नरक तक घसीट कर ले जा सके।

उाके बाद भाई जियोवानोने फिर से स्वर्ग गया और वहॉ का दरवाजा खटखटाया

"बाहर कौन है।"

"भाई जियोवानोने।"

"यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।"

"पीटर अगर तुम मुझे अन्दर नहीं घुसने दोगे तो मैं तुम्हें गंजा कहूॅगा।"

पीटर बोले — "अब तुमने तो मुझे पहले ही गंजा कह दिया तो अब तो तुम बिल्कुल ही अन्दर नहीं घुस सकते।"

भाई जियोवानोने बोला — "तुमने क्या सोचा कि मैं तुम्हारे साथ समझौता कर लूॅगा? नहीं कभी नहीं।"

कह कर वह स्वर्ग के दरवाजे के पास खड़ा हो गया और उन सब आत्माओं से जो स्वर्ग में अन्दर जाने के लिये खड़ी थीं बोला — "भाई जियोवानोने के नाम पर ओ सारी आत्माओं मेरे थैले में आ जाओ।"

बस अब क्या था सारी आत्माऐं भाई जियोवानोने के थैले में बन्द हो गयी थीं। इस तरह कोई आत्मा स्वर्ग में नहीं गयी। एक दिन पीटर ने मास्टर से पूछा कि कोई आत्मा स्वर्ग में क्यों नहीं आ रही।

लौर्ड बोले — "क्योंकि दरवाजे के बाहर भाई जियोवानोने खड़ा है और उसने सारी आत्माओं को अपने थैले में बन्द कर रखा है।"

पीटर ने पूछा — "तो फिर अब हम क्या करें।"

लौर्ड बोले — "देखो अगर तुम उसका थैला उससे ले सकते हो तो। इससे सारी आत्माऐं एक साथ स्वर्ग में आ जायेंगी।"

भाई जियोवानोने दरवाजे के बाहर खड़ा खड़ा यह सब बातचीत सुन रहा था। उसने क्या किया? उसने कहा "मैं भी अपने थैले में पहुँच जाऊँ।" एक पल में ही वह खुद भी अपने थैले में था।

उधर जब पीटर लौर्ड से बात कर के स्वर्ग के दरवाजे पर आया तो उसको भाई जियोवानोने तो कहीं दिखायी नहीं दिया हॉ एक थैला जरूर दरवाजे पर रखा हुआ था। पीटर को यही तो चाहिये था सो बस उसने वह थैला उठाया स्वर्ग का दरवाजा बन्द किया और अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर उसने थैला खोला तो पहली आत्मा जो थैले में से निकली वह भाई जियोवानोने की आत्मा थी। उसने बाहर निकलते ही पीटर से झगड़ना शुरू कर दिया क्योंकि सेंट पीटर उसको बाहर छोड़ना चाहता था और वह बाहर नहीं जाना चाहता था।

लौर्ड बोले — "एक बार जब कोई जीसस के घर में घुस आता है तो फिर वह वहॉ से बाहर कभी नहीं जाता।"

ऐसी ही दो दंत कथाऐं रोमन दंत कथाओं में भी मिलती हैं जो मिस बस्क के संग्रह में हैं। पहली दंत कथा में एक सराय का मालिक दो इच्छाऐं प्रगट करता है – एक तो ताश में हमेशा जीतने की इच्छा प्रगट करता है और दूसरे जो कोई उसके अंजीर के पेड़ पर चढ़े वह वहीं पर रह जाये ऐसी इच्छा प्रगट करता है। जब मौत उसको लेने आती है तो वह उससे कुछ अंजीर तोड़ने के लिये कहता है। जब मौत पेड़ पर चढ़ जाती है तो सराय का मालिक उसको वहॉ से उतारने के लिये मना कर देता है जब तक मौत उसे **400** साल की ज़िन्दगी नहीं देती सो मौत को उसको **400** साल की ज़िन्दगी देने पर राजी होना पड़ता है। पर जब वह **400** साल बाद आती है तो सराय के मालिक को चुपचाप उसके साथ जाना भी पड़ता है।

वे नरक के सामने से गुजरते हैं तो सराय का मालिक शैतान के साथ नयी आयी हुई आत्माओं को दॉव पर लगा कर ताश खेलने की इजाज़त मॉगता है। वहॉ वह जीत जाता है और उन सब आत्माओं को अपने साथ स्वर्ग ले जाता है पर सेंट पीटर उस "भीड़" को अन्दर लाने के लिये मना करता है। तब जीसस काइस्ट कहते हैं कि सराय के मालिक का आना तो ठीक है पर दूसरों से हमारा कोई मतलब नहीं।

इस पर सराय का मालिक कहता है कि जब जीसस काइट कई लोगों को ले कर उसकी सराय में आये थे तो उसने तो कोई अड़ंगा नहीं लगाया था। जीसस काइस्ट बोले — "ठीक है ठीक है। तुम ठीक कह रहे हो। सबको अन्दर आने दो।"

दूसरी दंत कथा में एक पादरी प्रेत ओलीविओ[98] अपनी मेहमानदारी के बदले में लौर्ड से **100** साल की उम्र पाता है और जब मौत उसको लेने के लिये आये तब वह उससे जो कुछ चाहे वह करवा सकता था और उसे पादरी की हर बात माननी पड़ेगी। सो जब मौत **100** साल बाद उसको लेने के लिये आती है तो वह उससे कहता है कि जब तक वह मास पढ़ता है तब तक वह आग के पास बैठे। मौत आग के पास बैठ जाती है।

वह आग में लकड़ी डाल कर उसको बहुत तेज़ करता रहता है। आग और तेज़ होती जाती है पर मौत वहॉ से ज़रा भी नहीं हिल नहीं सकती जब तक पादरी उसे वहॉ से हिलने की इजाज़त नहीं देता। फिर वह इस शर्त पर उसे वहॉ से उठने की इजाज़त देता है कि वह उसे फिर से **100** साल जीने देगी।

मौत जब **100** साल के बाद दोबारा आती है तो प्रेत ओलीविओ मौत से कुछ अंजीरें तोड़ने के लिये कहता है और कहता है है कि जब तक वह न बुलाये तब तक वह वहीं बैठी रहे। इस तरह मौत उसको फिर से **100** साल की ज़िन्दगी देने पर मजबूर हो जाती है।

---

[98] Pret Olivio

अवकी बार जब मौत आती है तो प्रेत ओलीविओ अपनी पादरी की पोशाक पहन लेता है अपने साथ ताश की गड्डी लेता है और मौत के साथ चल देता है।

मौत उसको सीधे स्वर्ग ले जाना चाहती है पर वह नरक के रास्ते से हो कर और शैतान के साथ ताश की एक बाजी खेलते हुए जाना चाहता है। दॉव पर आत्माऐं लगी हैं और जैसे ही प्रेत ओलीविओ जीतता है वह एक आत्मा को अपनी पोशाक पर लगा लेता है। इस तरह वह आत्माओं से अपनी पूरी पोशाक ढक लेता है। फिर वह उनको अपनी टोपी पर लगाना शुरू करता है।

अन्त में उसके पास कोई उनको लगाने की कोई जगह ही नहीं बचती। जब वह स्वर्ग आता है तो पीटर उसके अन्दर आने में रोड़ा अटकाता है पर बाद में लौर्ड उन सबको अन्दर आने की इजाज़त दे देते हैं।

इसका टस्कन में कहा सुना जाने वाला रूप जिसमें आखिरी कथा के कुछ अंश पाये जाते हैं हम आगे दे रहे हैं – "गौडफ़ादर कष्ट"।

65 गौडफ़ादर कष्ट[99]

गौडफ़ादर कष्ट बहुत बूढ़े थे। भगवान ही जानता है कि वह कितने बूढ़े थे। एक दिन जीसस और सेंट पीटर जब दुनियॉ में देशों का नाम देने के लिये घूम रहे थे तो वे गौडफ़ादर कष्ट के पास आये। उन्होंने अपने मेहमानों को पोलैन्टा[100] खिलाया और सोने के लिये अपना बिस्तर दिया।

जीसस उनकी इस मेहमानदारी से बहुत खुश हुए। खुश हो कर उन्होंने गौडफ़ादर कष्ट को कुछ पैसे दिये और उनकी तीन इच्छाऐं पूछीं जिन्हें वह पूरा कर सकें।

उनमें से उनकी एक इच्छा पूरी की कि जो कोई भी आग के पास वाली उनकी बैंच पर बैठेगा वह उस पर से उठ नहीं पायेगा। उनकी दूसरी इच्छा पूरी की कि जो कोई अंजीर के पेड़ पर चढ़ जायेगा वह वहॉ से उतर नहीं पायेगा। और आखीर में क्योंकि वह पीटर की बहुत इज़्ज़त करते थे सो उसकी आत्मा को मोक्ष।

एक दिन मौत उनके घर आयी और उनको ले जाना चाहती थी। तो गौडफ़ादर कष्ट ने कहा "अभी तो यात्रा करने के लिये बहुत ठंडा है।" मौत ने उनसे चलने की जिद की तो गौडफ़ादर

---

[99] Godfather Misery. Tale No 65. From Tuscan area.

[100] Polenta is an Italian dish made from corn or maize flour by boiling it and making it like Upma of South India.

कष्ट ने उससे कहा कि वह आग के पास पड़ी बैन्च पर बैठ कर थोड़ा गर्म हो ले फिर चलते हैं।

इस बीच उन्होंने काफी सारी लकड़ी आग में डाल दी। मौत जलने लगी उसने उस बैन्च पर से उठने की कोशिश भी की पर वह तो उठ ही नहीं सकी। तब मौत से 100 साल की ज़िन्दगी ले कर गौडफ़ादर कष्ट ने उसे वहॉ से उठने दिया।

मौत आजाद हो गयी। साल बीतते गये। 100 साल भी जल्दी ही बीत गये। मौत फिर आयी। उस समय गौडफ़ादर कष्ट दरवाजे पर खड़े थे और ऐसा बहाना बना रहे थे जैसे कि वह उसका इन्तजार ही कर रहे हों। वह अंजीर के पेड़ की तरफ बड़े दुख से देख रहे थे।

जब मौत ने उनसे चलने के लिये कहा तो उन्होंने कहा "तुम ज़रा इस पेड़ से यात्रा के लिये थोड़ी सी अंजीर तोड़ लो तब चलते हैं।" मौत पेड़ पर चढ़ तो गयी लेकिन वह गौडफ़ादर कष्ट से सौदा किये बिना नीचे नहीं उतर सकी। गौडफ़ादर कष्ट ने उससे फिर से 100 साल की ज़िन्दगी मॉग ली थी।

अब ये 100 साल भी गुजर गये। मौत तिबारा आयी। अब इस बार उनके पास और कोई चारा नहीं था सो उनको जाना ही पड़ा।

मौत ने उनको इतना समय दे दिया कि वह अवे मारिया और पैटरनोस्टर[101] पढ़ लें।

गौडफ़ादर कष्ट के पास इतना समय नहीं था क्योंकि मौत जल्दी कर रही थी सो उन्होंने मौत से कहा — "तुमने मुझे समय दिया है और मैं इसे ले रहा हूँ। इसमें तुम्हें क्या परेशानी है।"

इस बीच मौत को एक विचार आया। उसने एक जैसूट की शक्ल बनायी और गौडफ़ादर कष्ट के घर गयी और वहाँ उपदेश देने लगी। पहले तो गौडफ़ादर कष्ट ने उसको सुना ही नहीं पर फिर उनकी पत्नी ने उनको जाने के लिये कहा कि वह जा कर चर्च में उपदेश सुनें।

जैसे ही गौडफ़ादर कष्ट चर्च में घुसे मौत चिल्लायी जिसने भी अवे मारिया पढ़ा है वह अपनी आत्मा को बचा ले।

गौडफ़ादर कष्ट ने मौत को पहचान लिया वह चिल्लाये — "तुम चली जाओ यहाँ से। तुम मुझे नहीं पकड़ सकतीं।"

निराश हो कर मौत वहाँ से चली गयी और फिर गौडफ़ादर कष्ट को कभी नहीं पकड़ सकी। गौडफ़ादर कष्ट अभी भी रह रहे हैं क्योंकि कष्ट तो कभी खत्म होता नहीं और मौत उन्हें पकड़ नहीं सकती।

[101] Ave Maria - a prayer to the Virgin Mary used in Catholic worship. The first line is adapted from Luke 1:28. And Paternoster is the Lord's Prayer, especially in Latin.

टस्कन में कही सुनी जाने वाली एक और कहानी में ऐसी ही कुछ भेंटें एक लोहार को दी जाती हैं क्योंकि वह हमेशा से ही एक बहुत अच्छा ईसाई रहा था। इनकी सहायता से वह शैतान को दो साल के लिये अपनी आत्मा का सौदा करने से बच जाता है। पहली बार जब शैतान आता है तो वह उसको आग के पास एक बैन्च पर बिठा देता है तो वह फिर बिना उसकी मर्जी के वहॉ से उठ नहीं पाता जब तक कि वह उसका दो साल का समय और नहीं बढ़ा देता। अगली बार जब वह आता है तो वह उसके घर में नहीं घुसता बल्कि एक खिड़की से अन्दर झॉकता है। उस खिड़की में इतनी ताकत है कि जो भी उसमें से अन्दर झॉकता है वह वहीं पकड़ा जाता है सो वह वहीं चिपक जाता है।

तीसरी बार शैतान एक अंजीर के पेड़ पर पकड़ा जाता है तब एक नया कौन्ट्रैक्ट लिखा जाता है जिसके अनुसार वह शैतान को फिर कभी नहीं देखता।

इसी तरह की एक कहानी और है जो थोड़ी विस्तार में है – "शराबखाने का नौकर"[102] एक बहुत दानी मेजबान अपने आपको मेहमानदारी के चक्कर में बर्बाद कर लेता है और शैतान से सात साल के लिये इस शर्त पर पैसे उधार लेता है कि अगर वह सात साल के बाद उसे न लौटा सका तो उसकी आत्मा शैतान की हो जायेगी। वह आदमी उसके बाद भी खुले हाथ खर्च करता रहता है और सात साल के बाद पहले से भी ज़्यादा गरीब हो जाता है।

फिर एक दिन उसकी सराय में लौर्ड सेंट पीटर और सेंट जौन आते हैं और उससे तीन वर मॉगने के लिये कहते हैं। पहले वर में वह यह मॉगता है कि जो कोई उसके सामने वाले अंजीर के पेड़ पर चढ़ जाये वह बिना उसकी इच्छा के उतरे नहीं। दूसरे वर में वह यह मॉगता है कि जो कोई उसके काउच पर बैठ जाये वह उसके ऊपर से बिना उसकी मरजी के उठ नहीं सके। और तीसरे वर में वह यह मॉगता है कि जो कोई उसकी एक खास आलमारी छुए वह बस उससे वहीं चिपक जाये और जब तक वह उसको आ कर न छुड़ाये तब तक उसी से चिपका खड़ा रहे।

शैतान सबसे पहले अपने सबसे बड़े बेटे को उसके पास पैसे लेने के लिये भेजता है। तो वह आदमी उसको अंजीर के पेड़ पर चढ़ा देता है और फिर उसकी खूब पिटायी करता है। उसके बाद शैतान अपने दूसरे बेटे को भेजता है तो वह उसको काउच पर बिठा देता है और उसको भी खूब पीटता है। अन्त में शैतान खुद आता है तो वह आदमी उसे अपने आप ही आलमारी में से पैसे निकालने के लिये कहता है। जैसे ही शैतान आलमारी में हाथ डालता है वह आलमारी उसको पकड़ लेती है। वह आदमी फिर उसको वहॉ से तभी आजाद करता है जब

[102] "The Tapster". By Christian Schneller. (Tale No 17)

शैतान अपना सारा पैसा उसे माफ कर देता है। इसका अन्त भी "बैपो पिपैटा" जैसा ही है। यह कहानी आगे दी हुई है।

ऐसी कथा का एक रूप मौन्टैफैरैटो में कहा सुना जाता है और जो डोमैनीको कौम्पारैत्ती के संग्रह में पाया जाता है "मौत का मजाक बनाना" [103]। इस कथा में एक स्कूलमास्टर जादूगर होता है। वह अपने एक शिष्य से कहता है कि वह रोज उसकी एक इच्छा पूरी करेगा। पहले दिन शिष्य मॉगता है कि जो कोई उसके नाशपाती के पेड़ पर चढ़े वह वहीं रह जाये। दूसरे दिन वह मॉगता है कि जो कोई उसकी फायरप्लेस[104] के पास आये वह वहीं बैठा रह जाये। और तीसरे दिन वह मॉगता है कि उसको पास जो ताश के पत्ते हैं वह उनसे जब भी खेले जीत जाये।

जब वह शिष्य **100** साल का हो जाता है तो मौत उसे लेने आती है तो वह उसको नाशपाती के पेड़ पर चढ़ा देता है जिससे वह वही की वहीं रह जाती है। जब वह उसको **100** साल की ज़िन्दगी और देती है तब वह उसको पेड़ से नीचे उतारता है। अगली बार मौत जब आती है तो उसे फायरप्लेस के पास बिठा कर वह **100** साल की ज़िन्दगी और मॉग लेता है।

इसके बाद वह शिष्य मर जाता है और स्वर्ग जाता है पर लौर्ड उसको अन्दर नहीं आने देते क्योंकि उसने उनकी दया नहीं मॉगी। नरक भी उसको लेने को तैयार नहीं है क्योंकि वह हमेशा से ही भला आदमी रहा है। सो वह परगेटरी के दरवाजे पर जाता है और वहॉ बैठ कर ताश खेलने लगता है। दॉव पर आत्माऐं लगाता है और इतनी सारी आत्माओं को जीत लेता है कि अब उसकी अपनी आत्माओं की एक सेना तैयार हो जाती है।

उसके बाद वह स्वर्ग जाता है तो लौर्ड कहते हैं कि केवल वह अकेला ही अन्दर घुस सकता है। पर वह जिद करता है कि उसके साथ उसकी जीती हुई सारी आत्माऐं उसके साथ ही जायेंगी तो लौर्ड फिर सबको अन्दर आने देते हैं। यह कथा भी "बैप्पो पिपैटा" की तरह से ही खत्म होती है। यह कहानी आगे दी हुई है।

इस कथा का एक और रूप है जिसमें शैतान के साथ सौदा किया जाता है और वह है "स्त्रियॉ शैतान से थोड़ा सा ज़्यादा जानती हैं"[105] एक बहेलिया अपनी आत्मा को शैतान को **12** साल की जिन्दगी और चिड़ियों के लिये बेच देता है। जब समय करीब करीब बीत जाता है तो बहेलिये की पत्नी उससे जिद करती है कि वह शैतान से अपने सौदे में थोड़ा सा बदलाव कर

---

[103] "Death Mocked". By Domenico Comparetti. (Tale No 34). Monteferrato.

[104] Fireplace is a place where in cold countries people burn fire to keep their houses warm.

[105] "Women Know One Point More than the Devils". by Stefano. (Tale No 34)

ले। और वह बदलाव यह है कि शैतान उससे कुछ नहीं लेगा अगर वह शैतान के लिये किसी एक ऐसी चिड़िया को ढूँढ दे जिसे शैतान न जानता हो।

शैतान राजी हो जाता है और आखिरी दिन आता है जब वह सारी चिड़ियों को आसानी से पहचान लेता है। फिर बहेलिये की पत्नी तारकोल से रंगे हुए पंखों से अपनी शक्ल बदल कर एक पिंजरे में से निकल कर आती है। उसको देख कर शैतान डर जाता है और भाग जाता है।[106]

[106] "Fitcher's Bird". By Grimm. (Tale No 46). Similar to this story of mysterious bird.

66 बैप्पो पिपैटा[107]

"औकेशन" कहानी देते समय हमने कहा था कि ऐसी कहानियों के दो रूप हैं। एक में ये कहानियॉ स्वतन्त्र रूप से दी गयी है। ऐसी दो कहानियॉ हम ऊपर दे चुके हैं। इसके दूसरे रूप में ये कहानियों किसी कहानी का केवल एक हिस्सा हैं। ऐसी कहानियॉ वेनिस में केवल दो पायी जाती हैं – एक तो बैप्पो पिपैटा जिसमें हीरो डाकुओं से एक राजा की ज़िन्दगी बचाता है। इसमें राजा का वेश बदला हुआ था सो बैप्पो नहीं जानता था कि वह कौन है जब तक कि उसको राज दरबार में इनाम के लिये नहीं बुलाया जाता। राजा ने उससे कहा कि अब उसको केवल सिपाही ही रहने की जरूरत नहीं है अब वह उसके अपने पास काम करेगा या फिर वह अगर कहीं और रहना चाहे तो रह सकता है। वह उसको उसकी सब जरूरतों के लिये पैसा देने के लिये तैयार है क्योंकि उसने उसकी जान बचायी है। उसी के आगे की कहानी यहॉ दी जाती है।

जब उसकी इस पहली खुशनसीबी का नशा उतर गया तब बैप्पो पिपैटा ने अपने सम्बन्धियों के घर जाने का विचार किया।

सड़क पर जाते समय उसको एक आदमी मिला जो उससे बातें करने लगा। वे लोग बहुत देर तक बातें करते रहे कि आखीर में वे तरोताजा होने के लिये और कुछ खाने पीने के लिये एक सराय में चले गये।

नये दोस्त जो बैप्पो से बात कर के उससे बहुत प्रभावित था ने बैप्पो से पूछा "ऐसा कैसे होता है कि तुम एक सिपाही हो और तुम कोई थैला[108] ले कर नहीं चलते हो।"

---

[107] Beppo Pipetta. Tale No 66.

[108] Translated for the word "Knapsack" - a bag with shoulder straps, carried on the back, and typically made of canvas or other weatherproof material.

बैप्पो बोला — "मैं मार्च पर जाते समय बेकार की चीज़ों का बोझा लाद कर झुक कर चलना नहीं चाहता। मेरे पास कुछ नहीं होता और मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं पड़ती और अगर पड़ती है तो मेरे पास एक बहुत ही अच्छा मास्टर है जो मुझे सारी चीज़ें खरीदवा देता है।"

अजनबी बोला — "तो अब मैं तुम्हें एक थैला देता हूँ जो बहुत ही कीमती है। क्योंकि अगर तुम किसी से यह कहोगे कि "आजा मेरे थैले में कूद जा" तो वह चीज़ तुम्हारे थैले में तुरन्त ही आ कर गिर जायेगी।"

यह कह कर अजनबी ने उसे एक थैला दिया और उससे विदा ले कर चला गया। बैप्पो ने सोचा "अरे मैं पहले मैं इसकी जॉच तो कर लूँ।"

तुरन्त ही उसके सामने इसके लिये एक अच्छा मौका भी आ गया। सामने से उसका मकान मालिक अपना किराया मॉगने आ रहा था। बैप्पो ने पूछा "तुम्हें क्या चाहिये?"

मकान मालिक बोला — "तुम जानते तो हो। मेरा पैसा दो।"

बैप्पो बोला — "हटो मेरा रास्ता छोड़ो। मेरे पास कोई पैसा वैसा नहीं है।"

मकान मालिक चिल्लाया — "ओ नीच सिपाही।"

बैप्पो बोला "कूद जा" और तुरन्त ही मकान मालिक कूद कर उसके थैले में जा पड़ा। मकान मालिक को उससे अपने को बाहर

निकलवाने के लिये उसकी बहुत देर तक विनती करनी पड़ी फिर भी जब तक उसने यह कसम नहीं खायी कि वह फिर कभी उससे पैसा नहीं माँगेगा तब तक बैप्पो ने उसे अपने थैले से आजाद नहीं किया।

बैप्पो बोला — "ठहर ज़रा। मैं बताता हूँ तुझे कि सिपाहियों की इज़्ज़त कैसे की जाती है।"

थका हारा भूखा प्यासा बैप्पो फिर एक सराय में जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि एक आदमी बार बार अपना बटुआ खाली कर लेता है पर उसका बटुआ कभी खाली नहीं होता। वह खाली होने के बाद फिर भर जाता है।

उसने तुरन्त ही उस आदमी से उसका बटुआ छीना और सराय से बाहर भाग गया। पर वह बटुए वाला भी कोई सुस्त नहीं था वह भी उसके पीछे पीछे भागा। और क्योंकि बैप्पो उसके बराबर नहीं भाग सका क्योंकि वह तो पहले से सारा दिन चलते चलते थका हारा और भूखा प्यासा था बटुए वाले ने उसे पकड़ लिया।

अब बैप्पो के पास और कोई रास्ता नहीं था सो वह तुरन्त बोला "कूद जाओ"। और वह तुरन्त ही उसके थैले में आ कर गिर गया।

बैप्पो की जब सॉस सँभली तो वह बोला — "तुम मेरी बात सुनो और ज़रा बुद्धि से काम लो। तुम्हारे पास यह बटुआ बहुत

समय से है अब तुम इसे मुझे दे दो नहीं तो बस समझ लो कि तुम अब से इसी थैले में ही बन्द रहोगे।"

अब वह बेचारा क्या करता। चाहे उसकी मर्जी थी या नहीं थी उसको वह बटुआ बैप्पो को देना ही पड़ा ताकि वह उस थैले में से कम से कम बाहर निकल सके।

अब बैप्पो दो साल तक घर पर ही रहा और उस बटुए से अच्छे अच्छे काम करता रहा और थैले से शरारतें करता रहा। अब उसको फिर से कुछ पैसा कमाने की इच्छा होने लगी थी सो वह फिर से वहॉ वापस लौट गया।

जब वह वहॉ पहुँचा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि हर एक चीज़ काले रंग की किसी चीज़ से लटकी हुई है और हर आदमी शोक मना रहा है।

उसने कुछ लोगों से पूछने की कोशिश की कि यहॉ इस मनहूसी की क्या वजह है तो लोगों ने उससे कहा — "क्या तुम्हें पता नहीं कि कल शैतान आ कर राजा की बेटी को ले जायेगा। यह बस केवल इसलिये कि एक बार राजा ने बेवकूफी की कोई प्रतिज्ञा ले ली थी।"

सो वह राजा को धीरज बॅधाने के लिये सीधा राजा के पास गया पर राजा को उसके ऊपर विश्वास ही न हो। वह बोला — "योर मैजेस्टी। आपको पता नहीं है कि बैप्पो पिपैटा क्या कर सकता है। आप मुझे बस इस काम करने की इजाज़त दीजिये।"

राजा ने इजाज़त दे दी। बैप्पो ने महल के एक कमरे में एक बड़ी मेज लगवायी जिस पर कागज पैन और स्याही रखी हुई थी। जबकि राजकुमारी एक दूसरे कमरे में बैठी हुई अपनी किस्मत का इन्तजार कर रही थी और प्रार्थना कर रही थी।

आधी रात को एक बहुत ही डरावनी आवाज सुनायी पड़ी जैसे कोई बहुत ज़ोर का तूफान आ गया हो। जैसे ही घड़ी ने **12** का आखिरी घंटा बजाया शैतान खिड़की के रास्ते कमरे के अन्दर आया। उधर बैप्पो अपने थैले का मुँह खोले खड़ा था। बस जैसे ही उसने शैतान को अन्दर आते देखा तो वह चिल्लाया "कूद जा"। और बस वह तुरन्त ही बैप्पो के थैले में कूद गया।

शैतान तो यह देख कर गुस्से में भर गया। बैप्पो ने गुस्से में भरे शैतान से पूछा — "ए तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"तुम्हें इससे क्या मतलब। मेरी अपनी वजह है यहाँ आने की।"

बैप्पो चिल्लाया — "अरे ओ गधे ज़रा रुक तो। अभी मैं तुझे बोलने के तौर तरीके सिखाता हूँ।" कह कर उसने एक डंडी उठा ली और उस थैले को पीटना शुरू कर दिया जब तक शैतान सब सेंटों का नाम लेते लेते थक नहीं गया।

"क्या तुम अब भी राजकुमारी को ले जाने का विचार रखते हो?"

"नहीं नहीं। बस तुम मुझे इस थैले में से निकाल दो।"

"क्या तुम यह वायदा करते हो कि तुम फिर कभी उसे परेशान नहीं करोगे?"

"हॉ मैं वायदा करता हूँ कि मैं फिर उसे कभी परेशान नहीं करूँगा। पर बस तुम मुझे इस थैले में से बाहर निकाल दो।"

यह सुन कर उसने दरबार के कुछ भले आदमियों को वहॉ बुलाया और उससे उसका वायदा दोबारा कहलवाया। फिर उसने शैतान से कहा कि वह अपने केवल एक हाथ को ही थैले के बाहर निकाले और उसको यह लिखने पर मजबूर कर दिया —

"मै शैतान यह वायदा करता हूँ कि मैं "हर रौयल हाईनैस" को लेने फिर कभी नहीं आऊँगा और न भविष्य में फिर कभी उसे तंग करूँगा। — शैतान, नरक की आत्मा"।

बैप्पो यह देख कर बोला — "यह ठीक है। राजकुमारी का मामला तो अब सिलट गया। पर तुमने जो पहले बदतमीजियॉ की हैं उनके लिये मैं तुम्हें कुछ देर के लिये पीटता हूँ ताकि जब तुम यहॉ से जाओ तो वह तुम्हें मेरी याद दिलाता रहे।"

और उसने मारना शुरू कर दिया। जब वह यह कर चुका तो उसने अपना थैला खोला और शैतान को बाहर निकाल दिया। शैतान भी जैसे खिड़की से अन्दर आया था वैसे ही वह खिड़की से बाहर भी चला गया।

राजा के आनन्द का तो कोई पारावार ही न रहा। उसने एक बहुत बड़ी दावत दी जिसमें बैप्पो उसके और राजकुमारी के बीच में बैठा और सारे राज्य में खुशियॉ मनायी गयीं।

कुछ समय बाद बैप्पो सैर सपाटे के लिये निकला और एक ऐसी जगह आया जो उसे बहुत अच्छी लगी। उसने वहीं रहने का निश्चय कर लिया। पर पुलिस को इससे पहले कुछ रस्में निभानी पड़ती हैं उसको बताना पड़ता है कि वह कौन है कहॉ से आया है और और भी बहुत सारी बातें।

पर इन सब बातों का उसने एक ही जवाब दिया — "मैं मैं हूॅ बस। और इससे ज़्यादा तुम सबको मेरे बारे में जानने की जरूरत नहीं है। अगर तुम्हें मेरे बारे में कुछ और जानना है तो राजा साहब से बात कर लो।"

सो उन्होंने राजा को लिखा पर राजा ने उनसे कह दिया कि वे उसको इज़्ज़त के साथ बर्ताव करें और उसको किसी तरह भी तंग न करें। वह यहॉ कई साल तक रहा। उसके बाद वह बूढ़ा हो गया। तब एक दिन उसके पास मौत आयी और उसका दरवाजा खटखटाया तो उसने पूछा "कौन है।"

"मैं हूॅ मौत।"

बैप्पो जल्दी में बोला "कूद जा।" और लो मौत तो उसके थैले में बन्द हो गयी।

वह फिर बोला — "अब मैं उसका क्या करूँ। क्या मैं उसके लिये यहाँ समय बर्बाद करता फिरूँ। तुम जहाँ भी हो वहीं रहो।" और उसको डेढ़ साल तक बन्द रखा।

पर उसके बाद तो सारे संसार में उथल पुथल मच गयी। डाक्टर बहुत खुश थे क्योंक अब उनके मरीज़ कहीं नहीं जा रहे थे। मौत ने तब उससे इतनी नम्रता से अपने आपको छोड़ने के लिये कहा कि वह यह सोचे कि इस बात के परिणाम क्या होंगे।

सो बैप्पो ने कुछ सोचा और उसको बाहर इस शर्त पर निकाल दिया कि वह अब कभी बैप्पो के पास बिना उसकी इच्छा के नहीं आयेगी।

मौत वहाँ से भाग गयी और अपने इस खोये हुए समय को पूरा करने के लिये उसने कुछ लड़ाइयाँ करवायीं।

आखिर जीते जीते बैप्पो इतना थक गया कि अब ज़िन्दगी उसे बेस्वाद लगने लगी। तब उसने मौत को बुलाया पर वह नहीं आयी क्योंकि उसको डर था कि बैप्पो कहीं अपना दिमाग न बदल ले और फिर से अपने थैले में बन्द न कर ले। तो बैप्पो ने सोचा कि वह खुद मौत के पास जायेगा।

जब वह मौत के घर पहुँचा तो घर पर कोई नहीं था पर अपनी छुट्टी को थैले में बिताते याद कर के अपने पीछे यह हुक्म छोड़ गयी थी कि अगर बिप्पो वहाँ आये तो उसकी खूब पिटायी करना।

सो जब बैप्पो मौत के घर पहुँचा तो मौत के हुक्म को गम्भीरता से लिया गया और उसकी खूब पिटायी की गयी।

मौत के द्वारा छोड़ दिये जाने पर और निकाले जाने पर बैप्पो दुखी हो कर नरक चला गया। पर वहाँ भी शैतान के पास वैसे ही हुक्म थे जैसे मौत ने अपने नौकरों को दे रखे थे।

इतनी पिटायी होने के बाद और इस बात से दुखी होने के बाद कि नरक और मौत कोई भी उसका अपने घर में स्वागत नहीं कर रहा है वह स्वर्ग चला गया। यहाँ उसने पीटर से मुलाकात की तो सेंट ने सोचा कि क्यों न पहले वह लौर्ड से बात कर लें।

इस बीच बैप्पो ने अपनी टोपी स्वर्ग की दीवार के उस पार स्वर्ग के अन्दर फेंक दी। कुछ देर में सेंट पीटर आये और बताया कि उन्हें अफसोस है कि लौर्ड उसे स्वर्ग में नहीं चाहते।

बैप्पो बोला — "ठीक है। पर तुम कम से कम मुझे मेरी टोपी तो लेने दोगे।"

और यह कहते हुए वह स्वर्ग के अन्दर चला गया और अपनी टोपी पर बैठ गया। जब सेंट पीटर ने उसको वहाँ से उठने और जाने के लिये कहा तो उसने उन्हें बड़ी सधी हुई आवाज में जवाब दिया — "सँभाल कर सर। इस समय मैं अपनी जमीन पर बैठा हुआ हूँ जहाँ मुझे किसी को कोई हुक्म देने का कोई अधिकार नहीं है।" और इस तरह से वह स्वर्ग में रह गया।

इस तरह के "आश्चर्यजनक थैले" का सन्दर्भ वेनिस की एक और कहानी में भी आता है। ग्रिम्स की लिखी हुई कहानी "गौडफ़ादर मौत"[109] सिसिली और वेनिस में पायी जाती है। इसका वेनिस का रूप यहाँ दिया जा रहा है – "सही आदमी"।[110]

[109] "Godfather Death". By Grimm.

[110] "The Just Man". By Bernoni. In his Trad. Pop. p 6.

67 सही आदमी[111]

एक बार की बात है कि एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। उनके एक बच्चा था जिसे वे तब तक बैप्टाइज़ नहीं करवाना चाहते थे जब तक कि उनको उसका गौडफ़ादर के लिये उसको कोई सही आदमी न मिल जाये।

आदमी ने बच्चे को अपनी बॉहों में लिया और किसी सही आदमी को ढूँढने के लिये बाहर सड़क पर चला गया कुछ दूर जाने के बाद उसको एक आदमी मिला जो हमारे लौर्ड थे।

उसने उनसे कहा — "मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय सही आदमी हैं।"

लौर्ड बोले — "मैं तो यह नहीं जानता कि सही आदमी हूँ या नहीं।"

सो वह आदमी उनको वहीं छोड़ कर और आगे बढ़ा तो उसको एक स्त्री मिली जो मडोना[112] थी। उसने उससे भी कहा — "मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय और सही हैं।"

---

[111] The Just Man. Tale No 67.

[112] Madonna is another name of Mary – Jesus' mother.

मडोना बोली — "मुझे नहीं मालूम कि मैं सही और न्यायप्रिय हूॅ या नहीं। तुम चलते जाओ तुमको जरूर ही कोई न कोई सही और न्यायप्रिय आदमी मिल जायेगा।"

सो वह फिर आगे चल दिया। आगे चल कर उसे एक और स्त्री मिली। यह मौत थी। वह उससे बोला — "मुझे आपके पास भेजा गया है क्योंकि मुझसे कहा गया है कि आप सही और न्यायप्रिय हैं। मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूॅ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय और सही हैं।"

मौत बोली — "हॉ मुझे विश्वास है कि मैं न्यायप्रिय और सही हूॅ। चलो बच्चे को बैप्टाइज़ करते हैं और फिर मैं तुम्हें दिखाती हूॅ कि मैं न्यायप्रिय और सही हूॅ या नहीं।"

तब उन्होंने बच्चे को बैप्टाइज़ कराया। उसके बाद मौत किसान को एक लम्बे कमरे में ले गयी जहॉ बहुत सारी रोशनियॉ जल रही थीं। किसान उस सबको देख कर आश्चर्यचकित रह गया उसने मौत से कहा — "गौडमदर ये रोशनियॉ यहॉ कैसी हैं।"

मौत बोली — ये रोशनियॉ सारी दुनियॉ के आदमियों की हैं। क्या तुम इन्हें देखना पसन्द करोगे। यह देखो यह तुम्हारी ज़िन्दगी की रोशनी है और यह तुम्हारे बेटे की ज़िन्दगी की रोशनी है।"

जब किसान ने देखा कि उसकी ज़िन्दगी की रोशनी तो बुझने वाली है तो उसने पूछा — "और तेल खत्म होने के बाद?"

मौत बोली — "तब तुमको मेरे साथ आना पड़ेगा क्योंकि मैं मौत हूँ।"

किसान चिल्लाया — "मुझ पर दया करो। मुझे मेरे बेटे की ज़िन्दगी की रोशनी में से थोड़ा सा तेल ले कर अपनी रोशनी में डालने दो।"

मौत बोली — "नहीं नहीं। मैं इस तरह का काम नहीं करती। तुमने एक न्यायप्रिय और सही आदमी चाहा था तो वैसा एक आदमी तुम्हें मिल गया है। अब तुम घर जाओ और अपना काम देखो सँभालो क्योंकि मैं तुम्हें बुलाने वाली हूँ।[113]

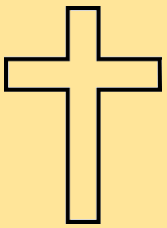

यहाँ हम वेनिस में कही सुनी जाने वाली ऐसी ही एक और दंत कथा संक्षेप में दे सकते हैं जो मध्य कालीन युग में कही सुनी जाती थी। एक अमीर नाइट जिसने एक नीच और बुरी ज़िन्दगी गुजारी थी जब वह बूढ़ा हो जाता है तो पछताता है कनफ़ैस करता है और उसका पादरी उसको तीन साल की तपस्या करने के लिये कहता है।

नाइट उसकी इस बात को मानने से मना करता है क्योंकि उसको डर है कि वह दो साल में ही मर जायेगा। और केवल दो साल के लिये ही नहीं उसने एक साल या एक महीने तक के लिये भी तपस्या करने से मना कर दिया। वह केवल एक रात की तपस्या पर राजी होता है। वह अपने घोड़े पर चढ़ता है अपने परिवार से विदा लेता है और चर्च पहुँचता है जो उसके घर से कुछ दूरी पर है।

---

[113] Another Venetian version is in Widter-Wolf, his Tale No 3 – "Godfather Death". There is one Sicilian version also – "Death and Her Godson". By Giuseppe Pitre. (Tale No 109).

कुछ दूर जाने के बाद वह देखता है कि उसकी बेटी उसके पीछे पीछे भागी हुई आ रही है यह कहने के लिये कि उसके आने के बाद कुछ डाकुओं ने महल पर हमला बोल दिया है। वह अपने उद्देश्य से डिगता नहीं है और उससे कहता है वह घर वापस जाये घर पर महल की देखभाल करने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर हैं।

तभी एक नौकर चिल्लाता है कि महल में आग लग गयी है और उसकी अपनी पत्नी को लोग मार रहे हैं और वह सहायता के लिये चिल्ला रही है। नाइट अपने घर की देखभाल के लिये अपनी जगह अपने नौकरों को शान्त रहने के लिये अपने रास्ते पर चलता चला जाता है और उससे कहता है कि अब उसके पास इसके लिये कोई समय नहीं है।

आखिर में वह चर्च में घुसता है और अपनी तपस्या शुरू करता है। चर्च की देखभाल करने वाला उसको वहॉ से उठाने की कोशिश करता है ताकि वह चर्च बन्द कर सके। एक पादरी उसको वहॉ से जाने के लिये कहता है क्योंकि वह मास सुनने का अधिकारी नहीं है। रात को **12** चौकीदार आते हैं जो उसको अपने साथ जज के पास चलने के लिये कहते हैं। पर वह किसी के कहे से हिल कर भी नहीं देता।

रात को दो बजे सिपाहियों की एक टुकड़ी आती है और उसको चारों तरफ से घेर कर उसको जाने के लिये कहती है। फिर सुबह पॉच बजे कुछ लोग वहॉ आते हैं और उसको वहॉ से भगाने की कोशिश करते हैं "हमको इसे बाहर निकाल देना चाहिये।" तब चर्च जलने लगता है और नाइट आग में चारों तरफ से घिर जाता है पर फिर भी वह वहॉ से कहीं जाता नहीं है।

आखिर जब नियत समय आता है तब वह चर्च छोड़ कर घर लौटता है तो देखता है उसके किसी परिवार वाले ने महल नहीं छोड़ा जितने भी लागों ने उसे तपस्या के समय तंग किया वे सब शैतान के लोग थे उसको बहकाने के लिये। उस समय नाइट को पता चलता है कि वह कितना बड़ा पापी था। उसके बाद वह यह घोषित कर देता है कि वह ज़िन्दगी भर तपस्या करेगा।

68 सेंट जौन के एक गौडफ़ादर और एक गौडमदर ने प्यार किया[114]

जियूसैप्पै बरनोनी ने अपनी पुस्तक[115] में नौ दंत कथाऐं दी हैं जिसमें एक पीटर की मॉ के बारे में है जो इस पुस्तक में पहले ही दी जा चुकी है। बाकी की आठ कथाओं मे से कई कथाऐं "भूतों की कहानियॉ" में रखी जा सकती हैं। उसकी दो कथाऐं उन पवित्र और आध्यात्मिक सम्बन्धों के बारे में हैं जो इटली के लोग गौडमदर गौडफ़ादर दुलहे के साथी और दुलहिन के साथ जोड़ते हैं।

इस बात को सभी लोग जानते हैं कि रोम का चर्च गौडसन और गौडडौटर्स और उनके माता पिता के बीच के रिश्ते को बहुत महत्व देता है उनका मानना है कि उससे शादी के बन्धन बचे रहते हैं। इनके बीच कोई भी अपवित्र सम्बन्ध बहुत बड़ा पाप समझा जाता है। बरनोनी की इन दोनों दंत कथाओं में से पहली कथा है —

यहॉ वेनिस में, भगवान जाने कितनी सदियों पहले, एक भला आदमी और एक भली स्त्री रहते थे। वे दोनों पति पत्नी थे और बहुत अमीर लोग थे।

उनके घर सेंट जौन का एक गौडफ़ादर आया करता था। कुछ ऐसा हुआ कि वह और उसकी गौडमदर ने आपस में छिप कर प्यार किया। इत्तफाक से वह गौडमदर एक ऐसे बच्चे की गौडमदर भी थी जिसका कि वह खुद गौडफ़ादर था।

---

[114] Of a Godfather and a Godmother of St John Who Made Love. Tale No 68. By Giuseppe Bernoni.
[115] Giuseppe Bernoni. "Leggende Fantstiche" gives nine legends.

इस स्त्री की एक नौकरानी थी और यह नौकरानी सब जानती थी। सो एक दिन इस स्त्री ने अपनी नौकरानी से कहा — "तुम अपनी जबान काबू में रखना तो तुम देखोगी कि तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। जब मैं मरने वाली होऊँगी तब तुमको एक डौलर रोज का पैसा मिलेगा।"

इस तरह स्त्री की नौकरानी ने अपना वायदा निभाया। अब एक बार गौडफ़ादर बहुत बीमार पड़ा तो वह स्त्री बहुत दुखी हुई और इतनी दुखी हुई कि उसका पति उससे बार बार कहता रहा — "इतनी दुखी मत हो। क्या तुम इतनी दुखी हो कर अपने आपको बीमार डाल लोगी। इसमें इतन दुखी होने की कोई बात नहीं है क्योंकि हर आदमी को समय आने पर इन हालातों से तो गुजरना ही पड़ता है।"

आखिर गौडफ़ादर मर गया। उसकी पत्नी के ऊपर इस बात का इतना असर पड़ा कि वह खुद भी बहुत बीमार पड़ गयी। जब उसके पति ने देखा कि उसकी पत्नी बहुत ही ज़्यादा दुखी है तो उसको कुछ सन्देह होने लगा कि जरूर ही मेरी पत्नी और इस गौडफ़ादर के बीच में कुछ था।

पर उसने कभी कुछ कहा नहीं जिससे वह और परेशान न हो बल्कि अपनी पत्नी के साथ एक दार्शनिक की तरह से बर्ताव करता रहा। उसकी नौकरानी हमेशा अपनी मालकिन के बिस्तर के पास ही बैठी रहती थी।

एक दिन पत्नी ने कहा — "तुम्हें याद है न कि जब मैं मर जाऊॅ तब तुम अकेले ही मेरा ध्यान रखना क्योंकि मैं और किसी को यहॉ नहीं चाहती।"

नौकरानी ने वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी। वह दिन निकल गया। अगला दिन भी निकल गया और अगला दिन भी निकल गया पर पत्नी की हालत नहीं सुधरी वह बदतर से बदतर होती गयी। आखिर वह मर गयी।

तुम लोग सोच सकते हो कि उसको पति को कितना दुख हुआ होगा। नौकरानी और उसके दूसरे नौकरों को भी बहुत दुख हुआ क्योंकि वह बहुत अच्छी स्त्री थी।

दूसरे नौकरों ने उसकी नौकरानी के साथ ध्यान रखने के लिये कई बार कहा पर उसने यह कह कर सबको मना कर दिया कि "अपनी मालकिन के पास मैं ही बैठूॅगी। उनके पास और कोई नहीं बैठेगा।"

मजबूरन उन्होंने कहा — "ठीक है पर अगर तुमको किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो यह घंटी बजा देना। हम लोग यहीं हैं तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त ही आ जायेंगे।ः

नौकरानी ने चार मोमबत्तियॉ जलायीं अैर उनको मालकिन के पैरों की तरफ रख दिया। फिर उसने "औफिस औफ द डैड"[116] अपने हाथ में ली और उसे पढ़ना शुरू कर दिया।

[116] "Office of the Dead"

जैसे ही आधी रात हुई कि कमरे का दरवाजा फटाक से खुल गया। उसने उसमें से गौडफ़ादर की शक्ल को आते देखा। जैसे ही उसने उसे देखा तो उसका खून तो पानी बन गया। उसने चिल्लाना चाहा पर वह तो इतनी डर गयी थी कि वह तो कोई आवाज भी नहीं निकाल सकी।

फिर वह अपनी कुर्सी से उठी और घंटी बजाने की कोशिश की पर उस मरे हुए आदमी ने उसको घंटी बजाने से रोकने के लिये उसके सिर पर एक बहुत ही ज़ोर का मुक्का मारा

उसके बाद उसने नौकरानी को इशारा किया कि वह एक मोमबत्ती उठा ले और उसके साथ अपनी मालकिन के बिस्तर तक आये। नौकरानी ने वैसा ही किया।

जब वह मरा हुआ आदमी बिस्तर के पास आया तो उसने मालकिन को उठाया और उसके बिस्तर पर बिठा दिया। फिर उसने उसके मोजे उसके पैर में पहनाने शुरू किये। उसने उसको सिर से ले कर पैर तक कपड़े पहनाये।

कपड़े पहनाने के बाद उसने उसको बिस्तर से उठा लिया और उसका हाथ पकड़ कर दरवाजे के बाहर ले गया। नौकरानी उनके आगे आगे मोमबत्ती ले कर उनको रास्ता दिखाने के लिये जा रही थी।

इस महल में एक सुरंग थी। वेनिस में ऐसे मकान बहुत होते हैं जिनमे सुरंगें होती हैं सो वे उस सुरंग में चले गये।

जब वे एक खास जगह पर पहुँचे तो आदमी ने नौकरानी की मोमबत्ती में एक हाथ मारा उसे बुझाया और नौकरानी को अँधेरे में छोड़ कर चला गया। नौकरानी बेचारी इतनी डर गयी कि वह जमीन पर गिर पड़ी और गेंद की तरह से लुढ़क गयी।

सुबह को जब सब नौकर यह सोच कर वहाँ आये कि चल कर देखें कि नौकरानी के क्या हाल हैं क्योंकि उसने तो रात में किसी को को पुकारा भी नहीं था। सो जब उन्होंने दरवाजा खोला तो देखा कि वहाँ तो कोई नहीं था – न ज़िन्दा नौकरानी और न मुर्दा लाश।

यह देख कर वे तो बिल्कुल ही पागल हो गये और अपने मास्टर के पास भागे गये — "मालिक हम पर दया कीजिये। कमरे में तो कोई नहीं है – न ज़िन्दा स्त्री और न मुर्दा स्त्री। कमरा बिल्कुल खाली है।"

मालिक बोले — "क्या तुम सच कह रहे हो?"

फिर मालिक ने जितनी जल्दी हो सकते थे कपड़े पहने और कमरा देखने गया तो उसने भी देखा कि वाकई वहाँ तो कोई भी नहीं था। उसने देखा कि उसकी पत्नी जो कपड़े बाहर जाने के लिये पहना करती थी वे भी वहाँ नहीं हैं।

फिर उसने नौकरों को बुलाया और उनसे कहा — "लो ये टार्च लो और चलो सुरंग में चल कर देखते हैं।"

सो सारे लोगों ने अपनी अपनी टार्चें जलायीं और उस सुरंग में चल दिये।

कुछ दूर जाने पर ही उनको नौकरानी मिल गयी जो मर चुकी थी। नौकरों ने उसको उसकी बॉह पकड़ कर उठाया तो उसका शरीर तो बिल्कुल ऐंठ चुका था। उन्होंने उसकी दूसरी बॉह पकड़ कर उठाया तो पता चला कि उसके शरीर में जैसे गॉठें पड़ी हों। तब उन्होंने उसके शरीर को उठाया और सीढ़ियों से ऊपर ले गये और उसे बिस्तर पर लिटा दिया।

मालिक ने डाक्टर को बुलाया कि अगर वे उसको फिर से ज़िन्दा कर सकें। धीरे धीरे उसने ऑखें खोलना शुरू किया और उॅगलियॉ हिलाना शुरू किया। पर वह बोल कुछ नहीं सकी। पर उसकी उॅगलियों के हिलाने से वे सब समझ गये जो वह उनसे कहना चाहती थी।

तब मालिक ने अपनी टौर्चें फिर से जलायीं और यह देखने के लिये उस सुरंग में और आगे बढ़ चले कि शायद उन्हें मरी हुई स्त्री के बारे में कुछ और पता चल जाये। उन्होंने चारों तरफ बहुत देखाभाला पर उन्हें एक गहरे गड्ढे के अलावा और कुछ नहीं मिला।

उसको देख कर मालिक को तुरन्त ही समझ में आ गया कि इसी जगह उसकी पत्नी और गौडफ़ादर गायब हुए हैं। यह देख कर वह फिर से सीढ़ियों से ऊपर गया। पर फिर वह उस महल में और

नहीं रह सका और महल में ही नहीं बल्कि वेनिस में भी नहीं रह सका। वहॉ से वह वरोना[117] चला गया।

वह अपनी नौकरानी को रोज़ाना एक डौलर की तनख्वाह पर महल में ही छोड़ गया। उसकी देखभाल के लिये कुछ नौकर भी छोड़ गया जो उसके खाने का भी ध्यान रखते थे क्योंकि जब तक वह ज़िन्दा रही तब तक वह बिस्तर पर ही लेटी रही और वह बोल भी नहीं सकी।

मालिक ने सबको उस जगह जाने की और उसे देखने की छूट दे रखी थी ताकि हर उस आदमी को यह चेतावनी मिलती रहे कि बैप्टिस्म की सम्बन्धों की इज़्ज़त करनी चाहिये।

ऐसी ही एक और कथा और भी कही सुनी जाती है जो इस पुस्तक की **72** नम्बर की कहानी है – "सेंट जौन के बारे में"।[118]

[117] Varona – a big city in Italy.

[118] Gossips of St John. Tale No 72. In this book.

69 दुलहे का साथी[119]

जियूसैप्पै बरनोनी अपनी पुस्तक में[120] नौ दंत कथाऐं देता है जिसमें एक पीटर की मॉ के बारे में है जो इस पुस्तक में पहले ही दी जा चुकी है। बाकी की आठ कथाओं मे से कई कथाऐं "भूतों की कहानियॉ" में रखी जा सकती हैं। उसकी दो कथाऐं उस पवित्र और आध्यात्मिक सम्बन्धों के बारे में हैं जो इटली के लोग गौडमदर गौडफ़ादर दुलहे के साथी और दुलहिन के साथ जोड़ते हैं। गौडफ़ादर और गौडमदर के अपवित्र रिश्ते पर लिखी हुई एक कहानी हम पहले ही दे चुके हैं उसकी दूसरी दंत कथा अब यहॉ प्रस्तुत है। यह कथा दुलहे के साथी और दुलहिन के पवित्र रिश्ते के बारे में है। इसमें दुलहे का साथी बुरी नीयत से दुलहिन का हाथ दबाता है

तुमको पता होना चाहिये कि वेनिस के लोग एक बात कहते हैं कि दुलहे का साथी दुलहे और दुलहिन के पहले बच्चे का गौडफ़ादर होता है।

एक बार ऐसा हुआ कि ऐन्जिल राफेल के पारिश[121] में एक नौजवान और एक नौजवान स्त्री रहते थे। वे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। सो उन्होंने आपस में तय किया कि वे आपस में शादी कर लेंगे। अब उन्होंने अपने लिये एक बैस्ट मैन ढूँढना शुरू किया।

---

[119] The Groomsman. Tale No 69.
Translated for the word "Groomsman". Groomsman, in the western culture, is the companion of the groom while he is performing his marriage ceremonies. In Britain this man is called "Best Man". In Italy he is called "Compari"

[120] Giuseppe Bernoni. "Leggende Fantstiche" gives nine legends.

[121] In the Parish of Angel Raphael

रीति रिवाजों के अनुसार उस नौजवान ने अपने आप ही अपना बैस्ट मैन चुन लिया। वह उसको अपनी होने वाली दुलहिन के घर ले गया और उससे कहा — "देखो यह है तुम्हारा बैस्ट मैन।"

बैस्ट मैन ने जैसे ही होने वाली दुलहिन को देखा तो वह तो खुद उसके प्रेम में पड़ गया और तुरन्त ही उनका बैस्ट मैन बनने को तैयार हो गया। शादी का दिन आया तो यह बैस्ट मैन बुरे विचारों के साथ चर्च गया।

जब वे चर्च से बाहर निकले तो रीति रिवाज के अनुसार उन्होंने कुछ हल्का सा नाश्ता किया। उसके बाद तीसरे प्रहर में वे एक गाड़ी में बैठ कर एक सराय में गये जैसा कि उन दिनों का रिवाज था।

बैस्ट मैन के साथ पहले दुलहिन गाड़ी में बैठी उसके बाद दूल्हा बैठा और फिर रिश्तेदार। जब वे नाव में बैठ रहे थे बेस्ट मैन ने दुलहिन का हाथ पकड़ कर उसको बैठने में सहायता की। और ऐसा करने में उसने उसका हाथ दबा दिया। और इतनी ज़ोर से दबाया कि दुलहिन को उसमें परेशानी हो गयी।

जैसे जैसे समय बीतता गया तो बैस्ट मैन ने महसूस किया कि दुलहिन तो उसके बारे में कुछ सोचती नहीं तो उसने भी उसकी परवाह करनी बन्द कर दी।

पर धीरे धीरे वह यह सोचने लगा कि शादी के दिन उसने उसके साथ क्या किया था। वह इस बारे में जितना ज़्यादा सोचता उसको उतना ही ज़्यादा पछतावा होता।

सो उसने निश्चय किया कि वह कनफ़ैशन करने जायेगा और अपने पादरी को बतायेगा कि उसने किस बुरे इरादे से क्या किया है। पादरी बोला — "बेटा तुमने तो बहुत बड़ा पाप किया है। मैं तुम्हें तपस्या करने की सलाह दूँगा – एक बहुत भारी तपस्या की। क्या तुम करोगे?"

"हॉ फ़ादर। आप मुझे बताइये कि मुझे क्या करना है।"

पादरी बोला — "सुनो। तुमको रात को एक जगह जाना होगा जहॉ मैं बताऊँ। पर ध्यान रखना तुम कोई भी आवाज सुनो पर तुम एक पल के लिये भी पीछे मुड़ कर नहीं देखना। जब तुम जाओ तो तीन सेब अपने साथ ले जाना। तुमको तीन भले आदमी मिलेंगे। तुम वे सेब उन तीनों को दे देना।"

उसके बाद पादरी ने उसको वह जगह बतायी जहॉ उसको जाना था और बैस्ट मैन वहॉ से चल दिया।

उसने रात तक इन्तजार किया फिर उसने तीन सेब लिये और उस जगह की तरफ चल पड़ा जो उसको पादरी ने बतायी थी। वह चलता रहा चलता रहा। आखिर वह उस जगह पर आ पहुँचा जो उसको पादरी ने बतायी थी।

वहॉ उसने फुसफुसाहट और बातें करने की इतनी आवाजें सुनी कि तुम सोच भी नहीं सकते। एक आवाज कुछ कह रही थी तो दूसरी आवाज कुछ कह रही थी तो तीसरी कुछ।

ये सब उन लोगों की आवाजें थीं जिन्होंने सेंट जौन के प्रति पाप किया था। पर उसको तो इन सब बातों का कुछ पता ही नहीं था। उसने सुना कि वे कह रहे थे "पीछे घूमो पीछे घूमो।"

पर उसको तो मालूम था कि उसको पीछे मुड़ कर घूमना नहीं है सो वह सीधा चलता रहा। उसने तो अपने चारों तरफ भी नहीं देखा चाहे वे उसे कितना भी पुकारते रहे। कुछ दूर आगे जाने पर उसको तीन भले आदमी मिले। उसने उनको नमस्ते की और वे तीनों सेब उन तीनों को दे दिये।

आखीर के तीसरे आदमी ने अपना हाथ अपने शाल में छिपा रखा था। बैस्ट मैन ने देखा कि सेब लेने के लिये वह अपनी बॉह को बड़ी मुश्किल से बढ़ा पा रहा था।

आखिर जब उसने अपनी बॉह अपने शाल में से निकाली तो बैस्ट मैन ने एक इतना सूजा हुआ हाथ देखा कि वह तो डर ही गया। फिर भी उसने उसको सेब दिया जैसे उसने दूसरों को दिया था। तीनों ने उसको धन्यवाद दिया और फिर वहॉ से चले गये।

उसके बाद वह घर चला गया और फिर अपने पादरी से मिलने गया और उसे बताया कि वहॉ क्या हुआ था। पादरी बोला — "देखा मेरे बेटे। तुम अब बच गये हो। क्योंकि उन तीनों में से

पहला भला आदमी लौर्ड थे। दूसरा आदमी सेंट पीटर थे और तीसरा भला आदमी सेंट जौन था।

तुमने देखा कि उसका हाथ कैसा था। यह वह हाथ था जो तुमने दुलहे की शादी के दिन दबाया था। सो वास्तव में तुमने केवल उस दुलहिन का ही हाथ नहीं दबाया था बल्कि सेंट जौन का हाथ दबा कर उनको तकलीफ़ पहुॅचायी थी।

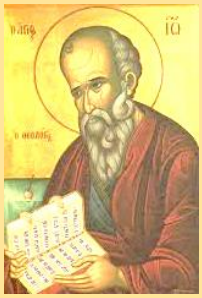

उसकी तीसरी दंत कथा का नाम है "सेंट जौन के दो बैस्ट मैन की कहानी जिन्होंने सेंट जौन की कसम खायी"।[122]

दो बैस्ट मैन जिन्होंने आपस में एक दूसरे को बहुत दिनों से देखा नहीं था एक बार कहीं मिल गये। तो एक ने दूसरे को खाने पर बुलाया और उसका पैसा भी दिया। दूसरे ने कहा कि अगले हफ्ते वह भी ऐसा ही करेगा। जब उसने यह कहा था तो वह एक चौराहे पर खड़ा था।

"हम एक हफ्ते बाद इसी जगह इसी समय फिर मिलेंगे।"

"ठीक है।"

"सेंट जौन की कसम। मैं भूलूॅगा नहीं।"

"मैं भी सेंट जौन की कसम खाता हूॅ कि मैं यहीं तुम्हारा इन्तजार करूॅगा।"

उसी हफ्ते में जिस बैस्ट मैन ने खाने के पैसे दिये थे वह मर गया। दूसरे बेस्ट मैन को यह पता नहीं था कि वह मर गया है सो वह नियत समय पर नियत जगह पर पहुॅच गया। जब वह दूसरे बैस्ट मैन का इन्तजार कर रहा था तो वहॉ से उसका एक दोस्त गुजरा तो उसने पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

[122] 3rd Story is "Of Two Compari of St John Who Swore by the Name of St John".

वह बोला — "मै अपने बेस्ट मैन का इन्तजार कर रहा हूँ।"

"क्या तुम टोनी का इन्तजार कर रहे हो। पर वह तो तीन दिन पहले मर गया। तुमको तो बहुत दिनों तक इन्तजार करना पड़ेगा।"

"क्या कहा तुमने वह मर गया है। देखो वह तो वह आ रहा है।"

वास्तव में उसको तो वह दिखायी दिया पर उसके दोस्त को नहीं। मरा हुआ बैस्ट मैन अपने बैस्ट मैन के सामने रुका और बोला — "तुमने अच्छा किया जो यहाँ इस जगह आ गये। तुम इसके लिये भगवान को धन्यवाद दे सकते हो वरना मैं तुम्हें बताता कि सेंट जौन की कसम क्या होती है।"

इतना कह कर वह गायब हो गया और फिर उसके बैस्ट मैन ने उसको कभी नहीं देखा। क्योंकि उसकी कसम तो केवल उस समय और उस जगह होने की थी।

उसकी चौथी दंत कथा एक साधारण कसम की पवित्रता के बारे में है – "दो प्रेमी जिन्होंने साथ जीने मरने की कसम खायी"।[123]

दो नौजवान लड़की और लड़के ने लड़की के माता पिता को बताये बिना ही प्रेम किया। नौजवान ने उससे कसम ली कि वह उसको ज़िन्दगी और मौत दोनों में प्यार करेगी। अब किसी लड़ाई झगड़े में नौजवान मारा गया। लड़की को इस बात का पता नहीं था। नौजवान का भूत लड़की से पहले की तरह से मिलता रहा और लड़की रोज रोज दुबली होती रही और पीली पड़ती रही।

पिता को जब इस मामले का पता चला तो उन्होंने एक पादरी से सलाह माँगी। पादरी ने लड़की से कनफ़ैशन में यह पता चला लिया कि क्या मामला था। वह एक बकरा एक शाल और एक किताब ले कर आया ताकि वह लड़के की आत्मा को पकड़ सके और लड़की को बचा सके।

उसकी पाँचवी कथा का नाम है "मरे हुए की रात"।[124] यानी "औल सेंट्स की शाम"। एक बार एक नौकर लड़की बहुत सवेरे यानी आधी रात को ही उठ गयी तो उसने एक अजीब सा जुलूस देखा जिसके आखिरी आदमी को उसने मोमबत्ती टोकरी में रख कर नीचे गिरा कर जलाने की प्रार्थना कर के परेशान कर दिया। वह उसकी मोमबत्ती जला देता है पर जब वह लड़की अपनी टोकरी ऊपर खींचती है तो उसको मोमबत्ती के साथ साथ एक आदमी की बाँह भी मिलती है।

---

[123] 4th Story is "Of Two Lovers Who Swore Fidelity in Life and Death".

[124] 5th Story is "The Night of the Dead" or "The Eve of the All Saints' Day"

जब वह अपने पादरी से कन्फ़ैशन करती है तो वह उसे एक साल इन्तजार करने की सलाह देता है जब वह जुलूस उधर से फिर से गुजरेगा। वह उससे कहता है कि अपनी बॉहों में एक काली बिल्ली ले ले और वह बॉह जिसकी है उसी को वापस दे दे। वह ऐसा करती है और कहती है — "मेहरबानी कर के अपनी बॉह लीजिये। मैं आपकी बहुत ऋणी हूॅ।"

वह बड़े गुस्से में भर कर वह बॉह ले लेता है और कहता है "भगवान को धन्यवाद दो कि तुम्हारी बॉहों में यह बिल्ली है वरना तुम भी वही होतीं जो आज मैं हूॅ।"

70 सेन मारकुओला का पारिश पादरी[125]

इसकी छठी कहानी का नाम है "सेन मारकुओला का पादरी"। यह कहानी एक पादरी की है जो यह विश्वास करता है कि मरे हुए लोग जहॉ रहते है वे वहीं रहते हैं। वे कहीं और नहीं जाते।

एक बार की बात है कि वेनिस में सैन मारकुओला में एक पारिश पादरी था। वह एक बहुत ही अच्छा आदमी था। वह चर्च में स्त्रियों को सिर पर कोई हैट टोप या कुछ और पहने नहीं देख सकता था। अगर वह देख लेता तो उसके अन्दर इतनी हिम्मत थी कि वह खुद जा कर उनको उतार सकता था।

उसका कहना था कि चर्च तो भगवान का घर है इसमें जो कुछ आदमियों को इजाज़त नहीं वही स्त्रियों को भी नहीं करना चाहिये। पर जब कोई स्त्री अपने कन्धों पर शाल ओढ़ती थी तो वह उसको उसके सिर पर ओढ़ने के लिये कह देता था ताकि कोई उसको घूरे नहीं और उसको बुरी दृष्टि से न देखे।

पर इस पादरी में एक गड़बड़ थी। वह यह कि वह भूतों[126] में विश्वास नहीं करता था। एक दिन वह उपदेश दे रहा था तो लोगों से कह रहा था — "सुनो मेरे प्यारे भाइयो। इस सुबह जब मैं चर्च

[125] The Parish Priest of San Marcuola. Tale No 70. From Venice. By Giuseppe Bernoni in his "Leggende fastiche" – his 6th story from 9 stories

[126] Translated for the word "Ghosts"

आ रहा था तो मेरे शिष्यों में से एक लड़की मेरे पास आयी और एक बार में ही यह सब बोल गयी।

"ओह फ़ादर। इस रात तो मैं यह देख कर डर ही गयी। मैं अपने बिस्तर में सोयी हुई थी कि कुछ भूत आये और उन्होंने मेरे ओढ़ने की चादर खींच ली।"

लेकिन मैंने उससे कहा — "लेकिन बेटी। यह सम्भव नहीं है क्योंकि मरे हुए लोग जहॉ रहते हैं वे वहीं रहते हैं और कहीं नहीं जाते।"

और इस तरह से उसने सब लोगों के सामने यह घोषित कर दिया कि यह सच नहीं है कि मरे हुए लोग फिर यहॉ आयें और लोग उनको देखें या सुनें।

उस दिन रात को पादरी रोज की तरह से अपने बिस्तर पर सोने चला गया। सो भी गया पर आधी रात के समय उसने अपने घर के दरवाजे की घंटी बहुत ज़ोर से बजती हुई सुनी।

नौकरानी उठ कर बाहर छज्जे पर गयी तो उसने सड़क पर बहुत सारे लोग देखे तो उसने वहीं से पूछा — "कौन है वहॉ।"

इसके जवाब में उन्होंने पूछा — "क्या सैन मारकुओला का पादरी घर में है?"

उसने कहा — "हॉ हैं पर वह सो रहे हैं।"

इस पर उन्होंने कहा — "उसको नीचे भेजो।"

पर जब पादरी ने यह सुना तो उसने नीचे जाने से मना कर दिया। इस पर उन्होंने दरवाजे की घंटी फिर से बजानी शुरू कर दी और नौकरानी से कहा कि वह अपने मालिक को नीचे भेजे और पादरी ने कहा कि वह कहीं नहीं जायेगा।

इस पर घर के सारे दरवाजे बहुत ज़ोर से खुल गये और वे सब ऊपर चले आये। वे पादरी के सोने वाले कमरे में गये और उससे कहा कि वह उठे कपड़े पहने और उनके साथ चले। उसको वह करना ही पड़ा जो उन्होंने उससे करने के लिये कहा।

जब वे एक खास जगह पहुँच गये तो उन्होंने उसको अपने बीच में बिठा लिया और उसको इतने सारे मुक्के मारे कि वह यह भी नहीं सोच सका कि वह वहाँ से किधर जाये। बाद में वह बोले — "और यह उस बेचारे मरे हुए के लिये।"

कह कर वे सब वहाँ से तुरन्त ही गायब हो गये और फिर कभी दिखायी नहीं दिये। पादरी भी सिर से पैर तक घायल अपने घर वापस आ गया।

इस तरह से भूतों ने यह साबित कर दिया कि यह कहना गलत है कि "मरे हुए लोग जहाँ रहते हैं वे वहीं रहते हैं।"

71 एक भला आदमी जिसने खोपड़ी को ठोकर मारी[127]

इसकी सातवीं कहानी का नाम है "एक भला आदमी जिसने खोपड़ी को ठोकर मारी"।

एक बार की बात है कि एक नौजवान था जो कुछ नहीं करता था सिवाय खाने पीने और आनन्द करने के। क्योंकि वह बहुत अमीर था और उसे किसी भी बात की कोई चिन्ता नहीं थी।

वह हर एक पर नाराज होता था। नौजवान लड़कियों का अपमान करता था। हर किस्म की चालें खेलता था। और हर चीज़ से बहुत जल्दी थक जाता था।

एक बार उसके दिमाग में आया कि वह एक बहुत अच्छी सी दावत दे सो उसने अपने सभी दोस्तों और अपनी जान पहचान की बहुत सारी स्त्रियों को उसमें बुलाया।

जब दावत की तैयारी हो रही थी तो वह घूमने के लिये निकला। वह एक ऐसी जगह से गुजरा जहॉ एक कब्रिस्तान था। चलते चलते उसको जमीन पर एक खोपड़ी दिखायी दे गयी। उसने उसे ज़ोर की एक ठोकर मारी। फिर वह उसके पास तक गया और उससे हॅसी में कहा — "तुम भी शाम को मेरी दावत में आना। आओगे न।"

[127] The Gentleman Who KIcked a Skull. Tale No 71. By Giuseppe Bernoni.

यह कह कर वह अपने घर लौट गया। घर पहुँचा तो देखा कि दावत की तैयारियॉ पूरी हो चुकी थीं। मेहमान भी आने शुरू हो गये थे। वे लोग मेज पर बैठे। संगीत बज रहा था लोग खा पी रहे थे आनन्द कर रहे थे।

यह सब करते करते आधी रात हो आयी। और जब घड़ी ने रात के **12** बजे के घंटे बजाये तो दरवाजे की घंटी बजी। नौकर लोग देखने गये कि इस समय कौन आया था तो उन्होंने देखा कि वहॉ तो एक भूत खड़ा था।

उसने उनसे कहा — "काउन्ट रोबर्ट[128] से कहना कि उसने मुझे सुबह इस दावत के लिये बुलाया था।"

वे यह बात अपने मालिक से कहने गये तो मालिक ने कहा — "जिन जिनको मैंने बुलाया था वे तो सब यहॉ हैं। मैंने और किसी को तो बुलाया नहीं।"

वे बोले — "अगर आप उसे एक बार देख लेते। वह एक डरावना भूत है।"

तब उस नौजवान के दिमाग में आया कि शायद यह वही मरा हुआ आदमी होगा जिसकी खोपड़ी को मैं सुबह मजाक मजाक में न्यौता दे कर आया था।

[128] Count Robert

यह सोचते ही वह अपने नौकरों से बोला — "जल्दी करो जल्दी करो सारे दरवाजे खिड़कियॉ और छज्जे बन्द कर दो ताकि वह घर के अन्दर न घुस सके।"

नौकर तुरन्त ही सब कुछ बन्द करने के लिये दौड़ गये। पर उन्होंने यह सब काम मुश्किल से ही खत्म किया होगा कि घर और छज्जे के दरवाजे फिर से धड़ाम धड़ाम खुल गये और वह भूत घर के अन्दर घुसा।

भूत पहले तो उस जगह गया जहॉ दावत चल रही थी और फिर बोला — "रौबर्ट रौबर्ट क्या तुम्हारे लिये सबको अपमानित करना ही काफी नहीं था जो तुमने मरे हुए को भी परेशान करने की सोची। अब तुम्हारा अन्त आ गया है।"

यह सुन कर सब लोग डर गये कुछ तो वहॉ से छिपने के लिये इधर उधर भाग गये कुछ अपने घुटनों पर बैठ गये। तब भूत ने रौबर्ट को गले से पकड़ लिया उसको गला घोट दिया और उसे घसीटता हुआ बाहर ले चला।

इस तरह उसने यह बताया कि बेचारे मरे हुओं के साथ मजाक करना ठीक नहीं है।

जियूसैप्पे बरनोनी की दी हुई नौ दंत कथाओं में से नवीं और आखिरी कहानी मासारिऔल के बारे में है जो वेनिस के घरों की आत्मा है।[129]

एक परिवार वाला आदमी किसी काम से रात को बाहर जाता है तो रास्ते में उसको एक टोकरी में पड़ा हुआ एक बच्चा मिलता है। मौसम बहुत ठंडा है सो वह भला आदमी उस अनाथ बच्चे को घर ले आता है।

उसकी पत्नी जिसके अपने एक छोटा बच्चा है उस छोटे अजनबी को बहुत प्यार से रखती है। वह उसको अपने बच्चे के साथ उसी के पालने में लिटा देती है। पति पत्नी को पल भर के लिये उस कमरे के बाहर जाना पड़ता है पर जब वे वापस आते हैं तो देखते हैं कि वह अनाथ बच्चा तो वहॉ से गायब है। पति को यह देख कर बड़ा आश्चर्य होता है और वह पूछता है "इसका क्या मतलब है।"

पत्नी कहती है — "मुझे नहीं मालूम। क्या यह मासारिऔल हो सकती है।"

यह सुन कर पति अपने छज्जे पर बाहर जाता है तो उसको दूर एक आदमी की शक्ल दिखायी देती है पर वह आदमी तो नहीं है। वह ताली बजा रहा होता है हॅस रहा होता है और उसकी कई तरह से हॅसी उड़ा रहा होता है। और फिर अचानक गायब हो जाता है।

वही शरारती आत्मा और भी कई लोगों के साथ ऐसे ही शरारत करती रही। कभी वह नाविकों को उनको मिले हुए किराये के पैसों से खेलती। कभी वह बेकर के बेटे का रूप रख लेती और घर वालों को रोटी को ओवन में रखने की याद दिलाती और फिर वह उसे किसी चौराहे या पुल पर ले जाती। कभी कभी जब किसी के धुले हुए कपड़े बाहर सूख रहे होते तो वह उन्हें उठा कर कहीं दूर ले जाती और जब उसके मालिक ने अपनी खोयी हुई चीज़ पा ली होती मासारिऔल उन पर हॅसती उनका बेवकूफ बनाती।

पवित्र औफिस ने एक बार उसको बन्द कर दिया था जैसे जादूगरनियों और परियों को बन्द कर देते हैं।

---

[129] The last and the 9th story given by Bernoni is about the Massariol, the Domestic Spirit, of the Venetians.

72 सेंट जौन के बारे में[130]

एक बार की बात है एक पति पत्नी रहते थे। वे गौसिप के साथ हमेशा ही बतियाते रहते थे। एक बार पति को गिरफ्तार कर लिया गया और उसको जेल ले जाया गया। पति अपनी गौडमदर को बहुत चाहता था। वह अक्सर उससे मिलने जाया करता था।

एक दिन गौडमदर ने गौसिप से पूछा — "गौसिप क्या मैं अपने पति से मिलने चलूँ?"

उसके गौसिप ने कहा — "हॉ हॉ गौडमदर क्यों नहीं।"

और वे दोनों जेल में उससे मिलने चल दिये।

उन दिनों तरबूज का मौसम था सो रास्ते में उन्होंने बेचारे कैदी के लिये एक बड़ा सा तरबूज खरीदा। हम लोग तो सब मॉस और खून के बने हैं। गौसिप और उसकी गौडमदर ने सेंट जौन के प्रति पाप किया था।

संक्षेप में वे दोनों एक जगह से गुजरे तो सेंट जौन उनको वहॉ से बिना सजा दिये गुजरने नहीं दे रहा था। जब वे लोग जेल में आये और कैदी से मिल लिये तो जाने से पहले वे जेलर को एक भेंट देना चाहते थे सो उन्होंने वह तरबूज उसको दे दिया। उसने उनके सामने ही उसे काट दिया।

---

[130] Gossips of St John. Tale No 72.

अरे यह तो कितना भयानक था। उसके बीच में तो एक सिर रखा हुआ था। यह सेंट जौन का सिर था जो गौसिप के दिमाग में उनका पाप लाने के लिये उसके अन्दर आ गया था। मामला तुरन्त ही अदालत में लाया गया और उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

उन्होंने अपनी गलती स्वीकार कर ली। पति को छोड़ दिया गया और गौसिप और उसकी गौडमदर को फॉसी लगा दी गयी।

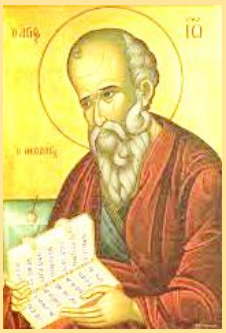

73 सद्दाऐड्डा[131]

जियूसैप्पै पित्रे के संग्रह में एक कहानी मिलती है जिसे भूतों की कहानी का दर्जा दिया जा सकता है और वह है "सद्दाऐड्डा"।

एक बार की बात है कि एक लड़की थी जिसका नाम सद्दाऐड्डा था जो बहुत ही पागल सी थी। एक बार जब उसकी मॉ खेतों पर गयी हुई थी और वह घर में अकेली थी तो वह एक चर्च में गयी जहॉ पर एक बहुत ही अमीर स्त्री के दफ़नाने की सर्विस हो रही थी।

लड़की कनफ़ैशन बौक्स में जा कर छिप गयी सो किसी को पता ही नहीं चला कि वह वहॉ मौजूद भी थी। जब दूसरे सब लोग चले गये तो लाश के साथ वह अकेली रह गयी।

लाश ने गुलाबी रंग के कपड़े पहने हुए थे और उसकी पहनी हुई दूसरी चीज़ें भी बहुत सुन्दर थीं। उसने कानों में बुन्दे पहने हुए थे हाथों में अॅगूठियॉ पहनी हुई थीं।

लड़की ने उसका सारा गहना उतार लिया और फिर उसकी पोशाक भी उतारने लगी। जब वह उसके मोजों तक आयी तो उसने उसका एक मोजा तो आसानी से उतार लिया पर दूसरे मोजे को उतारने में उसको इतनी मेहनत लगानी पड़ी कि उसके हाथ में उसकी टॉग ही टूट कर आ गयी।

[131] Saddaedda. Tale No 73. By Giovanni Pitre

सद्दाऐड्डा उस टॉग को अपने अकेले घर में ले आयी और एक बक्से में बन्द कर के रख दिया। रात को वह मरी हुई स्त्री उसके घर आयी और उसने दरवाजा खटखटाया तो लड़की ने पूछा "कौन है।"

लाश बोली — "यह मैं हूँ। मेरी टॉग और मोजा वापस दो।"

पर सद्दाऐड्डा ने उसके कहे पर कोई ध्यान नहीं दिया। अगले दिन उसने एक दावत का इन्तजाम किया और शाम के लिये अपने कुछ साथियों के साथ आनन्द करने का प्रोग्राम बनाया। वे आये और खा पी कर सोने चले गये।

आधी रात को फिर से वही स्त्री आयी और उसके दरवाजे पर फिर से खटखटाया और फिर से अपनी बात दोहरायी।

सद्दाऐड्डा ने किसी शोर पर कोई ध्यान नहीं दिया पर उसके साथ इस शोर से जाग गये और बहुत डर गये और वहॉ से जल्दी से जल्दी भाग लिये।

तीसरी रात भी ऐसा ही हुआ। चौथी रात को वह एक लड़की को अपने साथ रहने पर राजी कर सकी। पर पॉचवी रात वह फिर अकेली रह गयी। लाश आयी जबरदस्ती दरवाजा खोला सद्दाऐड्डा के बिस्तर तक गयी और उसका गला घोट दिया।

उसके बाद उसने बक्सा खोला अपनी टॉग और मोजा निकाला और दोनों को अपने साथ ले कर वापस अपनी कब्र में चली गयी।

पर जब तक "ट्रैज़र स्टोरीज़"[132] का यहॉ सन्दर्भ न दिया जाये यह अध्याय अधूरा रहेगा। मिस बस्क ने अपने संग्रह में ऐसी कई मजेदार कहानियॉ दी हुई हैं। उनमें से कुछ जियूसैप्पै पित्रे ने भी दी हैं जिनमें से एक यहॉ उल्लेखनीय है क्योंकि वैसी कहानियॉ दूसरे देशों भी मिलती हैं। इसका नाम है "वायसरौय टूनी"। [133]

एक बार की बात है कि पलेरमो में एक आदमी रहता था वह टूनी मछली बेचा करता था। एक रात उसने सपने में देखा कि कोई उसके सामने कोई प्रगट हुआ और उससे बोला — "क्या तुम अपनी किस्मत बनाना चाहते हो तो "दी ली तैस्ती" पुल"[134] पर चले जाओ वह तुम्हें वहॉ मिल जायेगी।"

यह सपना वह तीन रात बराबर देखता रहा। सो जब इसे वह तीन बार देख चुका तो वह पुल के नीचे गया जहॉ उसको फटे कपड़े पहने एक बहुत ही गरीब आदमी बैठा मिला। मछली बेचने वाला उसको देख कर डर गया और वहॉ से जाने लगा तो उस आदमी ने उसको बुलाया। वह उसकी किस्मत थी। उसने कहा — "आज आधी रात को जहॉ तुमने मछली के बैरल रखे हुए हैं वहॉ खुदायी करना तो जो कुछ भी तुम्हें वहॉ मिले वह सब तुम्हारा है।

मछली बेचने वाले ने वैसा ही किया जैसा उस गरीब आदमी ने उससे करने के लिये कहा था। उसने वहॉ खोदा तो वहॉ उसे सीढ़ियॉ मिली। वह उनसे नीचे उतरा तो नीचे उसे पैसों से भरा हुआ एक कमरा मिला। अब वह बहुत अमीर हो गया था। उसने स्पेन के राजा को भी पैसे उधार दिये। राजा ने उसे वायसरौय बना दिया। फिर उसे राजकुमार और ड्यूक बना दिया।

---

[132] Miss Busk. Treasure Stories.

[133] "Viceroy Tunny". Giuseppe Pitre. (Tale No 203). Tunny is the flesh of Tunny fish.

[134] Di Li Testi Bridge – a bridge now abandoned, constructed in 1113 by the Admiral Georgios Antiochinos.

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John (son of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip od Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

List of the Tales of Popular Tales of Italy

Part 1

1. King of Love
2. Zelinda and the Monster
3. King Bean
4. The Dancing Water, the Singing Apple and the Talking Bird
5. The Fair Angiola
6. The Cloud
7. The Cistern
8. The Griffin
9. Cinderella
10. Fair Maria Wood
11. The Curse of the Seven Children
12. Oraggio and Blanchinetta
13. The Fair Florita
14. Bierde
15. Snow-White-Fire-Red
16. How the Devil Married Three Sisters
17. In Love With a Statue
18. Thirteenth
19. The Cobbler
20. Sir Florante Magician
21. The Cystal Casket
22. The Stepmother
23. Water and Salt
24. The Love of the Three Oranges

Part 2

25. The King Who Wanted a Beautiful Wife
26. The Bucket
27. The Two Humpbacks
28. The Story of Catherine and Her Fate
29. The Crumb in the Beard
30. The Fairy Orlanda
31. The Shepherd Who Made the King's Daughter Laugh
32. The Ass That Lays Money
33. Don Joseph Pear
34. Puss in Boots
35. Fair Brow

36. Lionbruno
37. The Peasant and the Master
38. The Ingrates
39. The Treasure
40. The Shepherd
41. The Three Admonitions
42. Vineyard I Was and Vineyard I Am
43. The Language of the Animals
44. The Mason and His Son
45. The Parrot: First Version
46. The Parrot: Second Version
47. The Parrot Which tells Three Stories: Third Version
48. Truthful Joseph
49. The Man the Serpent and the Fox
50. Lord Saint Peter and Apostles

Part 3
51. The Lord, St Peter and the Blacksmith
52. In This World One Weeps and Another Laughs
53. The Ass
54. Saint Peter and His Sisters
55. Pilate
56. Story of Judas
57. Desperate Malchus
58. Malchus at the Column
59. The Srory of Buttadeu
60. The Story of Crivoliu
61. The Story of St James of Galacia
62. The Baker's Apprentice
63. Occasion
64. Brother Giovannone
65. Godfather Misery
66. Beppe Pipetta
67. The Just Man
68. Of a Godfather and Godmother of St John Who Made Love
69. The Groomsman
70. The Parrish Priest of San Marcuola
71. The Gentlemen Who kicked a Skull
72. The Gossips of St John
73. Saddaedda

Part 4

74. Mr Attentive
75. The Story of the Barber
76. Don Firriyulieddu
77. The Little Chickpea
78. Pitidda
79. Saxton's Nose
80. The Cock and the Mouse
81. Godmother Fox
82. The Cat and the Mouse
83. A Feast Day
84. The Three Brothers
85. Buchettino
86. Three Goslings
87. The Cock
88. The Cock and That Wished to Become Pope
89. The Goat and the Fox
90. The Ant and the Mouse
91. The Cook
92. The Thoughtless Abbot
93. Bastianelo
94. Christmas
95. The Wager
96. Scissiors They Were
97. The Doctor's Apprentice
98. Firrazzanu's Wife and the Queen
99. Giufa and the Plaster Statue
100. Giufa and the Judge
101. The Little Omelet
102. Eat My Clothes
103. Giufa's Exploits
104. The Fool
105. Uncle Capriano
106. Peter Fullone and the Egg
107. The Clever Peasant
108. The Clever Girl
109. The Crab

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio.
Translated in 3 volumes

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales.
Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jun, 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2922**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। दो भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। चार भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। दो भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898)** 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.
इन्डियन ऐन्टीक्वैरी — जरनल की लोक कथाओं का संग्रह। **2022**

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated : 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022